जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

ARBIT

Thank God! There is Talk Journalism — Talk Journalism was a forum where journalists talked about themselves and their craft more than the world events or lives of other people.

Evolution: Family Dog

Offbeat Places in South India — Search for that secret gem in the Southern part of India

ब्रिटेन की महारानी क्वीन ऐलिज़ाबैथ की गुरुवार दोपहर को मृत्यु हो गई। वे 96 वर्ष की थीं। बकिंघम पैलेस की ओर से जारी बयान के अनुसार वे लम्बे समय से उम्र से जुड़ी बीमारियों एवं समस्याओं से ग्रसित थीं। डॉक्टरों ने उनके स्वास्थ्य के बारे में बुधवार को जारी बुलेटिन में बताया था कि, उनकी हालात काफी गम्भीर है। क्वीन ऐलिज़ाबैथ ने ब्रिटेन पर 70 वर्षों तक शासन किया। स्कॉटिश एस्टेट बालमोरल में उनके खराब स्वास्थ्य को देखते हुए सारा परिवार इकट्ठा था। उनके पुत्र प्रिंस चार्ल्स अपनी पत्नी कमिला तथा पुत्र और पुत्रवधुओं व पोते-पोतियों के साथ बालमोरल पहुँच गए थे। क्वीन ऐलिज़ाबैथ काफी समय से बीमार थीं पर, राज परिवार की ओर से ज्यादा जानकारी नहीं दी गई, क्योंकि ब्रिटेन राज परिवार स्वास्थ्य को बेहद निजी मुद्दा मानता है।

‘इतना गुस्सा क्यों?’

ममता बनर्जी ने प्र.मंत्री मोदी को यह सवाल संबोधित किया

- ममता बनर्जी ने कहा, बंगलादेश की प्र.मंत्री शेख हसीना अपनी भारत यात्रा के दौरान मिलना चाहती थीं, पर मोदी सरकार ने उन्हें (ममता बनर्जी) को शेख हसीना से मिलने के लिये आमंत्रित नहीं किया।
- ममता बनर्जी ने यह भी कहा कि, दिल्ली के एक अण्डर सैक्रेटरी का लिखा पत्र बुधवार को मिला कि, प्र.मंत्री गुरूवार को 7 बजे नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की प्रतिमा का अनावरण करेंगे, आप 6 बजे तक समारोह में पहुंच जायें। मैं उनकी कोई बंधुआ मजदूर या नौकर नहीं हूँ, अतः मैंने इस अपमानजनक आमंत्रण को अस्वीकार कर समारोह में नहीं जाने का निर्णय लिया।
- ममता बनर्जी ने यह भी कहा कि, शेख हसीना से उनके बड़े मधुर व आत्मीय संबंध हैं। वे दुर्गा पूजा व ईद पर गिफ्ट्स (भेंट) का आदान-प्रदान करते आये हैं और यह पहली बार हुआ है कि, बंगाल की मुख्यमंत्री को बंगलादेश के प्र.मंत्री या अन्य महत्वपूर्ण नेता से उनकी भारत यात्रा के दौरान मिलने नहीं बुलाया गया।
- ममता बनर्जी ने प्र.मंत्री मोदी पर कटाक्ष करते हुए कहा, ‘‘आपकी मन की बात आपके मन की व्यथा बन जायेगी। क्योंकि, गैर भाजपा मु.मंत्री व नेता, जैसे नीतीश कुमार, हेमन्त सोरेन व अखिलेश यादव अब एक हो गये हैं, भाजपा को हराने में, अतः भाजपा का 280-300 सीट पाने का घमण्ड चूर होगा।

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 सितम्बर। भाजपा के नेतृत्व वाली प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार ने पहले बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना की भारत यात्रा के दौरान प. बंगाल का मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को नहीं बुलाया, फिर दिल्ली में नेताजी सुषाषचंद्र बोस की प्रतिमा के उद्घाटन के लिए उन्हें एक आई.ए.एस. अफसर द्वारा हस्ताक्षरित निमंत्रण पत्र भेज दिया, इसे ममता बनर्जी के अपमान के रूप में देखा जा रहा है।

बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना, जो चार दिन भारत की यात्रा पर हैं, से मुलाकात के लिए नहीं बुलाने पर एतराज जताते हुए ममता बनर्जी ने कहा, ‘‘हसीना जी यहां हैं। मेरे उनसे व उनके परिवार से बहुत अच्छे संबंध हैं हम पूजा और ईद पर एक दूसरे को तोहफे देते हैं, वे मेरे लिए हिल्सा (मछली) व आम भिजवाती हैं। उन्हें मुझ से मिलने की इच्छा जताई थी। ऐसा पहली बार है जब बांग्लादेश की प्रधानमंत्री यहां है और बंगाल की उपेक्षा की गई है। हसीना जी मुझसे मिलना चाहती थीं मैं उनकी आभारी हूं। मैंने समाचारों में देखा था। खैर ये अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दे हैं, रहने दीजिए। पर आप इतने गुस्सा क्यों हैं? इतना गुस्सा क्यों?’’

इसी के साथ उन्होंने कहा कि वे दिल्ली में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की प्रतिमा के अनवरण कार्यक्रम में भाग नहीं लेंगी क्योंकि आमंत्रण उन्होंने कहा कि, उन्हें कल निमंत्रण मिला जिसमें एक सरकारी अफसर ने उन्हें कार्यक्रम की सूचना दी थी।

बनर्जी बोली, ‘‘मुझे कल एक पत्र मिला जो शायद किसी अण्डर सैक्रेटरी ने लिखा था, जिसमें बताया गया था कि प्रधानमंत्री 7 बजे नेताजी की प्रतिमा का अनवरण करेंगे आपको 6 बजे तक पहुंचना होगा। मानो मैं कोई उनकी नौकर या बंधुआ मजदूर हूँ। एक अण्डर सैक्रेटरी मुख्यमंत्री को कैसे लिख सकता है? संस्कृति मंत्री इतने बड़े कैसे बन गए।

उन्होंने कहा, उनकी समझ खत्म हो गई है। इसलिए मैं यहां आई हूँ नेताजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर अपनी श्रद्धा प्रकट करने जो वे दिल्ली में करेंगे मैंने वो बंगाल में कर दिया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इंडिया गेट और सैंट्रल विस्टा तथा राज पथ, जिसका नाम कर्तव्य पथ हो गया है, के समीप नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की 28 फूट ऊंची प्रतिमा का अनावरण करेंगे।

इससे पूर्व उन्होंने यह भी कहा था कि वे हैरान हैं कि भाजपा नीत केन्द्र सरकार उनकी शेख हसीना से मुलाकात

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नेताजी को 75 साल इंतजार करना पड़ा अपना उपयुक्त व उचित स्थान पाने के लिये

इस मौके पर प. बंगाल की ममता बनर्जी का समारोह का ‘‘बॉयकॉट’’ करना कुछ ओछा ही लगा

- बंगाल में यह भावना काफी गहरी थी कि, स्वतंत्रता आंदोलन का श्रेय नेहरू-गांधी द्वय को ही मिला तथा सुभाष चन्द्र बोस की स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका सदा दबायी गयी। अब जब यह अन्याय दुरूस्त हो रहा था, तो छोटी सी बात पर समारोह का बहिष्कार करना बंगाल की जनता को खलेगा, यह सोच कर ही ममता बनर्जी ने एक दिन पूर्व नेताजी की मूर्ति को माला पहनाकर, जनता को कुछ संतोष दिलाने की कोशिश की।
- प. बंगाल की कम्युनिस्ट पार्टी प्रारंभ से ही, सुभाष बाबू द्वारा जापान व हिटलर की जर्मनी से स्वतंत्रता संग्राम में मदद लेने की आलोचना करती आयी है, परन्तु सोवियत रूस द्वारा द्वितीय विश्व युद्ध के शुरूआती दौर में हिटलर की जर्मनी से गठबंधन करने को, कम्युनिस्ट पार्टियाँ युद्ध की रणनीति का हिस्सा बताकर जायज ठहराती आयीं, पर उनका विरोध किसी राजनीतिक सिद्धांत पर आधारित था, न कि, छोटी-मोटी ‘‘प्रोटोकॉल’’ की चूक पर।

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 सितम्बर। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को देश की आज़ादी की लड़ाई में अपने योगदान को राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित करवाने के लिए पूरे 75 साल इंतजार करना पड़ा।

इस पर भी नेताजी के गृह राज्य बंगाल की वर्तमान सरकार ओछे बहाने बना कर इस कार्यक्रम से दूर हो गई है और बंगाल को इसमे शामिल नही होने दे रह हैं।

सम्मान के इस क्षण में बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने राजनैतिक कार्ड खेला है ताकि केन्द्र में सत्तारूट पार्टी को इस अवसर का राजनैतिक लाभ न मिल सके।

इसे बेहद ओछी हरकत माना जा सकता है। देश की राजधानी में हो रहे प्रतिभा अनावरण कार्यक्रम को कमतर करने के लिए ममता बनर्जी के कोलकाता में एक कार्य किया और बोस की मूर्तिपर मात्यार्पण किया।

उन्होंने यह कदम इसलिए उठाया कि कही दिल्ली के कार्यक्रम में शामिल नहीं होने से बंगाल की जनता को बुरा न लगे। इससे कोई इन्कार नहीं है कि दिल्ली के कार्यक्रम पर उनकी प्रतिक्रिया असल में देश की आज़ादी के में बोस के योगदान व महत्व को उभारने के प्रयासों का अपमान हैं।

आज़ादी के बाद से ही बंगाल का यह सोच रहा है कि सुभाष चंद्र बोस को उनके योगदान तथा बलिदान के लिए यथेष्ट राष्ट्रीय सम्मान नहीं मिला। नेहरू गाँधी परिवार के खिलाफ बंगाल में कड़ी जन भावना हैं। ममता बनर्जी का अभिमान और अनदेखी एक अन्य रूप में बंगाल के राजनेताओं के रवैये से मेल खाती हैं।

सच या झूठ तो अलग बात है, लेकिन बंगाली इस तथ्य से भली भांति परिचित हैं कि एक अन्य पूर्ण मुख्यमंत्री ज्योति बसु ने ध्वाजारोहण के किसी भी कार्यक्रम में शामिल होने से इन्कार कर दिया था। कम्युनिस्टों ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम को लेकर यह कठोर नारा दिया था कि ‘‘यह झूठा है।’’

गणतंत्र दिवस परेड या स्वतंत्रता दिवस के स्मरण

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मजबूत अर्थव्यवस्था

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 सितम्बर। भारत सरकार को उम्मीद है कि देश की अर्थव्यवस्था में इस वर्ष 7 प्रतिशत या उससे अधिक वृद्धि होगी। द न्यूयॉर्क टाइम्स की एक खबर कहती है कि यह वृद्धि वैश्विक आर्थिक वृद्धि के प्रोजैक्शन्स से दोगुनी से भी अधिक है।

न्यूयॉर्क टाइम्स कहता है कि अर्थव्यवस्था का यह तीव्र विस्तार

- न्यूयॉर्क टाइम्स कहता है कि, भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत है और महामारी के झटकों से उबर कर तेजी से आगे बढ़ रही है।

विपरीत परिस्थितियों में की गईं उन कोशिशों को आंशिक रूप से परिलक्षित करता है, जब अर्थव्यवस्था वैश्विक महामारी के दौरान लगे गहरे झटके से धराशायी हो गई थी और इससे बाध्य होकर मजदूरों ने शहरों से पलायन कर दिया था। यह भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रकृति को भी परिलक्षित करती है, जो वैश्विक ट्रैण्ड्स से आंशिक रूप से ही

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कर्नाटक में भी भाषा विवाद गर्मायेगा?

हालांकि, तमिलनाडू ‘‘हिन्दी थोपने’’ के विरोध में दक्षिण भारत में सबसे अग्रणी है, पर कर्नाटक में भी यह आंदोलन सुलगता रहा है

- हाल ही में स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया द्वारा कन्नड़ भाषा में लिखे एक चैक को पास नहीं करने से, सुगलती आग को हवा लग गयी है।
- उपभोक्ता कोर्ट ने इस कृत्य को बैंक की गल्ती मान कर बैंक पर पिच्यासी हजार रू. का फाइन लगाया।
- कन्नड़ भाषियों ने इस निर्णय का भारी जोश व उत्साह से स्वागत किया तथा यह भावना फैली कि, बैंक, पी.एस.यू. आदि कन्नड़ भाषी लोगों को अंग्रेजी व हिन्दी भाषी लोगों की तुलना में पूरा सम्मान नहीं देते। अतः इसका राजनीतिक इलाज होना चाहिये।
- अगर कन्नड़ भाषी लोगों के साथ दुर्व्यवहार की यह भावना और पकड़ गयी तो, भाषा विवाद कर्नाटक में भी जड़ पकड़ सकता है।

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 सितम्बर। दूरगामी असर की सम्भावना वाली एक घटना के अन्तर्गत, एक डिस्ट्रिक्ट कन्ज्यूमर ग्रीवेंसेज रिड्रैसल फोरम ने भारतीय स्टेट बैंक को कन्नड़ भाषा में लिखे चैक को ‘‘डिसऑनर’’ करने का दोषी ठहराया है, ज्ञातव्य है कि कन्नड़ कर्नाटक राज्य की भाषा है तथा यह बैंक कर्नाटक में ही था। धारवाड़ कन्जूमर फोरम ने बैंक को ‘‘सेवा की कमी’’ (डेफिसिएन्सी ऑफ सर्विस) का दोषी ठहराते हुये, स्टेट बैंक पर 85,177रू का जुर्माना लगाया हैं।

वेद्रिराजाचार्य इनामदार, जो अंग्रेजी के व्याख्याता हैं, ने 3 सितम्बर, 2020 को अपने बिजली के बिल के भुगतान के लिये हुबली इलेक्ट्रिसिटी सप्लाई कम्पनी लिमिटैड (एच.ई.एस.कॉम. अर्थात हैसकॉम) के नाम 6000रू का चैक जारी किया था। चूँकि हेसकॉम का खाता कैनरा बैंक में है, इसलिये यह चैक क्लिअरेंस के लिये उत्तर कन्नड़ जिले के हलियाल कस्बे में स्थित एस.बी.आई. ब्रांच में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सी.ए.ए. पर सुनवाई

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 सितम्बर। चीफ जस्टिस ऑफ इण्डिया (सी.जे.आई.) उदय उमेश ललित और जस्टिस रविन्द्र भट की दो जजों वाली बैंच सिटीज़नशिप (अमैण्डमैण्ट) एक्ट 2019 (सी.ए.ए.) को चुनौती देने वाली 2 सौ से अधिक याचिकाओं पर सोमवार को

- सुप्रीम कोर्ट में सी.ए.ए. को चुनौती देने वाली दो सौ याचिकाओं पर सोमवार को सुनवाई होगी, ये याचिकाएं जनवरी 2020 से लम्बित हैं।

सुनवाई करेगी। सी.ए.ए. का उद्देश्य पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश के हिन्दू, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी और ईसाई समुदायों के प्रवासी लोगों को भारत की नागरिकता देना था।

याचिकाएं तभी से सुप्रीम कोर्ट के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

डॉनल्ड ट्रम्प की 2024 के चुनाव में पुनः राष्ट्रपति बनने की संभावना नगण्य नहीं है

ट्रम्प स्वयं भी लगभग कह चुके हैं कि वे पुनः राष्ट्रपति पद का चुनाव लड़ेंगे 2024 में

- नवीनतम सर्वे के अनुसार, 63 प्रतिशत रिपब्लिकन्स (ट्रम्प की पार्टी को लोग) चाहते हैं कि, ट्रम्प देश की राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका रखें।
- परन्तु फिर भी, अभी केवल 39 प्रतिशत रिपब्लिकन पार्टी चाहती है कि, ट्रम्प स्वयं राष्ट्रपति बने, जबकि बाकी 23 प्रतिशत चाहते हैं कि राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका रखते हुए ट्रम्प किसी और उम्मीदवार, जिसके विचार ट्रम्प से मेल खाते हैं, को समर्थन देकर राष्ट्रपति बनवायें।
- जहां तक वर्तमान राष्ट्रपति बाइडन को पुनः राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाने की बात है, उनकी पार्टी, डैमोक्रेटिक पार्टी में उनकी उम्र पर चिंता है। बाइडन 79 वर्ष के हो चुके हैं और वे अगर दोबारा चुनाव लड़ कर राष्ट्रपति बने तो उनकी उम्र 82 वर्ष की होगी। साथ ही 2024 में क्या वे अपनी उम्र के कारण, दोबारा सत्ता में आने को तत्पर व आक्रामक, रिपब्लिकन पार्टी की चुनौती का उत्साह पूर्ण जवाब दे सकेंगे।

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 सितम्बर। वर्ष 2024 को आने दीजिए। दुनिया का सबसे पुराना लोकतंत्र डॉनल्ड ट्रम्प की अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में वापसी देख सकता है और दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र वर्तमान प्रधानमंत्री मोदी की लगातार तीसरी बार वापसी देख सकता है। लोकतंत्रों को वोटिंग के जरिए नेतृत्व परिवर्तन के लिए जाना जाता है। यदि ऐसा है तो डॉनल्ड ट्रम्प अमेरिका का सबसे बड़ा सार्वजनिक पद पुनः प्राप्त कर सकते हैं, हालांकि उन्हें जनवरी 2020 में समाप्त हुए अपने प्रथम राष्ट्रपति कार्यकाल में मनमाफिक प्रतिष्ठा नहीं मिल पायी थी।

इसके विपरीत मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा एक सर्वमान्य पार्टी बनने की हर कोशिश कर रही है, बावजूद इसके कि बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक समुदायों के कथित ध्रुवीकरण और भाषा एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर समय-समय पर होने वाले हमलों को लेकर उसकी सरकार की व्यापक आलोचना है।

बिखरा हुआ विपक्ष वर्ष 2024 में मोदी को चुनौती देने के लिए मुश्किल से एकजुट होने की कोशिश कर रहा है। कांग्रेस, जो कि पूर्ण रूप से अव्यवस्थित है, कन्याकुमारी से कश्मीर तक की अपनी ‘‘भारत जोड़ो’’ पदयात्रा से पार्टी को पुनर्जीवित करने के प्रयास कर रही है। अमेरिका में, ट्रम्प ने घोषणा की है कि अगले राष्ट्रपति चुनाव में वह उम्मीदवार बनेंगे। वे इसमें जीतते हैं या नहीं यह अलग प्रश्न है। वे चाहे कुछ भी सोचे, हाल ही का एक सर्वेक्षण संकेत देता है कि अमेरिका के सिर्फ 30 प्रतिशत वोटर्स ही ट्रम्प को एक बड़े राष्ट्रीय व्यक्तिगत के रूप में देखना चाहते हैं।

एक हालिया प्यु रिचर्स सर्वे से पता चलता है कि 63 प्रतिशत रिपब्लिकन्स का कहना है कि पूर्व राष्ट्रपति को राष्ट्रीय राजनीति में बड़ी भूमिका अदा करना जारी रखना चाहिए, जबकि सभी डेमोक्रट्स और डैमोक्रेटिक पार्टी के प्रति झुकाव रखने वाले 94 प्रतिशत लोगों का कहना है कि उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए।

जो रिपब्लिकन्स कहते हैं कि ट्रम्प को एक बड़ा राष्ट्रीय व्यक्तित्व बने रहना चाहिए, उनका शेयर सितम्बर 2021 के 67 प्रतिशत से गिरकर अब 63 प्रतिशत पर आ गया है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

वासनिक को हटाया

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 सितम्बर। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने दिल्ली के पूर्व सांसद जय प्रकाश अग्रवाल को मध्यप्रदेश का नया ए.आई.सी.सी. प्रभारी नियुक्त किया है। वह मुकुल वासनिक का स्थान लेंगे।

- कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने मध्यप्रदेश के पार्टी प्रभारी का पद मुकुल वासनिक से लेकर पूर्व सांसद जे.पी. अग्रवाल को दे दिया।

कांग्रेस के संगठन महासचिव के.सी. वेणुगोपाल ने बताया कि वासनिक ने अनुरोध किया था कि उन्हें मध्यप्रदेश की जिम्मेवारी से मुक्त किया जाए, ताकि वह संगठन के अन्य मसलों पर गौर कर सकें।

उन्होंने कहा कि वासनिक ए.आई.सी.सी. महासचिव बने रहेंगे।

विचार बिन्दु

अतिथि जिसका अन्न खाता है, उसके पाप धुल जाते हैं। –अथर्ववेद

क्या राजस्थान स्वास्थ्य का अधिकार अधिनियम, 2022 नागरिकों के स्वास्थ्य की रक्षा करने व पब्लिक हेल्थ और पब्लिक हेल्थ केयर के कर्त्तव्य को निभाने में सार्थक होगा?

राजस्थान राज्य स्वास्थ्य का अधिकार के हेतु राजस्थान स्वास्थ्य का अधिनियम 2022 लाने का संकल्प लिया है और अपेक्षा की है कि यह कानून राज्य सरकार का क्रान्तिकारी कदम होगा। यह कानून इस धारणा के आधार पर बनाया गया है कि इस कानून से राज्य की जनता को स्वास्थ्य का अधिकार प्राप्त होगा। अधिकारीगण यह बताते हैं कि स्वास्थ्य का अधिकार बिल 2022 में यह व्याख्या है कि यह बिल कानून बनने पर नागरिकों के स्वास्थ्य की रक्षा करेगा साथ ही संविधान में जो अधिकार दिये हैं जिनकी सहायता से नागरिकों की हेल्थकेयर में सुविधा होगी। नागरिकों को मुफ्त सलाह प्राप्त हो सकेगी, मुफ्त दवायें प्राप्त होंगी, जांच भी वे फ्री करा सकेंगे। इन्हें प्राइवेट अस्पतालों में फ्री इलाज कराने की सुविधा होगी जिन्होंने जमीन के अलॉटमेंट में कन्सेशन प्राप्त किया है। यहाँ यह लिखना भी आवश्यक है कि स्वास्थ्य सेवा या हेल्थ केयर का अर्थ बीमारी की रोकथाम और उपचार है। सार्वजनिक स्वास्थ्य को बीमारी को रोकने का विज्ञान और कला, जीवन को विस्तार देने और पर्यावरण की स्वच्छता के लिये संगठित सामुदायिक प्रयास के माध्यम से स्वास्थ्य और दक्षता को बढ़ावा देने का है।

राजस्थान स्वास्थ्य का अधिकार भारत में अपनी तरह का पहला विधेयक है। इसे राज्य सरकार 2022 में विधान सभा में पेश करेगी। इस बिल की घोषणा तो 2018 के इलेक्शन के समय काँग्रेस ने की थी। यों तो ऐसा कहा जाता है कि संविधान के अनुच्छेद 21 के विश्लेषण से न्यायालयों ने गरिमा से जीने के अधिकार को अच्छे स्वास्थ्य के रूप में मौलिक अधिकार माना है। राज्य का कथन है कि चूंकि संविधान स्वास्थ्य के अधिकार को मौलिक अधिकार नहीं मानता अतः स्थिति स्पष्ट करने हेतु यह अधिनियम 2022 लाया जा रहा है।

राजस्थान स्वास्थ्य का अधिकार बिल को समझने के लिये हमें पब्लिक हेल्थ(लोक स्वास्थ्य) व हेल्थ केयर शब्दों को समझना होगा, इन्हें अधिनियम 2022 में क्रमशः धारा 2(बी) व धारा 2(डी) में Basic Primary Health Care Services o Comprehensive Primary Health Care Services द्वारा परिभाषित किया गया है। यहाँ 'पब्लिक हेल्थ' में Health Emergencies को भी शामिल किया गया है। पब्लिक हेल्थ अधिकारों में सेनीटेशन, पीने का पानी का अधिकार है और नये अधिकारों को कर्त्तव्यों में शामिल करने की सलाह भी दी गई है जैसे सूचना का अधिकार, शिक्षा का अधिकार आदि। इसके अतिरिक्त विधि (Centre for Legal Policy) ने अपनी यह सलाह अभिव्यक्त की है कि अधिकारियों की Accountability तथा Grievance Redressal Mechanism भी इनमें शामिल हो। विधि ने यह भी वचन दिया है कि इसके प्रावधान, वर्तमान के कानूनों से विरोधाभाषी हो तो इस संबंध में विधान सभा में चर्चा की जावे और पब्लिक हेल्थ व हेल्थ केयर को अलग अलग चेप्टर में बांटा जावे। विधि (सेन्टर फॉर लीगल पोलिसी) जो राज्य की है एक इकाई कही गई है, यह मानती है कि स्वास्थ्य ऑथोरिटी का बिल में उल्लेख मात्र है उसमें उचित संशोधन की आवश्यकता है ताकि उसे कारगर बनाया जावे। विधि मानती है कि Ombdusman की नियुक्ति की जावे वे अपील अधिकारी होंगे।

यह तो सर्वसम्मत विचार है कि स्वास्थ्य का अधिकार व्यक्ति का मूल अधिकार है। अतः स्वास्थ्य के मूल अधिकार पर चर्चा नई नहीं है अपितु इस संबंध में डब्ल्यू.एस.ओ. द्वारा सन 1946 में ही यह स्पष्ट तौर पर कहा गया था कि यह **The highest attainable standard of health as a fundamental Right of every human being.** यह स्पष्ट रूप से माना गया है कि यह मानव अधिकार है, अतः राज्य का कर्त्तव्य है कि जनता के इस मूल अधिकार को मान्यता दे। Safe and portable water, sanitation, food, housing health related information and education तथा Gender Equality सभी मूल अधिकार हैं। कमेटी ऑन इकोनोमिक, सोशल व कल्चरल राइट्स तथा यूनिवर्सल पिरियोडिक रिव्यू में स्वास्थ्य के अधिकार को मूल अधिकार माना है और सभी देशों को सलाह दी है कि वे अपने देश के घरेलू कानून अथवा संवैधानिक लॉ में इसे मूल अधिकार मानें। सतत विकास के लक्ष्यों में स्वास्थ्य का अधिकार मूल अधिकार माना है। सन 1966 की अन्तर्राष्ट्रीय संधि में, जिसका भारत हस्ताक्षर कर्ता है उसमें भी स्वास्थ्य व शिक्षा के अधिकार को स्वीकार किया गया है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 की जो व्याख्या माननीय सुप्रीम कोर्ट ने की है, उसमें स्वास्थ्य का अधिकार मूल अधिकार माना है।

योजनायें तो अनेक हैं; किन्तु उनका लाभ कैसे मिले, इसकी कोई उपयोगी प्रणाली नहीं है। मरीज जो प्राइवेट अस्पताल में इलाज करा रहा है उस अस्पताल को इलाज की फीस कैसे और कितने समय में मिलेगी इसकी व्यवस्था हो। कानून में प्रावधान हो कि प्राइवेट अस्पताल इलाज करने से दुर्भावनावश मना करे तो उस कृत्य की आर्थिक सजा दी जावे।

संविधान के नीति निदेशक तत्वों के अध्याय में विशेषकर अनुच्छेद 38, अनुच्छेद 39(ई) व अनुच्छेद 41, 47 में देश के नागरिकों के स्वास्थ्य की रक्षा के कानून बनाने की बात की है और संविधान की अनुसूची 11 व 12 में स्वास्थ्य की रक्षा का दायित्व पंचायत व म्यूनिसिपिलिटी पर आरोपित है। अनुच्छेद 23 में स्वास्थ्य का मूल अधिकार इसलिये माना है कि Human Trafficing and Child Labour को निषेधित किया है। हमारे संविधान ने गरिमा मय जीवन यापन के लिये अच्छे स्वास्थ व स्वच्छ पर्यावरण का मूल अधिकार माना है। यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं है कि स्वास्थ्य का अधिकार मूल अधिकार है और जब यह मूल अधिकार है तो फिर न्यायालयों में भी प्रवर्तनकारी है।

स्वास्थ्य का अधिकार अनन्त कथा के समान है सर्वोत्तम अधिकार है और राज्य का कर्त्तव्य है नागरिकों के इस मूल अधिकार की सुरक्षा की व्यवस्था करे। जो राज्य संवैधानिक कर्त्तव्यों की पालना नहीं कर सकता उसके विरूद्ध अनुच्छेद 356 की कार्यवाही की जा सकती है।

उपरोक्त कथन के अनुसार लेखक का अपना दृष्टिकोण है कि हमें अलग से स्वास्थ्य का अधिकार संबंधित कानून बनाने की आवश्यकता ही नहीं है। राजस्थान स्वास्थ्य का अधिकार अधिनियम 2022 जो विधान सभा से पारित कराया जावेगा उसमें विधि (Centre for Legal Policy) के अनुसार कई खामियां हैं उन्हें सुधारना होगा, संशोधन करना होगा। जनता ने भी सुझाव दिये हैं उन्हें भी चर्चा में शामिल करना होगा।

सर्वोच्च न्यायालय ने कई निर्णयों में यह दिशा निर्देशन दिया है कि कानून साधारण भाषा में होना चाहिये जो सरल और स्पष्ट हो और उद्देश्य पूरक हो। यदि हम राजस्थान स्वास्थ्य का अधिकार अधिनियम 2022 को पढ़ें तो पढ़ने मात्र से यह बोध जनित नहीं लगेगा। धारा 2 में जो परिभाषायें दी हैं वे असंगत हैं, भावहीन हैं और संभवतः अग्राहय हैं। इनकी कोई आवश्यकता ही नहीं थी। Basic Public Health o Health Care Services से यह अर्थ निकलता है कि ये सेवा में केवल Health & Wellness सेन्टर्स पर ही प्राप्त होंगी और Out Patient Services वे होंगी जो समय समय पर परिभाषित की जावेंगी। यानी यदि सेन्टर ही स्थापित नहीं किये गये तो सेवा कैसे दी जा सकती है? अर्थात् सेवा संभव नहीं है। Out Patient Services वे हैं जो समय समय पर परिभाषित होंगी यानी पहली बार परिभाषित सेवा के बाद यदि शीघ्र ही सेवा परिभाषित नहीं की गई तो यह सेवा ही नहीं रहेगी। धारा 2(ए) में Out Patient Services शब्द को परिभाषित किया है जबकि स्वास्थ्य का अधिकार तो मूल अधिकार है, उसे बांधा नहीं जा सकता। अनुच्छेद 19(2) के अनुसार Affordable को अनुच्छेद 19(2) के अपवादों में नहीं लाया जा सकता है। कोई भी Catastrophic House hold Health Care की परिभाषा के अनुसार मूल्यांकन नहीं कर सकता, इसमें बहुत पेच हैं। फिर एक साधारण पढ़ा-लिखा व्यक्ति जिसे स्वास्थ्य का अधिकार तो प्राप्त है, किन्तु खर्चों का मूल्यांकन उसके बस की बात नहीं है। यह तो कुछ परिभाषाओं पर ही प्रकाश डाला है, किन्तु अन्य शब्दों व शब्दावली की स्थिति यही है कि वे असंगत व बेमानी है। Health Care Establishment राज्य में कहाँ हैं? प्राइवेट हॉस्पिटल राज्य में कितने हैं और कितनों ने भूमि पर कन्सेशन प्राप्त किया है? ऐसे हॉस्पिटल नगण्य ही मिलेंगे।

स्वास्थ्य का अधिकार जिन नागरिकों के प्राप्त होगा वे बीमा शुदा होने चाहिये, क्योंकि बिना बीमा कवर के कोई भी नागरिक स्वास्थ्य के अधिकार का लाभ नहीं ले सकता। वर्तमान में केन्द्र की तथा राज्य की स्वास्थ्य संबंधित कई महत्वपूर्ण योजनायें हैं, फिर क्यों इस अधिनियम 2022 की आवश्यकता है?

क्या यही अच्छा होता स्वास्थ्य का अधिकार बिना किसी बंधन के, कंडीशन के तथा शर्तों के होना चाहिये। एक विज्ञप्ति में ही इसे बांधा जा सकता है। कमेटियां बनाने की आवश्यकता नहीं है। प्राइवेट अस्पतालों पर, वे ही जिन्होंने कन्सेशन पर जमीन प्राप्त की है वहीं स्वास्थ्य का अधिकार प्रवर्तनीय होगा। वस्तुस्थिति यह है कि राज्य में न तो आवश्यकता के अनुसार अस्पताल हैं और न यह मरीज को पता है कि वह किस अस्पताल में अपने अधिकार को प्रवर्तनीय बना सकता है और कैसे।

उचित तो यह होगा कि राज्य के प्रत्येक नागरिक को स्वास्थ्य का अधिकार बिना किसी शर्त, प्रतिबंध, फीस आदि के प्राप्त हो। राज्य स्तर पर प्रत्येक नागरिक का पंजीयन हो। राज्य का एक अपना विभाग हो इसके कर्मचारी घर घर जाकर रोगी को स्वास्थ्य का अधिकार के तहत् प्राइवेट अथवा सरकारी अस्पताल में भर्ती कराये या उनका डॉक्टर की सलाह के अनुसार उपचार करायें। भूमि का कन्सेशन प्राप्त करने वाले अस्पतालों की संख्या बहुत कम है और वर्तमान में जो योजनायें लागू हैं, उनके कारण उक्त कन्सेशन की सुविधा प्राणहीन हो गई है। योजनायें तो अनेक हैं; किन्तु उनका लाभ कैसे मिले, इसकी कोई उपयोगी प्रणाली नहीं है। मरीज जो प्राइवेट अस्पताल में इलाज करा रहा है उस अस्पताल को इलाज की फीस कैसे और कितने समय में मिलेगी इसकी व्यवस्था हो। कानून में प्रावधान हो कि प्राइवेट अस्पताल इलाज करने से दुर्भावनावश मना करे तो उस कृत्य की आर्थिक सजा दी जावे। उपरोक्त प्रक्रिया से लोगों को रोजगार भी मिलेगा तथा मरीज को उपचार भी सही प्राप्त होगा। स्वास्थ्य का अधिकार सबको प्राप्त हो, त्वरित हो, निःशुल्क हो और सुगम तथा सुलभ हो, इसका संवैधानिक दायित्व राज्य का है। संविधान का भी यही निर्देश है।

–अतिथि सम्पादक,
पानाचन्द जैन,
पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

भव्य भारत की गौरव गाथा लिखने वाले प्रधानमंत्री

नरेन्द्र मोदी देश को प्रगति के पथ पर ले जाने वाले और भारतीय संस्कृति में रचे-बसे भव्य भारत के स्वन्दृष्टा प्रधानमंत्री है। उनके सार्वजनिक जीवन के दो दशकों की उपलब्धियों और प्रखर व्यक्तित्व पर जाएंगे तो पता चलेगा कि कैसे किसी व्यक्ति की उदात्त दृष्टि और कार्य के प्रति प्रतिबद्धता के साथ दिल जीतने की कला से देश में युग परिवर्तन हो सकता है।

यह बहुत महत्वूर्ण है कि मोदी के व्यक्तित्व पर भारत रत्न और स्वर कोकिला स्व. लता मंगेशकर ने प्रार्थना के स्वरों में कहा है कि नरेन्द्र मोदी ने देश की विकास यात्रा को जन आंदोलन बनाने का महती कार्य किया है।

पिछले कुछ समय के दौरान धर्म, अध्यात्म, सामाजिक और राजनीतिक, खेल, संस्कृति, अर्थशास्त्र आदि लगभग सभी क्षेत्रों के मर्मज्ञ विद्वानों ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 20 वर्षों के सार्वजनिक जीवन के कार्यकाल की बेबाक खुले मन से सराहना की है। उनका व्यक्तित्व मानवीय क्षमताओं से देश की पुरानी, ढर्रे से चली आ रही और जड़ हो रही स्थितियों को बदलने वाला है। विश्व भर में प्रसिद्ध अध्यात्म गुरू सद्गुरू प्रधानमंत्री को 'नरेन्द्र भाई' कहते हैं। गृह मंत्री अमित शाह ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आरम्भिक संघर्षों को निकट से देखा है। इसीलिए वह जोर देकर कहते हैं कि नरेन्द्र मोदी ऐसे राष्ट्रीय नेता हैं जिन्होंने संघर्ष की जमीन से भारतीय लोगों का विश्वास अर्जित किया है। डॉ. देवी शेट्टी ने महामारी से जूझने के उनके जज्बे को व्याख्यायित करते हुए कहा है कि कोविड की महामारी में प्रधानमंत्री ने देश के लोगों का विश्वास कायम रखते इससे निपटने की प्रभावी रणनीति पर कार्य किया।

अजित डोभाल, मनोज लड्वा,

वासुदेव देवनानी

भरत बलाई और एस.जयशंकर के अनुसार नरेन्द्र मोदी द्वारा भारत के साथ विदेशों में भी अपनी रणनीति से दिल जीतने के कार्य किया है। उनकी विदेश नीति देश को वैश्विक महाशक्ति के रूप में स्थापित करने वाली है।

ओलम्पिक खिलाड़ी पी.वी. सिंधु ने उनके बारे में लिखा है कि युवाओं के लिए वह युवाओं की तरह सोचने वाले प्रधानमंत्री हैं। इसीलिए उन्होंने डिजिटल मीडिया और संचार की समकालीन प्रणाली राष्ट्र को प्रदान की। नंदन निलकेणी ने भी प्रौद्योगिकी से श्री मोदी के जुड़ाव के साथ शासन में इसके समुचित प्रयोग पर कहा कि वह सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के जरिए परिवर्तन की नई राहों के अन्वेषक हैं।

शोभना कमिनेनी ने कहा है कि वह महिला सशक्तिकरण को व्यवहार में परिणत करने वाले प्रधानमंत्री हैं। इसी तरह देश में निजी क्षेत्र की भूमिका के साथ सार्वजनिक क्षेत्रों के विकास पर उदय एस. कोटक ने लिखा है कि निजी क्षेत्र को अटूट समर्थन देते हुए देश में प्रमुख आर्थिक सुधारों का शुरूआत नरेन्द्र मोदी की विशिष्ट सफलता है।

अर्थशास्त्री सुरजीत एस. भल्ला ने वैश्विक अर्थव्यवस्था में मोदी को एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में देखते हुए उनकी आर्थिक समझ को बहुत गहरा बताया है। इसी तरह अरविंद पनगढ़िया ने कहा है कि वह जैसा चाहते हैं, वैसा परिणाम प्राप्त करने वाले आर्थिक विषयों के भी मर्मज्ञ ज्ञाता है। डॉ. शमिका रवि ने आधार कार्ड, उज्ज्वला योजना, स्वच्छ भारत, कोविड महामारी से बचाव की रणनीति आदि के अंतर्गत जन समान्य के जीवन में आए सकारात्मक बदलावों के पीछे नरेन्द्र मोदी की निर्णय क्षमता और आम जन से जुड़ी सोच को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा है कि वह चुपचाप बहुत सारा ऐसा करते हैं, जो देश में क्रांतिकारी परिवर्तन लाता है।

सुधामूर्ति ने नरेन्द्र मोदी को बड़े व्यक्तित्व का बड़ा वृक्ष कहते हुए उनके ऐसे कार्यों की विरल व्याख्या की है जिनके अंतर्गत आम व्यक्ति के जीवन को दिशा मिलती है।

भारत के समृद्ध कृषि क्षेत्र के अंतर्गत नरेन्द्र मोदी के योगदान को अशोक गुलाटी ने गहराई से विवेचित किया है।सुप्रसिद्ध अभिनेता अनुपम खेर ने कहा है कि कैसे सामान्य परिस्थितियों में असाधारण किया जा सकता है, यह मोदी से सीखा जा सकता है। प्रदीप गुप्ता ने नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने से पहले और बाद के आंकड़ों के आकलन में चुनाव जीतने की उनकी कला के अंतर्गत यह निरंतर स्थापित किया है कि कैसे मोदी महात्मा गांधी की तरह दिल जीतते हुए कार्य करते हैं

नरेन्द्र मोदी द्वारा राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए उठाए कदमों के बारे में अनंत नागेश्वरन ने बहुत महत्वपूर्ण बात यह कही है कि सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों के द्वारा देश में अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण और विकास के स्थायी मॉडल के लिए नरेन्द्र मोदी ने जो किया है, उसके दूरगामी परिणाम आएंगे।

सुप्रसिद्ध लेखक अमिश त्रिपाठी ने कहा है कि सांस्कृतिक लोकाचार को पुनर्जीवित करके नरेन्द्र मोदी ने भारतीय संस्कृति को वैश्विक स्तर पर फिर से स्थापित किया है।

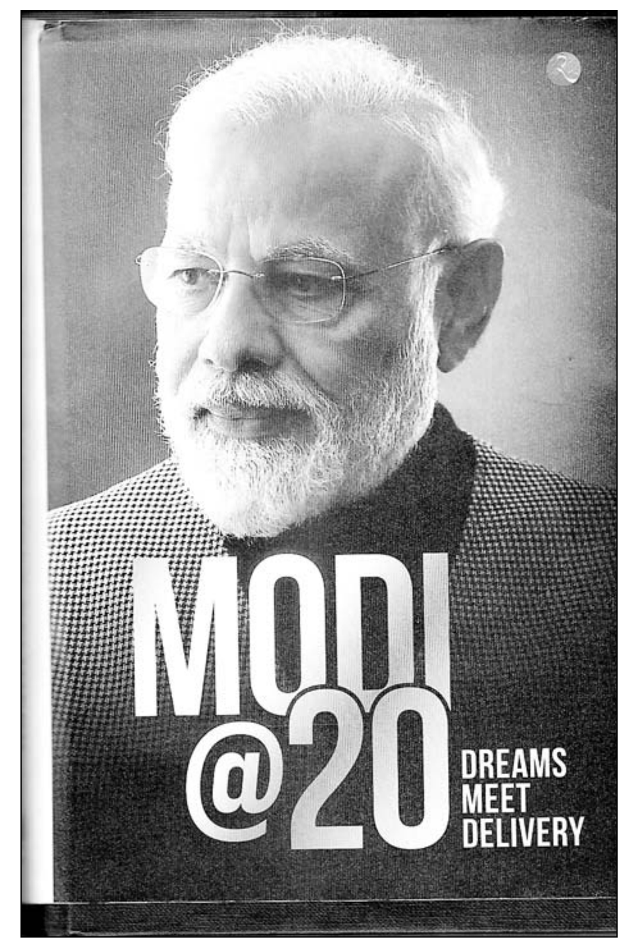

यह सच है कि नरेन्द्र मोदी का जीवन राजनीतिक व्यक्तित्व भर नहीं है, बल्कि सभी क्षेत्रों के लोगों को प्रेरणा देने वाला है। इसीलिए किसी एक क्षेत्र के विषय विशेषज्ञ नहीं बल्कि सभी उनकी कार्यप्रणाली की सराहना करते हैं। प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल के अंतर्गत यह भी पता चलता है कि कैसे एक व्यक्ति के रूप में उनका का पूरा जीवन शुचिता, त्याग और मनसा-वाचा-कर्मणा से पवित्रता से भरा है। व्यक्तिगत मैं यह मानता हूं कि नरेन्द्र मोदी ने समृद्ध, संपन्न और तेजी से विकास की ओर अग्रसर भारत के स्वप्नदृष्टा के रूप में जो कार्य किया है, उसके बारे में जितना कहा जाए उतना ही कम होगा।

वासुदेव देवनानी
प्रदेश संयोजक-'मोदी/20' कार्यक्रम

क्रिस्टल का 5 मिमी ताजमहल बनाया

उदयपुर, (कासं)। जिले के अंतरराष्ट्रीय क्रिस्टल शिल्पकार वकार हुसैन पिता एजाज हुसैन ने क्रिस्टल से 5 मिलीमीटर आकार का ताजमहल बनाकर रिकॉर्ड अपने नाम किया है। उनका नाम '21 सेंचुरी इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड' में दर्ज किया गया है।

गुरुवार को राजस्थान लघु उद्योग निगम अध्यक्ष राजीव अरोड़ा ने हुसैन को यह सर्टिफिकेट सुपूर्द किया एवं शुभकामनाएं दी। अरोड़ा ने शिल्पकार वकार हुसैन को पाग एवं पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया एवं उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। इस दौरान कलाकार वकार हुसैन ने अब तक विभिन्न मंचों पर मिले सम्मान की जानकारी अरोड़ा को दी। कलाकार वकार हुसैन ने बताया कि इस 5 मिलीमीटर के ताजमहल को बनाने में 3 महीने का

- **राजस्थान लघु उद्योग निगम अध्यक्ष राजीव अरोड़ा ने हुसैन को यह सर्टिफिकेट सुपूर्द किया**
- **क्रिस्टल शिल्पकार वकार हुसैन ने ताजमहल बनाकर रिकॉर्ड अपने नाम किया**

समय लगा है। शिल्पकार वकार हुसैन पिता एजाज हुसैन ने क्रिस्टल से 5 मिलीमीटर आकार का ताजमहल बनाकर रिकॉर्ड अपने नाम किया है। उनका नाम '21 सेंचुरी इंटरनेशनल बूक ऑफ रिकॉर्ड' में दर्ज किया गया है।

राजस्थान प्री-वैटरनरी टेस्ट 11 को

बीकानेर, (कासं)। वेटरनरी विश्वविद्यालय में स्नातक (बी. वी. एससी. एण्ड ए. एच.) पाठ्यक्रम वर्ष 2022-23 में प्रवेश के लिए 11 सितम्बर को होने वाले प्री-वेटरनरी टेस्ट की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। प्रत्येक परीक्षा केन्द्र पर निगरानी के लिए विश्वविद्यालय द्वारा पर्यवेक्षक और सहायक पर्यवेक्षक नियुक्त किए गए हैं। परीक्षा के आकस्मिक निरीक्षण के लिए उड़न दस्तों का गठन किया गया है। आर.पी.वी.टी. समन्वयक प्रो. ए.पी. सिंह ने बताया कि बीकानेर (10), जयपुर (5) और उदयपुर (5) के 20 निर्धारित परीक्षा केन्द्रों पर लगभग 8158 अभ्यर्थी इसमें शामिल होंगे। सभी अभ्यर्थियों को ऑनलाइन प्रवेश पत्र जारी किये गए हैं। परीक्षार्थियों को प्रातः 9:30 बजे तक ही परीक्षा केन्द्र में प्रवेश दिया जायेगा।

अपने आत्म स्वरूप में रमण करना उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म

अध्यात्म-मार्ग में ब्रह्मचर्य को सर्वश्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि सही मायने में वही मोक्ष का कारण है। 'ब्रह्म' यानि 'आत्मा' और 'चर्या' यानि 'रमण करना' अर्थात् समस्त विषयों में अनुराग छोड़कर अपने आत्म-स्वरूप में रमण करना या लीन रहना ही सच्चा- ब्रह्मचर्य है। उत्तम ब्रह्मचर्य व्रत में सब प्रकार के राग- द्वेष त्याग कर अपने आप में रमण करना और अपनी आत्मा का साक्षात्कार करना यह मुख्य लक्ष्य होता है। इसे 'अणुव्रत' और 'महाव्रत' दोनों ही रूप से ग्रहण किया जाता है। 'उत्तम-ब्रह्मचर्य' तो नग्न- दिगम्बर

वर्षा अजमेरा

भावलिंगी-मुनियों को ही होता है। ब्रह्मचर्य धर्म हमें सिखाता है कि उन परिग्रहों का त्याग करना, जो हमारे भौतिक संपर्क से जुडी हुई हैं, जैसे जमीन पर सोना न कि गद्दे तकियों पर, जरुरत से ज्यादा किसी वस्तु का उपयोग न करना, व्यय, मोह, वासना ना रखते हुए सादगी से जीवन व्यतीत करना।

सच्चा ब्रह्मचारी कौन हैं? जो शरीर को मल का बीज मानता हुआ देखता हुआ, उसे अत्यंत वीभत्स और अपवित्र वस्तुओं का भंडार देखता हुआ जो काम से विरत होता है, वही सच्चा ब्रह्मचारी होता है। तो अपनी दृष्टि चर्म से ऊपर उठाओ, ये ऊपर का चर्म का आकर्षण हैं, थोड़ा इसके भीतर देखो, एक परत उखड जाये तो अंदर क्या हैं। जिस दिन हमारे भीतर में यह बात समझ में आ जाएगी, उस दिन हमें फिर किसी के प्रति आकर्षण नहीं होगा। जीव के परिणामों में अंतर आता है तो उसके कर्म-बंधन में भी अंतर आता है। वास्तव में देखा जाये, तो जिसका शील सुरक्षित है, उसके सब व्रतादिक 'सहज' और 'कार्यकारी' हैं। और जिसका शील सुरक्षित नहीं है, उसके व्रत-तप आदि सब निस्सार हैं।

आचार्य सकलकीर्ति जी महाराज कहते है कि मनुष्य के सभी उत्तम गुणों में ब्रह्मचर्य व्रत श्रेष्ठ है। ब्रह्मचर्य को सभी सिद्धियां होती है। ब्रह्मचर्य व्रत के बिना अन्य सभी व्रत शून्य के समान सारहीन समझना चाहिए।

ब्रह्मचारी सदा शुचिः पवित्र होता है यह सर्वत्र पूज्य है। जीवदया, इन्द्रियदमन, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, सम्यग्दर्शन, ज्ञान, तप- ये सब 'शील का परिवार' है। हम सब भी इस शील के परिवार के सदस्य बनकर 'उत्तम-ब्रह्मचर्य-धर्म' को धारण करें- ऐसी मंगल भावना है। हमारे जीवन में ब्रह्मचर्य धर्म का बहुत महत्व है।

वर्षा अजमेरा
दुर्गापुरा,
जयपुर

राशिफल शुक्रवार 9 सितम्बर, 2022

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, चतुादशी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2079, धनिष्ठा नक्षत्र दिन 11:35 तक, सुकर्मा योग सांय 6:11 तक, गर करण प्रातः 7:38 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-वृष, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-सिंह, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज रवियोग दिन 1:46 से आरम्भ होगा। भद्रा सांय 6:08 से रात्रि 4:48 तक रहेगी। आज अनन्त चतुरदशी व्रत, चान्द पूर्णिमा व्रत, सिंजामाता पूजन आरम्भ और पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर सूर्योदय से 7:46 तक, लाभ-अमृत 7:46 से 10:51 तक, शुभ 12:24 से 1:57 तक, चर 5:03 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 6:13, सूर्यास्त 6:55

मेष
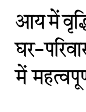
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
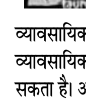
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
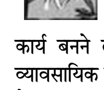
नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

कर्क
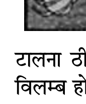
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

सिंह
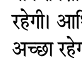
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी रहेगी। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। संभावित धन प्राप्त होगा।

कन्या
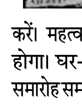
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

तुला
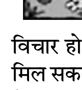
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण परामर्श मिल सकता है। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी।

वृश्चिक
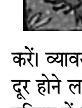
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
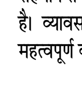
मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मकर
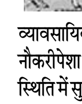
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

कुंभ
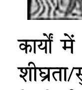
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा।

मीन
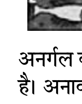
मानसिक तनाव बना रहेगा। मनःस्थिति ठीक नहीं रहेगी। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

प्रदेश में नए करोना संक्रमितों की संख्या में वृद्धि

राज्य में गुरूवार को 251 नए संक्रमित मिले, इससे पहले बुधवार को इनकी संख्या 193 रही थी

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। प्रदेश में गुरूवार को एक बार फिर नए करोना संक्रमितों की संख्या में वृद्धि हुई है। इस दौरान राज्य में 251 नए संक्रमित मिले हैं। वहीं 31 मरीज ठीक भी हुए हैं। राहत की बात यह है कि राज्य में पिछले छह दिनों से करोना से किसी भी मरीज की मौत नहीं हुई है।

प्रदेश में गुरूवार को 23 जिलों में 251 नए संक्रमित मिले हैं। इससे पहले बुधवार को 193 मरीज पाए गए थे। इधर राजधानी जयपुर में सर्वाधिक 36 नए संक्रमित मिले हैं। इसके अलावा दौसा में 28, अजमेर व जोधपुर में 27-27, अलवर में 25, पाली व सीकर में 18-18, कोटा में 14, बीकानेर में 13, भीलवाड़ा में 8, झुंझुनूं में 6, चित्तौड़गढ़ व उदयपुर में 5-5, हनुमानगढ़ व नागौर में 4-4, राजसमंद व टोंक में 3-3, धौलपुर में 2 तथा भरतपुर, डूंगरपुर, जालोर, झालावाड़ और सिरोही में एक-एक नया संक्रमित मिला है। इस बीच राज्य में जांच के लिए 19 हजार 34 सैम्पल लिए गए हैं।

- पिछले चौबीस घंटों में सबसे ज्यादा 36 मरीज जयपुर में मिले हैं।
- राहत की बात यह है कि पिछले छह दिनों से इस बीमारी से किसी भी मरीज की मौत नहीं हुई है।

प्रदेश में लगातार नए संक्रमितों से अधिक मरीज ठीक हो रहे हैं। राज्य में गुरूवार को भी 301 संक्रमित रिकवर हुए हैं। इसके साथ ही एक्टिव केस घटकर 1705 रह गए हैं। जयपुर में पिछले चौबीस घंटों में 128 मरीजों के स्वस्थ्य होने से 413 एक्टिव केस रह गए हैं। इसके अलावा अलवर में 171, जोधपुर में 170 और अजमेर में 103 लोगों का इलाज चल रहा है। प्रदेश में गुरूवार को छठे दिन भी करोना से किसी भी मरीज की मौत नहीं हुई है। हालांकि अब तक इस बीमारी से 9628 संक्रमितों की मौत हो चुकी है।

जयपुर में गुरूवार को 23 स्थानों पर नए संक्रमित मिले हैं। इनमें सबसे ज्यादा बगरू, बस्सी और सांगानेर में 3-3 नए संक्रमित मिले हैं। इसके अलावा चांदपोल, जगतपुरा, झोटवाड़ा, शास्त्री नगर व वैशाली नगर में 2-2 तथा आमेर, बरकत नगर, सी-स्कीम, दुर्गापुरा, गांधी नगर, गंगापोल, घाटगेट, हवा सड़क, मालवीय नगर, पुरानी बस्ती, सोड़ाला, विद्याधर नगर में 1-1 नया संक्रमित मिला है। वहीं इस बीच राजभवन में भी एक करोना संक्रमित सामने आया है। वहीं 4 संक्रमितों का पता गलत मिला है।

एम्स की रिपोर्ट के आधार पर नियुक्ति देने के आदेश

जयपुर। हाईकोर्ट ने फोरेस्ट रेंज ऑफिसर और एसीएफ भर्ती-2018 में एम्स, जोधपुर की रिपोर्ट के आधार पर अभ्यर्थी को पात्र मानते हुए उसे मेरिट के अनुसार नियुक्ति देने को कहा है। जस्टिस इन्द्रजीत सिंह ने यह आदेश सुरेन्द्र कुमार की याचिका को स्वीकार करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता रामप्रताप सैनी ने बताया कि आरपीएससी ने वर्ष 2018 में वन विभाग में रेंज ऑफिसर और एसीएफ पदों के लिए भर्ती निकाली थी। याचिकाकर्ता लिखित परीक्षा के बाद साक्षात्कार में भी पास हो गया। वहीं विभाग ने उसके शारीरिक दक्षता में चेस्ट की नाप तय सीमा से कम होने के आधार पर चयन प्रक्रिया से बाहर कर दिया। पूर्व में सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट ने एम्स, जोधपुर को याचिकाकर्ता का नाप लेने के आदेश दिए थे। जिसकी पालना में एम्स की ओर से हाईकोर्ट में रिपोर्ट पेश की गई। रिपोर्ट में बताया गया कि याचिकाकर्ता की सीने की नाप तय मापदंड से काफी अधिक है। विभाग की ओर से कहा गया कि विभाग की ओर से दक्षता परीक्षा में याचिकाकर्ता के सीने की नाप तय मापदंड से कम आई थी। इसलिए उसे नियुक्ति नहीं दी गई।

बुनाई कलाकारों के लिए वीव वॉक कल

प्रमुख शासन सचिव गायत्री राठौड़ व (बायें से दायें) पर्यटन निदेशक संध्या, संयुक्त निदेशक डॉ.रश्मि शर्मा, डॉ.पुनीता सिंह और साधना गर्ग ने वीव वॉके के बारे में जानकारी दी।

जयपुर। राजस्थान के बुनाई कलाकारों के शिल्प कौशल को बेहतर बनाने और प्रदर्शित करने के लिए साधना गर्ग द्वारा क्यूरेट किया गया वीव वॉक का दूसरा संस्करण 10 सितंबर को होटल फेयरमौट में आयोजित किया जाएगा। रघुकुल ट्रस्ट द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम पर्यटन विभाग, राजस्थान द्वारा समर्थित है। विश्व स्तर पर संस्कृति के जार कहे जाने वाले और एशियाई हेरिटेज फाउंडेशन के अध्यक्ष, राजीव सेठी कीनोट एड्रेस देंगे। कोविड-19 के बाद देश के अन्य हिस्सों से राजस्थान में हेरिटेज शिल्प कला ने बाजार का एक बड़ा हिस्सा खो दिया है जो पहले से ही संकट में था। महिलाओं के स्वामित्व वाले व्यवसाय, विशेष रूप से हस्तशिल्प खंड जहां महिलाओं की भारी उपस्थिति थी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

हमारी टैग लाइन जीवित परंपराओं को बढ़ावा देना के अनुसार हम अपनी प्रदर्शन कला और शिल्प कला के व्यावसायीकरण से परे देखना चाहते हैं। हम स्थानीय शिल्प कला समुदायों को प्रोत्साहन प्रदान करें और ऐसा करते हुए इंक्लूसिव पर्यटन को बढ़ावा देना चाहते है। हम वीव वॉक में उन हेरिटेज स्थलों को प्रदर्शित करेंगे जो कम प्रचलित हैं। बॉलीवुड फेम कोरियोग्राफर शाय लोबो, जो मनीष मल्होत्रा के शो भी करते हैं, इस इवेंट को कोरियोग्राफ करेंगे। शो की स्टाइलिस्ट जयपुर निवासी संध्या होंगी। जयपुर की 40 प्रमुख महिलाओं के साथ शिल्प कलाकार रैंप वॉक करेंगे। महिला जयपुराइट पूरे राजस्थान से बुनी कम ज्ञात साड़ियों में रैंप वॉक करेंगी, जैसे पट्टू, आवा, रासिका रेड, इंडिगो, बधरू, कोटा जरी, मोजामाबाद, आजरक आदि। वॉक पेशेवर मॉडल द्वारा नहीं बल्कि जयपुर हेडलाइनर्स द्वारा होगा, जैसे डॉक्टर, शिक्षाविद, गृहिणी, उद्यमी, इंजीनियर, डिजाइनर, डिजिटल रणनीतिकार। शो में हेरिटेज सिंगर लोक संगीत की प्रस्तुति भी देंगे। ऐसा करने से कारीगर और कलाकार के समुदायों पर ध्यान केंद्रित होगा व साथ ही पर्यटन पर फिर से विचार करने में लाभ उत्पन्न होगा।

राजस्थान के पीड़ित निवेशकों की रकम लौटाने में केंद्र सरकार मदद करें : उदयलाल आंजना

जयपुर। सहकारिता मंत्री उदयलाल आंजना ने कहा कि आदर्श, संजीवनी, नवजीवन जैसी मल्टी स्टेट क्रेडिट कॉपरेटिव सोसायटियों द्वारा राजस्थान के छोटी बचत करने वाले लाखों लोगों की गाढी कमाई को हडपा गया है। इन सब पीडित परिवारों के साथ बडा धोखा हुआ है, यह बहुत ही व्यथित करने वाला है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार राजस्थान के पीडित निवेशकों की राशि लौटाने में मदद करें।

आंजना गुरूवार को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित सहकारिता मंत्रियों के सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विभिन्न केन्द्रीय एजेन्सियां जैसे ईडी, इन्कम टैक्स विभाग आदि आपस में सहयोग एवं समन्वय कर पीड़ित निवेशकों को राहत दें। ईडी एवं इनकम टैक्स विभाग ने मांग आपूर्ति हेतु सम्पत्तियों को जब्त कर रखा है इससे छोटे निवेशकों को भुगतान में बाधा आ रही है, पहले सर्वप्रथम निवेशकों को राहत देनी चाहिये। उन्होंने आग्रह किया कि केंद्र सरकार इन एजेंसियों को निर्देशित करें।

- दिल्ली में सहकारिता मंत्रियों के सम्मेलन में आंजना ने मल्टी स्टेट क्रेडिट सोसायटियों की धोखाधड़ी का मुद्दा उठाया

सहकारिता मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार के सामने जैसे ही यह विषय आया तत्काल ही राजसहकार पोर्टल खोला गया और पीड़ितों की शिकायतें ली जा रही हैं। अब तक 01 लाख से अधिक शिकायतें आ चुकी हैं। निवेशकों के हित में डेजिग्नेटेड कोर्ट घोषित कर 7 हजार इस्तगासे अभी तक दर्ज किये जा चुके हैं। उन्होंने भारत सरकार के सहकारिता मंत्री अमित शाह को ध्यान दिलाया कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने भी प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर पीड़ित निवेशकों का पैसा लौटाने एवं इन सोसायटियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही के लिए भी आग्रह किया हैं।

आंजना ने कहा कि मल्टी स्टेट क्रेडिट सोसायटियों के खिलाफ राज्य को दी शक्तियां सीमित है ऐसे में केंद्र सरकार बड्स एक्ट 2019 एवं मल्टी स्टेट को-आपरेटिव सोसायटीज एक्ट, 2002 में संशोधन करें ताकि राज्य सरकारों के स्तर से भी इन सोसायटियों के खिलाफ ठोस कार्यवाही की जा सके। सहकारिता मंत्री ने सम्मेलन में नाबार्ड द्वारा रियायती दर पर उपलब्ध करवाई जा रही 40 प्रतिशत ऋण राशि को बढ़ाकर 60 प्रतिशत करने की मांग की ताकि किसानों को अधिक से अधिक ब्याज मुक्त ऋण उपलब्ध कराया जा सके।

जगदीप धनखड़ का राजभवन में स्वागत

जयपुर। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ देश के उपराष्ट्रपति निर्वाचित होने के बाद गुरुवार दोपहर पहली बार सपत्नीक राजभवन आए। यहां राज्यपाल कलराज मिश्र ने उपराष्ट्रपति धनखड़ और उनकी पत्नी सुदेश धनखड़ का भावभरा स्वागत किया। उन्होंने उपराष्ट्रपति से मुलाकात कर प्रदेश और प्रदेश के विकास से जुड़े विषयों पर उनसे चर्चा की।

इससे पहले उपराष्ट्रपति के सांगानेर एयरपोर्ट पहुंचने पर राज्यपाल कलराज मिश्र ने अगवानी की और पुष्पगुच्छ भेंट कर भावभीना स्वागत करते हुए उनका अभिनंदन किया। कला एवं संस्कृति मंत्री बी.डी. कल्ला, महिला एवं बाल विकास मंत्री ममता भूपेश, मुख्य सचिव उषा शर्मा, पुलिस महानिदेशक एम. एल. लाठर ने भी उपराष्ट्रपति का स्वागत किया। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ को राज्यपाल ने शाम को सांगानेर एयरपोर्ट पर भावभीनी विदाई दी। मंत्री बी.डी. कल्ला, सांसद राम चरण बोहरा, मुख्य सचिव उषा शर्मा, पुलिस महानिदेशक एम. एल. लाठर ने भी विदाई दी।

वाटर क्वालिटी मॉनिटरिंग व मैनेजमेंट के गुर सिखाए

जयपुर, (का.सं.)। राष्ट्रीय जल जीवन मिशन के तहत जयपुर में आयोजित की जा रही दो दिवसीय कार्यशाला के पहले दिन रसायनज्ञों को जल गुणवत्ता प्रबंधन के गुर सिखाए गए। क्वालिटी काउंसिल ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग में पानी की गुणवत्ता बनाए रखने की जिम्मेदारी संभालने वाले 30 रसायनज्ञों को विभिन्न तकनीकों के बारे में प्रशिक्षित किया जा रहा है।

कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए मुख्य अभियंता के.डी. गुप्ता ने कहा कि प्रदेश में पानी की गुणवत्ता बनाए रखने में एन.ए.बी.एल. अप्रूव्ड प्रयोगशालाओं की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि जल जीवन मिशन का क्रियान्वयन राजस्थान जैसे भौगोलिक परिस्थितियों वाले राज्य के लिए काफी चुनौतिपूर्ण है। उन्होंने उम्मीद जताई कि इस कार्यशाला में सीखी गई बातें रसायनज्ञों के लिए काफी लाभदायक होंगी।

तस्करी करने वाले को सजा

जयपुर, (का.सं.)। एनडीपीएस मामलों की विशेष अदालत ने मादक पदार्थ डोडा-पोस्त की तस्करी करने वाले अभियुक्त विजय कुमार को सात साल की सजा सुनाई है। वहीं अदालत ने कश्मीर निवासी इस अभियुक्त पर सत्तर हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। अदालत ने कहा है कि इस दंड आदेश की अपील करने की मियाद पूरी होने के बाद तस्करी में शामिल ट्रक को नीलाम कर प्राप्त होने वाली राशि को राजकोष में जमा कराया जाए।

लंपी संक्रमण से अप्रभावित इलाकों में तेजी से टीकाकरण करें : लालचंद कटारिया

जयपुर, (का.सं.)। पशुपालन मंत्री लालचन्द कटारिया ने राज्य में लम्पी स्किन डिजीज को फैलने से रोकने के लिए संक्रमण से अप्रभावित इलाकों में तेजी से टीकाकरण करने के निर्देश दिए। प्रदेश में अभी तक 6 लाख 87 हजार पशुओं का टीकाकरण किया जा चुका है। पश्चिमी राजस्थान में संक्रमण एवं मृत्यु दर में लगातार गिरावट आ रही है और जैसलमेर जिले में पिछले एक सप्ताह से लम्पी रोग से किसी जानवर के मरने की रिपोर्ट नहीं मिली है। कटारिया गुरुवार को यहां पंत कृषि भवन में वरिष्ठ विभागीय अधिकारियों सहित सभी संभाग एवं जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेसिंग के जरिये बैठक कर लम्पी स्किन डिजीज की स्थिति एवं रोकथाम के लिए किये जा रहे प्रयासों की समीक्षा कर रहे थे।

- गौशालाओं का पुनः निरीक्षण करने के निर्देश

कृषि मंत्री लालचंद कटारिया ने गुरुवार को पंत कृषि भवन में वरिष्ठ विभागीय अधिकारियों सहित सभी संभाग एवं जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेसिंग के जरिये बैठक की।

पशुपालन मंत्री कटारिया ने कहा कि प्रदेश में लम्पी स्किन डिजीज की रोकथाम के लिए राजस्थान कोऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन एवं पशुपालन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में गौवंशीय पशुओं में टीकाकरण किया जा रहा है उन्होंने बताया कि अब तक अजमेर जिले में 53209, कुचामन सिटी में 37697, भरतपुर में 56410, चित्तौड़गढ़ में 43476, अलवर में 73535, जयपुर में 29957, बांसवाड़ा में 53000, कोटा में 40232, बूंदी में 34979, बारां में 75571, झालावाड़ में 34118, प्रतापगढ़ में 44866, उदयपुर में 33255 सहित 27 जिलों में 6 लाख 87 हजार 375 पशुओं में टीकाकरण किया गया है। उन्होंने बताया कि राज्य में पर्याप्त मात्रा में टीके उपलब्ध है और डेयरी फेडरेशन के माध्यम से 25 लाख टीके और खरीदने की कार्यवाही की जा रही है। उन्होंने संक्रमण रहित क्षेत्र को चिन्हित कर टीकाकरण के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने और तेजी से टीकाकरण करने के निर्देश दिए।कटारिया ने कहा कि रोगी पशुओं के उपचार के लिए किसी प्रकार की कमी नहीं आने दी जाएगी। उन्होंने कहा कि जिलों में स्थानीय स्तर पर दवाइयों की खरीद के लिए आवश्यक वित्तीय प्रावधान किए गए हैं। इसके अलावा कॉन्फेड के माध्यम से जिलों की मांग अनुरूप औषधियों की आपूर्ति भी की जा रही है। उन्होंने प्राप्त औषधियों को जिला औषधि भंडार में अनावश्यक नहीं रखकर तुरंत संस्थाओं को भिजवाने के निर्देश दिए।

पशुपालन मंत्री ने अधिकारियों को सभी गौशालाओं का पुनः निरीक्षण करने के निर्देश देते हुए कहा कि प्रदेश में मानसून का दौर फिर से सक्रिय होने की संभावना के दृष्टिगत गौशालाओं में साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें ताकि संक्रमण को रोकने में मदद मिल सके। उन्होंने जन प्रतिनिधियों के सम्पर्क में रहकर लम्पी रोग के रोकथाम के प्रभावी प्रयास करने के निर्देश दिए। कटारिया ने इस संक्रमण काल के दौरान गौवंश को इस बीमारी से बचाने के लिए आगे आए भामाशाहों एवं स्वयं सेवी संस्थाओं तथा जन प्रतिनिधिगण से मिले सहयोग की प्रशंसा करते हुए आभार व्यक्त किया।

कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने की विधायक गंगादेवी के खिलाफ नारेबाजी

जयपुर, (का.प्र.)। कांग्रेस के राज में कांग्रेस विधायकों के क्षेत्र में काम नहीं होने को लेकर अब आमजन के साथ खुद कांग्रेस कार्यकर्ता भी विरोध में खड़े होने लगे हैं। इस विरोध का असर यह है कि कांग्रेस कार्यकर्ता अपने विधायक के खिलाफ हैं, सड़कों पर उतर आए हैं। जयपुर के प्रताप नगर सेक्टर कांग्रेस कार्यकर्ताओं के ऐसे ही विरोध का सामना बगरू विधायक गंगा देवी को करना पड़ा।

यहां हाउसिंग बोर्ड के कार्यक्रम में बगरू विधायक गंगादेवी आई थी तो उनके खिलाफ कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने ही प्रदर्शन शुरू कर दिया और क्षेत्र में विकास कार्य नहीं होने का आरोप लगाया। दरअसल कॉलोनी में सड़क का काम पिछले 4 साल से अधूरा पड़े रहने और पीने की पानी की समस्या को लेकर लोगों में गुस्सा बढ़ रहा है।

- विकास कार्य नहीं होने से खफा हैं प्रताप नगर के कांग्रेसजन और आम लोग

जयपुर शहर जिला कांग्रेस कमेटी के पूर्व महासचिव गजेन्द्र सिंह तंवर के नेतृत्व में प्रताप नगर सेक्टर 17 के लोग कार्यक्रम में पहुंचे और विधायक गंगादेवी के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी और विधायक पर जनता की सुनवाई न करने का आरोप लगाया। तंवर ने बताया कि सेक्टर 173 में करीब 500 मकान है और यहां कॉलोनी में सड़कें पिछले 4 साल से जर्जर पड़ी हैं।

कुछ जगहों पर सड़क बनाने के लिए मोरम और गिट्टियां डाली गई, लेकिन डामरीकरण अब तक नहीं किया। इसको लेकर हम कई बार विधायक गंगादेवी को भी ज्ञापन दे चुके हैं, लेकिन वे एक बार भी न तो हमारे क्षेत्र में लोगों की समस्याएं देखने आई और न ही उन्होंने नगर निगम, हाउसिंग बोर्ड के अधिकारियों को सड़क बनवाने के निर्देश दिए। तंवर ने बताया कि कांग्रेस के कार्यकर्ता होने के बावजूद कांग्रेस की सरकार में कोई सुनवाई नहीं हो रही।

विरोध कर रहे लोगों ने सड़क के अलावा पानी की सप्लाई नियमित नहीं होने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि प्रताप नगर एरिया में पानी बहुत कम प्रेशर के साथ और 20 से 25 मिनट ही सप्लाई हो रहा है, जबकि अन्य जगहों पर तेज प्रेशर के साथ 45 से 60 मिनट तक पानी सप्लाई होता है। यही नहीं कई बार तो पानी की सप्लाई ही नहीं होती। पीएचईडी के अधिकारी एईएन एक्सईएन भी कोई ध्यान नहीं दे रहे।

तीये की बैठक

अत्यंत दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि हमारे पूजनीय पिताजी

जगदीश नारायण गुर्जर

(डोई) सेवानिवृत्त (भारतीय रिजर्व बैंक) का स्वर्गवास 07.09.2022 बुधवार को हो गया है। तीये की बैठक दिनांक 09.09.2022 शुक्रवार को दोपहर 3:00 से 4:00 बजे तक हमारे निवास स्थान सी-50, मॉडल टाउन-सी, मालवीय नगर, जयपुर पर होगी।

शोकाकुल- रामजीवन, राधाकिशन (काकाजी), भूराराम, श्योजीराम, रामजीलाल, मोतीराम, भोलूराम, गोवर्धन, भीमाराम, मोठूराम, लालाराम बजरंग, (भ्राता), हनुमान, चन्दालाल, श्रवण (पुत्र), रोहन, कौशल, केशव (पौत्र) एवं समस्त डोई परिवार (रतनपुरा वाले).

9024119175, 8005519363

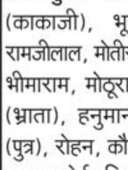

अत्यंत दुःख के साथ सूचित किया जाता है हमारे पूजनीय पिताजी

श्री रूपनारायण जी जांगीड

(गोपालपुरा वाले) का स्वर्गवास 07.09.2022 को हो गया है। जिनकी तीये की बैठक 09.09.2022 को सांय 4:00 से 5:00 बजे तक निवास स्थान के पास चंद्रा पैराडाइस (मान्यावास, मानसरोवर) पर होगी।

शोकाकुल- भॅंवरलाल, रामस्वरूप, गोपाल, मोहनलाल, देवीलाल (भ्राता), ओमप्रकाश, मुकेश (पुत्र), राजेश, श्याम, अविनाश, केदार, नितेश, चेतन, सुरेश, सुनील (भतीजे), मनीष, मोहित (पौत्र) एवं समस्त गौठडीवाल परिवार।

9829935472, 9680432495

नम्बर मिलाइए 9587884433

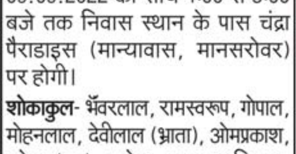

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

आम सूचना सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी अभिभाष्या हीरा देवी पत्नि स्व. बलवंत महावर कोहली उम्र 48 वर्ष निवासी प्लाट नंबर 52-डी, गली नम्बर 4, नारायणपुरी कॉलोनी, रावलजी का बंधा, हसनपुरा जयपुर का पुत्र प्रीतम कोहली मेरी अभिभाष्या के कहने में नहीं है तथा उसने मेरी अभिभाष्या की मर्जी के खिलाफ विवाह कर लिया है तथा आये दिन मेरी अभिभाष्या के साथ झगडा, दुर्व्यवहार करता है, इसलिए मेरी अभिभाष्या ने अपने पुत्र प्रीतम कोहली को अपनी संपूर्ण चल-अचल संपत्ति से बेदखल कर दिया है, अब प्रीतम कोहली का मेरी अभिभाष्या की चल-अचल संपत्ति से कोई संबंध व हक अधिकार नहीं रहा है। यदि कोई व्यक्ति प्रीतम कोहली से किसी प्रकार का लेन-देन, संव्यवहार करता है, तो उसके लिए मेरी अभिभाष्या की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। अतः सूचित रहे।
दिनांक 6/9/22 (अजय सिंह गौड) एडवोकेट, मो. 8696970880

आम सूचना मेरे अभिभाष्य नानगराम सैनी पुत्र श्री सोहनलाल सैनी एवं श्रीमती चंपा देवी पत्नी नानगराम सैनी, निवासीयान-289, चौहान का भवन, भोफतका की ढाणी, शिव कुण्डा की तलाई, आमेर, जयपुर के निर्देशानुसार सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि उनकी पुत्री मधु सैनी उम्र 18 साल मेरे अभिभाष्य व उसकी पत्नी श्रीमती चम्पा देवी व उनके परिवारजनों के कहने में नहीं है तथा अपनी मनमर्जी का स्वच्छंद जीवन जी रही है। जिसकी वजह से दिनांक 08.03.2022 से मेरे अभिभाष्य व उसकी पत्नी का मधु सैनी से कोई सम्पर्क व व्यवहार नहीं रहा है। मेरे अभिभाष्य व उसकी पत्नी ने मधु सैनी को अपनी तमाम चल अचल सम्पत्ति व भविष्य में अर्जित की जाने वाली सम्पत्तियों से बेदखल कर दिया है भविष्य में यदि कोई व्यक्ति उससे लेनदेन, संव्यवहार करता है तो वह स्वयं जिम्मेदार रहेगा, ऐसे किसी संव्यवहार व मधु सैनी के किसी कार्य के लिये मेरे अभिभाष्य व उसकी पत्नी व अन्य परिवारजन जिम्मेदार नहीं होंगे। सूचित रहे।
जयपुर (सुनील कुमार शर्मा) एडवोकेट
दिनाक-08.09.2022 मो.नं. 9829017211

आम सूचना सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि श्री राजीव कुमार पुत्र श्री रामलाल, निवासी लेगों का बास, ग्राम उंचाखडा खुर्द, तहसील मेडतासिटी, जिला नागौर राजस्थान राज्य ने प्लाट नम्बर 78, कनक वृन्दावन, ग्राम दहमी कलां, तहसील सांगानेर जिला जयपुर, क्षेत्रफल 130.20 वर्गगज को खरीद कर लिया है एवं उक्त प्लाट के मूल दस्तावेजात की श्रृंखला में से दिनांक 16.02.2009 का विक्रय पत्र लिखा हुआ, जिसका पंजीयन क्रमांक 2009399000584 व दिनांक 06/03/2013 का विक्रय पत्र लिखा हुआ, जिसका पंजीयन क्रमांक 201339900302 है, कहीं गुम हो गई है, यदि किसी व्यक्ति का उक्त सम्पत्ति में उत्तराधिकार, विक्रय, रहन, लीज, दान व अन्य किसी प्रकार से अधिकार या हक हो तो निम्न हस्ताक्षरकर्ता के समक्ष सात दिवस में अपना अधिकार या हक मय दस्तावेज प्रस्तुत करें, अन्यथा उक्त सम्पत्ति पर रहन कर लिया जायेगा एवं उसके पश्चात किसी प्रकार का कोई हक या अधिकार मान्य नहीं होगा तथा ना ही मेरे मुवक्किल AADHAR HOUSING FINANCE LIMITED पर बाध्यकारी होगा। भुवनेश जैन, एडवोकेट, मो. 9828025372

कार्यालय उप आवासन आयुक्त, वृत-तृतीय राजस्थान आवासन मण्डल
जे.एल.एन. मार्ग, जवाहर सर्किल के पास, जयपुर, दूरभाष संख्या :- 0141-4901853
आम जाहिर सूचना
राजस्थान आवासन मण्डल, जयपुर द्वारा आवास संख्या-7/MB/175 इन्दिरा गांधी नगर, जगतपुरा, जयपुर क्षेत्रफल 96.000 वर्ग मीटर का आवंटन श्री नाथूलाल पारीक पुत्र स्व. श्री गोविन्द नारायण पुजारी को किया गया था। जिसका आवंटन पत्र कमांक 4759 दिनांक 18.09.2012 जारी किया गया था। श्री नाथू लाल पारीक की मृत्यु दिनांक 29.01.2022 को हो जाने के पश्चात् श्रीमती चन्द्रकान्ता पारीक पत्नी स्व. श्री नाथूलाल पारीक के द्वारा क्षतिपूर्ति बन्धक पत्र, शपथ पत्र, घोषणा पत्र एवं मृत्यु प्रमाण पत्र प्रस्तुत कर, उक्त आवास का प्रतिस्थापन अपने नाम करने का निवेदन किया गया है। अत: उक्त आवास/ फ्लैट के प्रतिस्थापन के संबंध में किसी भी व्यक्ति/बैंक/संस्था को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन के 07 दिवस में अधोहस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर साक्ष्य सहित अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर देवें, अन्यथा उक्त अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होने पर उक्त आवेदनकर्ता- श्रीमती चन्द्रकान्ता पारीक पत्नी स्व. श्री नाथूलाल पारीक के पक्ष में उक्त आवास के हस्तान्तरण की कार्यवाही कर दी जावेगी।
सम्पदा प्रबंधक- वृत तृतीय, रा.आ.मण्डल, जयपुर

कार्यालय नगर निगम ग्रेटर, जयपुर
क्र:एफ-13, उपा.आयो.-द्वितीय /जननि/2022/1140
सार्वजनिक सूचना दि.08.09.22
मूल भूखण्ड संख्या संख्या 76 रघुनाथपुरी झोटवाडा,(शंकर भवन गृह निर्माण सहकारी समिति लि.) जयपुर का जयपुर विकास प्राधिकरण जयपुर द्वारा श्री आलम अली खाँ पुत्र श्री हाजी कल्लू खां के नाम से क्षेत्रफल 235.00 वर्गगज भूमि का पट्टा विलेख जारी किया गया है। प्रकरण में आवेदक द्वारा प्रार्थना पत्र, शपथ पत्र (अण्डरटेंकिंग) पंजीकृत पट्टा मय साईट प्लान की फोटोप्रति, मूल आवंटी का मृत्यु प्रमाण पत्र की फोटोप्रति, नोटेरी सत्यापित वारिस प्रमाण पत्र, रजि. हकत्याग पत्र की फोटोप्रति एवं अन्य दस्तावेजों की छायाप्रति के आधार पर उक्त भूखण्ड का नाम हस्तान्तरण/ फ्री होल्ड पट्टा जारी किया जाना है। नगर निगम ग्रेटर, जयपुर द्वारा श्री जब्बार अली खाँ, श्री सादिक मोहम्मद पुत्रान स्व. श्री आलम अली खाँ एवं श्रीमती गुलशन पत्नी स्व. श्री उस्मान खान के पक्ष में उक्त भूखण्ड का कुल क्षेत्रफल 235.00 वर्गगज का नाम हस्तान्तरण/ फ्री होल्ड पट्टा जारी किया जाना है। इस नाम हस्तान्तर एवं फ्री होल्ड पट्टा जारी किये जाने बाबत् किसी भी व्यक्ति, संस्था, फर्म, कम्पनी को किसी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो 07 दिवस में अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय (उपायुक्त, आयोजना- द्वितीय) प्रस्तुत करें। अन्यथा निर्धारित अवधि की समाप्ति के बाद, नियमानुसार नाम हस्तान्तर एवं फ्री होल्ड पट्टा जारी पट्टाजारी किये जाने की कार्यवाही सम्पादित कर ली
उपायुक्त (आयोजना- द्वितीय)
नगर निगम ग्रेटर, जयपुर

आम-सूचना हर आम व खास को सूचित किया जाता है कि मेरे अभिभाष्य राजेश मंघरानी पुत्र श्री रमेश कुमार मंघरानी निवासी 2/19 एस.एफ.एस. अग्रवाल फार्म मानसरोवर जयपुर ने प्लाट संख्या जे-1083 औद्योगिक क्षेत्र, सीतापुरा औद्योगिक क्षेत्र फेज तृतीय जयपुर मे कुल क्षेत्रफल 250 वर्गमीटर को क्रय करने का इकरारनामा दिनांक 8/7/2020 को मैसर्स एस. आर. के इन्टरनेशनल के प्रोपराईटर इशिता गोयल पुत्री अनुज गोयल जरिये पावर ऑफ अटोनी होल्डर अनुज गोयल निवासी:-पी-3 भूरा पटेल नगर एस. बी. बी. जे. बैंक चौराहे के पीछे अजमेर रोड जयपुर से कर रखा है। जिसके अग्रीम बिचौती पेटे मेरे अभिभाष्य द्वारा पचास लाख रूपये जरिये आर.टी.जी.एस. द्वारा मैसर्स एस. आर. के इन्टरनेशनल के द्वारा अनुज गोयल को अदा किया। अनुज गोयल व मेरे अभिभाष्य के मध्य उक्त सम्पत्ति के इकरारनामा दिनांक 8/7/2020 के बाबत विधिक नोटिस का आदान-प्रदान किया जा चुका है। उसके बावजूद अनुज गोयल व इशिता गोयल मेरे अभिभाष्य के हक मे इकरारनामे की पालना मे रजिस्ट्री नही करवा रहा है और उक्त सम्पत्ति को ऊंचे दामो मे अन्य दीगर व्यक्तियो को बैचने पर आमादा हो रहा है। जो गलत व गैर कानूनी है इकरारनामा दिनांक 8.7.2020 आज भी अस्तित्व मे है। इसलिए हर आम व खास को सूचित किया जाता है कि उक्त सम्पत्ति प्लाट संख्या जे-1083 औद्योगिक क्षैत्र, सीतापुरा औद्योगिक क्षैत्र फेज तृतीय जयपुर को कोई खरीद फिरोत व संव्यवहार नही करे, अन्यथा ऐसा सव्यंवहार मेरे अभिभाष्य के हितो तक शून्य व निष्प्रभावी माना जावेगा। और कानूनी कार्यवाही की जावेगी। सो सूचित रहे। शिवरतन विजयवर्गीय (एडवोकेट) मो. 9414049911
पता:- 60/74 श्योपुर रोड सेक्टर-6, प्रताप नगर सांगानेर, जयपुर (राज.) 302033

राजस्थान आवासन मण्डल, वृत-तृतीय
जे.एल.एन. मार्ग, जवाहर सर्किल के पास, जयपुर 0141-4901853
जाहिर आम-सूचना
राजस्थान आवासन मण्डल, जयपुर द्वारा आवास/ फ्लेट् संख्या 10/869 (जीएफ) मालवीय नगर, जयपुर क्षेत्रफल 106.082 वर्ग मीटर का आवंटन श्री कमलेश कुमार जैन पुत्र श्री माणिक चन्द को किया गया था। जिसका आवंटन पत्र क्रमांक 828 दिनांक 10.08.1987 जारी किया गया था। उनके द्वारा उक्त आवास के पंजीयन प्रपत्रो का निष्पादन कार्यालय उप पंजीयक, जयपुर प्रथम में दिनांक 14.02.1994 को करवाया गया। श्री कमलेश कुमार जैन की मृत्यु दिनांक 24.08.2018 को हो जाने के पश्चात् उनकी पत्नी श्रीमती कोकिला जैन पत्नी स्व. श्री कमलेश कुमार जैन के द्वारा क्षतिपूर्ति बन्धक पत्र, शपथ पत्र, हक त्याग पत्र एवं मृत्यु प्रमाण पत्र प्रस्तुत कर उक्त आवास का हस्तान्तरण अपने नाम से करने का निवेदन किया गया है। अत: उक्त आवास के हस्तान्तरण के संबंध में किसी भी व्यक्ति/बैंक/संस्था को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन के 07 दिवस में अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर साक्ष्य सहित अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर देवें, अन्यथा उक्त अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होने पर उक्त आवेदनकर्ता श्रीमती कोकिला जैन पत्नी स्व. श्री कमलेश कुमार जैन के पक्ष में उक्त आवास के हस्तान्तरण की कार्यवाही कर दी जावेंगी।
सम्पदा प्रबंधक, वृत-तृतीय, रा. आ. मण्डल, जयपुर

राजस्थान आवासन मण्डल, वृत-तृतीय
जे.एल.एन. मार्ग, जवाहर सर्किल के पास, जयपुर 0141-4901853
जाहिर आम-सूचना
राजस्थान आवासन मण्डल, जयपुर द्वारा दुकान संख्या-4/SC/17 इन्दिरा गांधी नगर, जगतपुरा, जयपुर क्षेत्रफल 6.25 वर्ग मीटर का आवंटन श्रीमती शीलवन्ती बूलचन्दानी को किया गया था। जिसका आवंटन पत्र क्रमांक 3502 दिनांक 06.11.2020 जारी किया था। श्रीमती शीलवन्ती बूलचन्दानी की मृत्यु 04.05.2021 को हो जाने के पश्चात् भारती बूलचन्दानी पुत्री स्व. श्री करमचन्द बूलचन्दानी के द्वारा क्षतिपूर्ति बन्धक पत्र, शपथ पत्र एवं मृत्यु प्रमाण पत्र प्रस्तुत कर, उक्त दुकान का हस्तान्तरण अपने नाम से करने का निवेदन किया गया है। अत: उक्त दुकान के हस्तान्तरण के संबंध में किसी भी व्यक्ति/ बैंक/संस्था को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन के 07 दिवस में अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर साक्ष्य सहित अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर देवें, अन्यथा उक्त अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होने पर उक्त आवेदनकर्ता भारती बूलचन्दानी पुत्री स्व. श्री करमचन्द बूलचन्दानी के पक्ष में उक्त दुकान के हस्तान्तरण की कार्यवाही करदी जावेंगी।
सम्पदा प्रबंधक, वृत-तृतीय, रा. आ. मण्डल, जयपुर

खोया पाया

मेरा निजी खातेदारी का प्लाट नं. 10 व 11 खसरा नं. 25, 26, 27, 28 ग्राम रामसिंहपुरा, सांगानेर जयपुर की ओरिजनल एनओसी कहीं खो गई है। मिलने पर सूचित करें। विजय, कल्पना पांडे-9414323204

सूचित किया जाता है कि राजेश कुमार महावर के नाम से प्लाट नं. 105, मिलन विहार का आवंटन पत्र, साईट प्लान व मूल रसीद कहीं खो गयी है। मिलने पर सूचित करें। मो. 9529145306, 7300420770

मेरे प्लॉट नम्बर बी-214, बक्सावाला जेडीए स्कीम, सांगानेर जयपुर, जेडीए द्वारा जारी मूल आवंटन पत्र, कब्जा पत्र, संशोधन पत्र जयपुर जंक्शन पर खो गए है मिलने पर सूचित करें। नन्दकिशोर पुत्र मंगल सिंह, 241, बक्सावाला सांगानेर, जयपुर-9664188830

नाम परिवर्तन

मैंने अपना नाम यासमीन से बदलकर यासमीन खान रख लिया है। भविष्य में मुझे यासमीन खान पुत्री इमामुद्दीन के नाम से जाना पहचाना जाए। 27601, दर्जियों का रास्ता, रब्बानी बिल्डिंग के पास, मीठी कोठी, सूरजपोल रोड, जयपुर

मैंने अपना नाम ओम प्रकाश से बदलकर ओम प्रकाश खटीक पुत्र स्व. हेमचन्द्र रख लिया है भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जावें। पता-ए-55, श्रीराम जेडीए कॉलोनी, भांकरोटा, जयपुर।

मैं दीपक जैन पुत्र स्व. एल.आर.जैन मैं अपना नाम बदलकर दीपक कुमार जैन पुत्र स्व. एल.आर. जैन रख लिया है भविष्य में मुझे दीपक कुमार जैन के नाम से जाना जावे पता-428, आदर्श नगर, बीस दुकान, जयपुर-9001103727

मैं पूजा सेठी पुत्री स्व. श्री उमराव मल गोदिका निवासी 573 शान्ति नगर, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर हूॅं। मैंने अपना नाम रेखा गोदिका से पूजा सेठी रख लिया है। भविष्य में मुझे पूजा सेठी के नाम से जाना जाये।

मैंने अपना नाम डॉ. संजय प्रभुणे से डा. राजन प्रभुणे रख लिया है। भविष्य में इसी नाम से जाना जावें।

मेरे सर्विस रिकार्ड में मेरी पुत्री का नाम त्रुटिवश Purwa Choudhary दर्ज हो गया। जबकि सही नाम Purva Choudhary है। भविष्य में Purva Choudhary नाम से जाना जावें। आर्मी नं. 15667473P रैंक-हवलदार रामेश्वर लाल पूनिया पुत्र मेघा राम, यूनिट 3COSR C/o 99 APO पता-गांव श्यामपुरा, पो.अ. बालसमन्द तहसील लाडनुं, नागौर (राज.)

मैं मुकेश कुमार शर्मा पुत्र रामकिशोर शर्मा उम्र 37 वर्ष जाति ब्राह्मण निवासी कोठोल्या की ढाणी बीलवा कला जिला जयपुर का हूँ। मेरा नाम मुकेश कुमार शर्मा एवं कानाराम है मुझे दोनों नामों से जाना पहचाना जाता है।

कार्यालय विकास अधिकारी पं.स. पावटा (जयपुर)
क्रमांक-पंसपा/लेखा/निविदा/2022-23/2671-75
दिनांक-08/09/2022

ई-निविदा निरस्त सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि इस कार्यालय के पत्र क्रमांक पंसपा/लेखा/निविदा/2022-23/1316 दिनांक 14.06.2022 के द्वारा पंचायत समिति पावटा के अधिनस्थ समस्त गाम पंचायतों में सुरक्षा गार्ड उपलब्ध करवाने के संबंध में ऑनलाईन निविदाऐं आमंत्रित की गई थी। जिनको अपरिहार्य कारणों से निरस्त किया जाता है।

विकास अधिकारी
पं.स. पावटा (जयपुर)

त्वरित हो जोधपुर में स्थाई पीठ गठित करने की कार्रवाई: राजस्थान हाईकोर्ट

जोधपुर में अधिकरण की चल पीठ अनियमित रूप से तीन दिन ही न्यायिक कार्रवाई करती है

जोधपुर, (कासं)। राजस्थान उच्च न्यायालय की खंडपीठ के वरिष्ठ न्यायाधीश संदीप मेहता और न्यायाधीश कुलदीप माथुर ने राजस्थान सिविल सेवा अपीलीय अधिकरण की जोधपुर में स्थाई पीठ गठित करने की कार्रवाई में तेजी लाएं और उन्होंने इस बाबत अतिरिक्त महाधिवक्ता को कहा कि वे संबंधित अधिकारियों को सूचित करें कि जोधपुर में अधिकरण की स्थाई पीठ,जहां तक संभव हो, छह माह में गठित हो जाएं।

राजस्थान हाईकोर्ट एडवोकेट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष नाथूसिंह राठौड़ ने अधिवक्ता अनिल भंडारी के माध्यम से दायर जनहित याचिका में कहा कि जोधपुर में अधिकरण की चल पीठ अनियमित रूप से तीन दिन ही न्यायिक कार्रवाई करती है,जिससे न केवल फरीको बल्कि अधिवक्ताओं को भी अत्यधिक असुविधा और परेशानी होती है सो लंबित मामलों की वृद्धि देखते हुए स्थाई पीठ गठित की जाएं।

गत 19 जुलाई को खंडपीठ ने अपने अंतरिम आदेश में कहा कि अधिकरण में जोधपुर क्षेत्राधिकार के 2655 प्रकरण लंबित है सो न्याय आपके द्वार की भावना से जोधपुर में स्थाई पीठ गठित करने के आदेश दिए और तब तक जोधपुर में चल पीठ को आठ दिवस प्रभावी रूप से न्यायिक कार्रवाई करने का निर्देश दिया। अतिरिक्त महाधिवक्ता संदीप शाह ने कहा कि न्यायालय आदेश की अनुपालना में राज्य सरकार के कार्मिक विभाग ने गत 8 अगस्त को हुई बैठक में जोधपुर में अधिकरण की स्थाई पीठ गठित करने का अनुमोदन कर दिया है और इसके वास्ते नए भवन,मानव संसाधन आदि वास्ते एक साल की जरूरत रहेगी।उन्होंने कहा कि सरकार ने 6 सितम्बर को यह निर्णय भी ले लिया है कि तब तक जोधपुर में अधिकरण की चल पीठ आठ प्रभावी दिन न्यायिक कार्रवाई करेगी।भारत सरकार की ओर से अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल मुकेश राजपुरोहित और राजस्थान उच्च न्यायालय की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता डा सचिन आचार्य उपस्थित रहें।

बीएड पेपर देने जा रहे चार दोस्तों को ट्रक ने कुचला, तीन की दर्दनाक मौत

आगरा मुंबई राष्ट्रीय राजमार्ग पर गुरुवार सुबह ट्रक ने टक्कर मारी

पुलिस ने घटना के बाद मौका मुआयना कर जानकारी जुटाई।

धौलपुर, (निसं)। बाइक से बीएड का पेपर देने जा रहे 4 छात्रों को धौलपुर शहर में सदर थाने के सामने आगरा मुंबई राष्ट्रीय राजमार्ग पर गुरुवार सुबह ट्रक ने टक्कर मार दी। जिससे 2 छात्रों की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। वहीं एक घायल ने इलाज के दौरान जिला अस्पताल धौलपुर में दम तोड़ दिया।

- **हाइवे क्रॉस करने के दौरान गुरुवार सुबह ट्रक ने चारों को कुचला**

संदीप पुत्र बदन सिंह जाटव निवासी गांव दाहिना रूपबास भरतपुर, दीपेंद्र पुत्र जगदीश कुशवाह निवासी गढ़ी बुराना खानुआ रूपवास भरतपुर, पवन पुत्र रामेश्वर प्रसाद जाटव निवासी झाला ताला वैर भरतपुर व सचिन जाटव पुत्र सीयाराम निवासी लखेपुरा थाना कंचनपुर बाड़ी धौलपुर आपस में चारों दोस्त थे। चारों एसएन कॉलेज बड़ागांव मनियां से बीएड कर रहे थे। इस कारण संदीप, दीपेंद्र व पवन मनियां कस्बे में ही किराए पर कमरा लेकर रहते थे। फिलहाल इनके बीएड के पेपर चल रहे थे। जिसका सेंटर राजकीय कन्या महाविद्यालय धौलपुर में था। इस कारण गुरुवार सुबह चारों दोस्त एक बाइक पर सवार होकर पेपर देने के लिए निकले थे। बाइक संदीप चला रहा था। रास्ते में आगरा मुंबई हाईवे पर सदर थाना धौलपुर के सामने जैसे ही इन्होंने बाइक से हाईवे क्रॉस किया तो तेज गति से आ रहे ट्रक ने चारों को कुचल दिया। जिससे संदीप और पवन की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई, वही दीपेंद्र और सचिन घायल हो गए। घटना मिलते ही सदर थाना प्रभारी देवेंद्र कुमार शर्मा पुलिस जाब्ते के साथ मौके पर पहुंचे, जिन्होंने तुरंत दोनों घायलों को जिला अस्पताल धौलपुर पहुंचाया, जहां दीपेंद्र ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। वहीं सचिन का इलाज जारी है।

सूचना मिलते ही सीओ सिटी प्रवेंद्र महेला भी मौके पर पहुंचे और घटना की जानकारी ली । घटना की सूचना मिलने पर कॉलेज छात्र भी अपना पेपर समय से पहले ही जल्दी पूरा कर के जिला अस्पताल पहुंचे। सदर थाना प्रभारी देवेंद्र कुमार शर्मा ने बताया कि घटना के बाद भीड़ मौके पर तमाशबीन बनी रही। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई और घायलों को तुरंत अस्पताल पहुंचाया। वही परिजनों की तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज करते हुए शवों का पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों को सौंप दिए हैं।

अवैध खनन के खिलाफ कार्रवाई

बयाना, (निसं) । बयाना उपखंड के डांग क्षेत्र के बीहडों में आज थाना गढीबाजना पुलिस व बंधबारैठा के वनविभाग के रेंजर की टीम की ओर से छापामार कार्रवाई का । इस कार्रवाही में एक भी अवैध खननकर्ता नही पकड़ा जा सका। वह मौके का लाभ उठाकर भागने में सफल रहे। पुलिस व वन विभाग की संयुक्त टीम ने इस दौरान अवैध खनन के कार्य में उपयोग की जा रही एक हाइड्रा मशीन व एक कम्प्रेशर युक्त ट्रैक्टर को जब्त किया। एक लम्बे अरसे बाद अवैध खनन माफिया के विरूद्ध कार्रवाई की गई।

- **एक हाईड्रा व एक कम्प्रेशर ट्रैक्टर जब्त**

अलवर सरस डेयरी में 1.75 लाख का मिलावटी दूध पकड़ा

अलवर, (निसं)। पिछले 2 महीने में अलवर सरस डेयरी चेयरमैन ने मिलावटी दूध पर बड़ा एक्शन लिया है। तीन जगहों से आया मिलावटी दूध प्लांट में पहुंचते ही पकड़ा गया और नष्ट करा दिया। खुद चेयरमैन ने मिलावट का संदेह वाले टैंकर का बाइक से पीछा किया। फिर प्लांट में पहुंचते ही जांच कर गुरुवार सुबह करीब 1 लाख 75 हजार रुपए की कीमत के दूध को नष्ट करा दिया।

सरस डेयरी के चेयरमैन विश्राम गुर्जर ने बताया कि रामगढ से एक टैंकर में मिलावट होने का संदेह था। जिसका खुद चेयरमैन ने रात को बाइक पर पीछा किया। जब पुष्टि हो गया कि दूध में मिलावट तो सरस प्लांट में आते ही उसकी जांच की गई। जांच में दूध मिलावटी मिला। जिसमें एक्स्ट्रा फैट के लिए कुछ मिलाया गया था। जांच में सैंपल फेल होने पर पूरा दूध गुरुवार सुबह नष्ट करा दिया गया। दूध लाने वाली फर्म को ब्लैक लिस्ट किया जाएगा। इसके अलावा जुर्माना राशि भी वसूल होगी। ताकि आगे मिलावटी दूध सरस तक लाने की हिम्मत नहीं हो।

- **चेयरमैन ने मिलावट का संदेह वाले टैंकर का बाइक से पीछा किया**
- **एक्स्ट्रा फैट के लिए कुछ मिलाया था, जांच में सैंपल फेल होने पर नष्ट कराया**

इससे पहले 16 जून को बहरोड की तरफ से 54 सौ लीटर और 21 जून को 9 हजार लीटर दूध नष्ट कराया था। दूध नष्ट कराने के बाद चेयरमैन विश्राम गुर्जर ने कहा कि दूध में मिलावट नहीं होने देंगे। चाहे रात-दिन जांच करानी पडे। असल में किसान व पशुपालक को अधिक से अधिक फायदा तभी होगा। जब मिलावटी दूध बंद होगा।

मॉडल उत्तर कुंजियां जारी

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा भू-जल विभाग संवीक्षा परीक्षा 2022 के तहत कनिष्ठ भू-भौतिकविद्, कनिष्ठ भू-जल वैज्ञानिक, तकनीकी सहायक-रसायन व भू-जल विज्ञान की मॉडल उत्तर कुंजियाँ वेबसाइट पर जारी कर दी गई है।

आयोग द्वारा 1 व 2 अगस्त 2022 को इस परीक्षा का आयोजन किया गया था। आयोग के उप सचिव सुनील रांका ने बताया कि यदि किसी भी अभ्यर्थी को इन मॉडल उत्तरकुंजियों पर कोई आपत्ति हो तो निर्धारित शुल्क के साथ 9 सितंबर से 11 सितंबर 2022 को रात्रि 12 बजे तक अपनी आपत्ति ऑनलाईन दर्ज करवा सकता है।

बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना ने दरगाह में जियारत की

बांग्लादेश की पीएम ने प्रतिनिधिमंडल के साथ चादर चढ़ाकर अकीदत के फूल पेश किए।

अजमेर, (कासं)। बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना ने गुरूवार को महान सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह में चादर चढ़ाई एवं अकीदत के फूल पेश किए। बांग्लादेश प्रधानमंत्री का अजमेर आगमन पर राजस्थानी परम्परा के अनुसार स्वागत किया गया। उनके साथ बांग्लादेश के प्रतिनिधि मंडल ने भी दरगाह में हाजिरी दी। बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना गुरूवार दोपहर सर्किट हाउस पहुंची। यहां संभागीय आयुक्त बीएल मेहरा, पुलिस महानिरीक्षक रूपिन्दर सिंह, जिला कलैक्टर अंशदीप, पुलिस अधीक्षक चूनाराम जाट एवं अन्य अधिकारियों ने उनका स्वागत किया। इसके बाद प्रधानमंत्री ने दरगाह में जियारत की।

दरगाह आगमन पर उनका खादिम सैयद कलीमुद्दीन चिश्ती, नन्हे बच्चों, सैयद मोहम्मद कायम एवं सैयद फरीदा हाशमी ने स्वागत किया। दोनों अंजुमन, दरगाह कमेटी एवं दरगाह दीवान के उत्तराधिकारी सैयद नसीरूद्दीन चिश्ती, सैयद एतमादुद्दीन चिश्ती, गुलाम नजमी फारूकी एवं अन्य ने भी स्वागत किया। उन्हें सिपासनामा एवं आकर्षक चित्र भी भेंट किए गए। प्रतिनिधि मंडल का भी दस्तारबंदी कर स्वागत किया गया। पर्यटन विभाग द्वारा लोक कलाओं के साथ राजस्थानी परम्परा के अनुसार अभिवादन किया गया। प्रसिद्ध नगाड़ा वादक नाथूलाल सोलंकी तथा कच्छी घोड़ी लोक नृत्य की प्रस्तुति सोहन लाल भाट के दल ने दी। दरगाह में जियारत के उपरान्त संभागीय आयुक्त बीएल मेहरा, पुलिस महानिरीक्षक रूपीन्दर सिंघ, जिला कलैक्टर अंश दीप एवं एसपी चुनाराम जाट ने प्रधानमंत्री शेख हसीना को जयपुर के लिए विदा किया।

प्रधानमंत्री हसीना के साथ 60 व्यक्तियों का डेलीगेशन आया। इसमें उच्चायुक्त, मंत्रीगण, उद्योग, व्यवसाय तथा प्रेस से जुड़े व्यक्ति शामिल थे। लिबरेशन एंड वार मामलात मंत्री एके एम मुजमिल हक, रेलवे मंत्री मोहम्मद नरूल इस्लाम सुजान, जल संसाधन मंत्री जहीद फारूखी, आर्थिक एवं वित्त सलाहकार डॉ. मशीउर्र रहमान, विदेश मामलात राज्य मंत्री मोहम्मद सहरयार आलम, वाणिज्य मंत्री टीपू मुंशी, वित्त मामलात सलाहकार सलमान फजलुर, आईसीटी राज्य मंत्री जूनायद अहमद पलक तथा एफबीसीसीआई के पूर्व अध्यक्ष मोहम्मद जसीम उद्दीन, बंगाल ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज के निदेशक जेस्मीन अख्तर, उच्चायुक्त मोहम्मद इमरान एवं विक्रम के. दुरईस्वामी शामिल रहे।

टी.सी. के लिए भटक रहे छात्र व अभिभावक

बहरोड़, (निसं)। बहरोड़ कस्बे में निजी स्कूल संचालकों की दबंगई इस कदर चरम पर है कि उन्हें किसी का भय नहीं है। मनमानी फीस वसूल करना, फीस भुगतान नहीं करने पर टीसी रोक लेना जैसे मामले सामने आ रहे हैं।

ऐसा ही एक मामला तलवाड़ निवासी संदीप यादव का सामने आया है जो पिछले 15 दिन से अपने बेटे धर्मेंद्र की 11वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद टीसी लेने को भटक रहा है। अभिभावक संदीप यादव ने बताया कि स्कूल प्रबंधन को 15 दिन पहले टीसी हेतु प्रार्थना पत्र दिया था। लेकिन स्कूल प्रबंधन का कहना है कि यदि आप हमारे संस्थान में 12वीं करवाएंगे तो तय फीस ली जाएगी यदि आप यहां 12वीं नहीं करवाते तो आपको पैसा बढ़ा कर देना होगा।

संदीप यादव ने बताया तय फीस 22000 साथ में ट्रांसपोर्ट 11वीं कक्षा का बताया गया था जिसे अब स्कूल प्रबंधन 28000 प्लस ट्रांसपोर्ट देने को कह रहे हैं। वह नहीं देने पर टीसी रोक ली व टीसी देने से मना कर दिया। साथ ही कहा कि यह पैसा तुम्हें देना होगा नहीं तो तुम मुख्यमंत्री के पास भी चले जाओ तो भी टीसी नहीं दी जाएगी।

उक्त विषय में जिला शिक्षा अधिकारी अलवर से संपर्क किया गया तो कहा कि मैं बात करता हूं थोड़ी देर के बाद आपको बताता हूं लेकिन 2 घंटे बीत जाने के बाद जब जिला शिक्षा अधिकारी को संपर्क किया तो उन्होंने फोन का जवाब देना उचित नहीं समझा। यूनिक स्कूल संचालक सुमित यादव स्कूल आकर व्यक्तिगत मिलने की बात कही।

'ई-गर्वनेंस फॉर अरबन डवलपमेन्ट' प्रशिक्षण सम्पन्न

जयपुर, (निसं)। हरिश्चन्द्र माथुर लोक प्रशिक्षण संस्थान के शहरी विकास केन्द्र द्वारा आयोजित तीन दिवसीय "ई गर्वनेंस फॉर अरबन डवलपमेन्ट" प्रशिक्षण गुरूवार को कार्यक्रम सम्पन्न हो गया। इसमें 10 विभागों के लगभग 25 अधिकारियों ने भाग लिया और राज्य सरकार की मंशा के अनुरूप ई-गर्वनेंस के माध्यम से कार्य के विस्तार में प्रशिक्षण लिया, जिससे आम लोगों की समस्याओं का तत्काल निराकरण किया जा सके। ई-गर्वनेंस के द्वारा कार्य कर रहे विभिन्न विभागों के विषय विशेषज्ञों ने बताया कि ई-गर्वनेंस के माध्यम से कार्य करना बहुत आसान हो गया है ।

हरीशचन्द्र लोक माथुर प्रशिक्षण संस्थान में शहरी विकास पर विशेषज्ञों ने विचार साझा किए।

हरिश्चन्द्र माथुर लोक प्रशिक्षण संस्थान के महानिदेशक सुधांश पंत के निर्देशन में आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ शहरी विकास केन्द्र के टीम लीडर पूर्व संभागीय आयुक्त अजमेर डॉ. धर्मेन्द्र भटनागर ने किया। कोर्स डायरेक्टर प्रोफेसर रिपुन्जय सिंह ने विश्व, भारत व राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में ई गर्वनेंस के बारे में विस्तार से प्रजेन्टेशन दिया।

प्रशिक्षण के समापन पर सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के पूर्व संयुक्त निदेशक प्यारे मोहन त्रिपाठी ने "ई-गर्वनेंस फॉर अरबन डवलपमेन्ट" में मीडिया की सकारात्मक भूमिका पर विस्तार से जानकारी दी और बताया कि वर्तमान में सोशल, वेब तथा इलेक्ट्रोनिक मीडिया ई गर्वनेंस को आम व्यक्ति तक पंहुचाने में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभा रहे हैं।

शहरी विकास केन्द्र के कन्सलटेन्ट डॉ मंयक वार्ष्णेय व प्रतिभा कौशिक ने भी प्रेजेन्टेशन दिये और सभी प्रतिभागियों को "भामाशाह डाटा सेन्टर" व "भामाशाह टेक्नो हब" का भ्रमण कराकर ई-गर्वनेंस के बारे में प्रेक्टिकल जानकारी दी।

भर्ती परीक्षाओं का संभावित कलेण्डर जारी

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा गुरुवार को विभिन्न परीक्षाओं की संभावित परीक्षा तिथि जारी की गई। आयोग द्वारा आगामी वर्ष के जनवरी से मई माह तक संस्कृत शिक्षा विभाग, माध्यमिक शिक्षा विभाग, महिला अधिकारिता विभाग, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग तथा स्वायत्त शासन विभाग के कुल 1200 विभिन्न पदों की भर्ती परीक्षाओं का आयोजन किया जाना प्रस्तावित है।

आयोग सचिव एचएल अटल ने बताया कि वर्ष 2023 में संस्कृत शिक्षा विभाग में वरिष्ठ अध्यापक ग्रेड-द्वितीय परीक्षा 2022 के तहत 6 विषयों के कुल 538 पदों के लिए माह जनवरी 2023 के द्वितीय सप्ताह में तथा महिला अधिकारिता विभाग में संरक्षण अधिकारी के 4 पदों के लिए चतुर्थ सप्ताह में परीक्षा का आयोजन किया जा सकता है। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में हॉस्पिटल केयर टेकर के 55 पदों के लिए फरवरी 2023 के द्वितीय सप्ताह में तथा ऑक्यूपेशनल थेरेपिस्ट के 24 पदों के लिए मार्च 2023 के द्वितीय सप्ताह में परीक्षाएं आयोजित की जा सकती हैं। माध्यमिक शिक्षा विभाग में वरिष्ठ शारीरिक शिक्षा अध्यापक के 461 पदों के लिए अप्रैल 2023 के चतुर्थ सप्ताह में परीक्षा का आयोजन किया जाना संभावित है। इसी तरह मई 2023 के द्वितीय एवं तृतीय सप्ताह में स्वायत्त शासन विभाग में अधिशाषी अधिकारी वर्ग चतुर्थ के 63 पद, राजस्व अधिकारी ग्रेड-द्वितीय के 14 पद एवं सहायक अभियंता-सिविल के 41 पदों की परीक्षाओं का आयोजन प्रस्तावित है।

आयोग द्वारा पूर्व में जारी किए गए संभावित परीक्षा कार्यक्रमानुसार इस वर्ष अक्टूबर से दिसंबर 2022 तक विभिन्न विभागों के 15862 पदों के लिए परीक्षाओं का आयोजन किया जाएगा। इनमें माध्यमिक शिक्षा विभाग में 26 विषयों के कुल 6000 पदों की स्कूल लेक्चरर परीक्षा 2022 का आयोजन 11 अक्टूबर से 21 अक्टूबर 2022 तथा वरिष्ठ अध्यापक ग्रेड द्वितीय परीक्षा 2022 के तहत 8 विषयों के कुल 9760 पदों के लिए परीक्षा दिनांक 17 दिसम्बर से 24 दिसम्बर 2022 तक आयोजित किया जाना संभावित है।

एएसआई व कांस्टेबल 50 हजार रूपये की रिश्वत लेते गिरफ्तार

डूंगरपुर, (निसं)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो, डूंगरपुर द्वारा गुरूवार को ट्रेप की कार्यवाही करते हुए पुलिस थाना आसपुर मे एक एएसआई और एक कांस्टेबल को 50 हजार रूपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो पुलिस उप अधीक्षक हेरम्ब जोशी ने बताया कि परिवादी प्रवीण कुमार पटेल ने गत 7 सितंबर बुधवार को एसीबी कार्यालय में आकर एक शिकायत दर्ज करवाई थी। शिकायत में उसने बताया था कि उसके और उसके मामा मणिलाल के खिलाफ आसपुर थाने में दर्ज प्रकरणे में एफआर लगाने की एवज में आसपुर थाने के एएसआई सुरेंद्रसिंह पुत्र नाथू सिंह निवासी पीपलादा थाना सदर ने 1 लाख रुपए रिश्वत की मांग की।

एसीबी की गिरफ्त में आरोपी।

वही कांस्टेबल विजयपाल सिंह ने उसके खिलाफ दर्ज प्रकरण संख्या 199/2021 को हल्का करने व राहत देने के बदले में 40 हजार रुपए की मांग कर रहे है। रिश्वत मांगने के मामले का गत 7 सितंबर को सत्यापन करवाया गया। जिसमे एएसआई सुरेंद्रसिंह और कांस्टेबल विजयपाल सिंह ने दोनों मामलों का मिलाकर 1 लाख 30 हजार रुपए की रिश्वत मांगने की पुष्टि की। इसके बाद एसीबी ने गुरुवार को ट्रैप की कार्रवाई के लिए जाल बिछाया। एसीबी ने ट्रैप की कार्रवाई के लिए परिवादी को रूपए लेकर भेजा। परिवादी प्रवीण कुमार ने रिश्वत के रूप में 50 हजार रुपए एएसआई सुरेंद्र सिंह को ले जाकर दे दिए। इशारा मिलते ही एसीबी की टीम मौके पर पहुंच गई। एसीबी ने एएसआई सुरेंद्र सिंह की जेब से रिश्वत के रूप में लिए 50 हजार रुपए बरामद कर लिए। वही कांस्टेबल विजयपाल सिंह को भी रिश्वत मांगने के मामले में गिरफ्तार कर लिया। एसीबी ने कांस्टेबल विजयपाल सिंह के थाने के टेबल की दराज की तलाशी ली तो उसमे किया फाइलें मिली। एसीबी ने उन फाइलो को खंगालना शुरू किया तो उसमे से रुपए निकलने लगे। एसीबी ने फाइलों से संदिग्ध 22 हजार रुपए बरामद किए है।

उपराष्ट्रपति धनखड़ ने सपत्नीक सालासर बालाजी महाराज की पूजा की

मंदिर में एडीजीपी बीजू जॉर्ज जोसेफ, कलेक्टर सिद्धार्थ सिहाग, एसपी दिगंत आनन्द और जयपुर इंटेलिजेंस की टीम मौजूद रही

चूरू, (का.सं.)। सालासर मन्दिर में उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ महावीर पुजारी, मीठनलाल पुजारी, मांगीलाल पुजारी, आत्माराम पुजारी आदि ने उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ सपत्नीक को सालासर दरबार में बालाजी महाराज की पूजा-अर्चना करवाई। इसके बाद मंदिर के सत्संग भवन में उपराष्ट्रपति धनखड़ को सपत्नीक को पुजारी ने श्रीबालाजी महाराज की प्रतिमा भेंट की।

इस अवसर पर मंदिर परिसर में पूर्व जिला प्रमुख हरलाल सहारण, भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष वासुदेव चावला, गोवर्धन सिंह रूकनसर, अख्तर खान, महेन्द्र चन्दूवा, दयानन्द खोखेवाला, नंदलाल सैनी, मांगीलाल गोयल, हरिप्रकाश शर्मा, रामनारायण चौधरी व जितेन्द्र सिंह सिंघानिया आदि ने उप राष्ट्रपति धनखड़ का स्वागत किया। मंदिर में उपनेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़, सांसद राहुल कस्वां, रतनगढ़ विधायक अभिनेष महर्षि, सुजानगढ विधायक मनोज मेघवाल आदि उप राष्ट्रपति के साथ थे। हनुमान सेवा समिति की ओर से अध्यक्ष यशोदानंदन पुजारी, उपाध्यक्ष मनोज पुजारी, प्रकाश पुजारी, गौरीशंकर पुजारी, भंवरलाल पुजारी, संजय पुजारी आदि ने उप राष्ट्रपति का स्वागत किया।

मंदिर में जिला कलेक्टर सिद्धार्थ सिहाग, एडीजीपी बीजू जॉर्ज जोसेफ, एसपी दिगंत आनन्द, जयपुर इंटेलिजेंस एडिशनल एसपी शालिनी अग्रवाल, एडिशनल राजेन्द्र कुमार मीणा व उप निरीक्षक अलका आदि उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के आगमन से पूर्व मंदिर की सुरक्षा का जायजा लिया। इसी प्रकार पर हेलीपैड पर उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की सालासर बालाजी मंदिर यात्रा में उपनेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़, सांसद राहुल कस्वां, पूर्व सांसद रामसिंह कस्वां, सुजानगढ़ विधायक मनोज मेघवाल, रतनगढ़ विधायक अभिनेष महर्षि, जिला प्रमुख वंदना आर्य, पूर्व विधायक खेमाराम मेघवाल, पूर्व विधायक अशोक पिंचा, पूर्व विधायक संजीव बेनीवाल, कुलदीप धनखड़, पूर्व जिला प्रमुख हरलाल सहारण, प्रदेशकार्यकारी सदस्य वासुदेव चावला, भाजपा जिलाध्यक्ष धर्मवीर पुजारी, बलबीर विश्नोई, बसंत शर्मा, प्रधान दीपचन्द राहड़, पंस विक्रम कोटवाद, पूर्व प्रधान अमर सिंह पूनियां, हरिराम गर्ग आदि ने बुके भेंट कर स्वागत किया।

उपराष्ट्रपति धनखड़ और उनकी पत्नी डॉ. सुदेश धनखड़ को सालासर मंदिर के पुजारियों ने विधि-विधान से पूजा अर्चना करवाई।

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने बाबा श्याम के दर्शन किए

खाटूश्यामजी, (निसं)। उपराष्ट्रपति निर्वाचित होने के बाद पहली बार शेखावाटी दौरे पर आए जगदीप धनखड़ गुरुवार ने दोपहर 2.18 बजे श्याम मंदिर पहुंचकर बाबा श्याम के दर्शन कर पूजा अर्चना की तथा देश में खुशहाली की कामना की।

श्री श्याम मंदिर कमेटी के ट्रस्टी प्रताप सिंह चौहान ने उपराष्ट्रपति का तिलकार्चन किया तथा श्याम बाबा की चौखट पर स्वास्तिक बनावाए । वहीं मंदिर कमेटी के अध्यक्ष शंभूसिंह चौहान, कोषाध्यक्ष कालू सिंह चौहान व प्रताप सिंह चौहान ने श्याम दुपट्टा ओढ़ाकर कर व बाबा श्याम की तस्वीर भेंटकर अभिनन्दन किया। इस दौरान राजस्थान सरकार में मंत्री ममता भूपेश, पूर्व जिला प्रमुख रीटा ने भी उपराष्ट्रपति व उनकी पत्नी डॉ सुदेश्र धनखड से शिष्टाचार भेंट की और स्वागत किया।

हेलीपैड पर सीकर सांसद सुमेधानंद सरस्वती, पूर्व राज्यमंत्री बंशीधर बाजिया, जिला महामंत्री प्रभूसिंह गोगावास, चेयरमैन ममता मुण्डोतिया ने गुलदस्ता भेंट कर स्वागत किया। इसके पश्चात सांसद सुमेधानंद सरस्वती ने सभी का परिचय करवाया। वहीं अतिरिक्त संभागीय आयुक्त, आईजी उमेश चंद्र दत्ता, जिला कलेक्टर डॉ अमित यादव, एसपी कुंअर राष्ट्रदीप, एडीएम अनिल महला, एडिशनल एसपी रतन लाल भार्गव, डीवाईएसपी कन्हैयालाल सहित जिले के आला अधिकारियों ने अगवानी की।

उपराष्ट्रपति दर्शन के पश्चात 2 बजकर 44 मिनट पर खाटूश्यामजी से रवाना हो गए। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के खाटूश्यामजी दौरे को लेकर पुलिस, प्रशासन, नगरपालिका सतर्क नजर आई। रींगस रोड से लेकर मंदिर तक के मार्ग को छावनी में तब्दील कर दिया गया और मैन सड़क पर आने वाले रास्तों पर बैरिकेडिंग लगाकर पुलिस बल तैनात किया गया।

कार में बेहोश मिले प्रोपर्टी कारोबारी की मौत, शरीर पर चोट के निशान भी मिले

परिजनों ने हत्या की आशंका जताते हुए मुरलीपुरा थाने में हंगामा किया, समझाइश पर माने

जयपुर (कासं)। सीकर रोड पर बुधवार देर शाम कार में बेहोश मिले प्रॉपर्टी कारोबारी की मौत हो गई। व्यापारी के शरीर पर कई जगह चोट के निशान भी मिले है। मुरलीपुरा पुलिस ने गुरुवार दोपहर मेडिकल बोर्ड से पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सौंप दिया। पुलिस ने एफएसएल टीम की मदद से सबूत जुटाए है।

मृतक के परिजनों ने स्थानीय लोगों के साथ

- **पुलिस ने एफएसएल टीम की मदद से साक्ष्य जुटाये, सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालनी शुरू की**
- **सीकर रोड पर अलका टॉकीज के पीछे स्थित अरोमा बीयर बार के सामने खड़ी कार में बेहोश मिला था मृतक**

मिलकर गुरुवार शाम थाने में हंगामा किया। पुलिस ने मामले की गंभीरता से जांच करने का आश्वासन देकर लोगों से समझाइश की और उन्हें शांत करवाया।

मुरलीपुरा थानाधिकारी देवेन्द्र कुमार ने बताया कि मृतक हनुमान सैनी (44) पुत्र गोपाल लाल सैनी मुरलीपुरा के रहने वाले थे। वह प्रॉपर्टी का कारोबार करते थे। बुधवार शाम करीब 7 बजे सीकर रोड पर अलका टॉकीज के पीछे स्थित अरोमा बीयर बार के सामने खड़ी कार में वह बेहोश की हालत में मिले। बीयर बार के गार्ड से हनुमान ने अपने घर पर कॉल करवाया था। कॉल कर उन्हें खुद को लेने अरोमा बीयर बार आने की कहा। उनका बेटा तनिष (16) वहां पहुंचा तो हनुमान सैनी अपनी कार में बेहोश की हालत में मिले। गंभीर हालत में बेटा उन्हें लेकर प्राइवेट हॉस्पिटल पहुंचा। जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। गुरुवार सुबह प्रॉपर्टी कारोबारी हनुमान सैनी की मौत की सूचना पर मुरलीपुरा थाना पुलिस हॉस्पिटल पहुंची। पुलिस ने कावंटिया हॉस्पिटल में मेडिकल बोर्ड से पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सौंप दिया। पुलिस ने टीम की मदद से कार के अंदर से सबूत जुटाए। शाम करीब 5:30 बजे परिजन 150 से अधिक स्थानीय लोगों के साथ मुरलीपुरा थाने पहुंचे। थाने के बाहर लोगों ने प्रॉपर्टी कारोबारी हनुमान की मौत को लेकर हंगामा किया। परिजनों का कहना है कि हनुमान सैनी के शरीर पर चोट के निशान मिले है। हनुमान की हत्या का अंदेशा जताते हुए परिजनों ने शिकायत दी। पुलिस ने अभी तक कोई कार्रवाई नहीं की। पुलिस ने मामले की गंभीरता से जांच करने का आश्वासन देकर मामले को शांत करवाया। पुलिस ने बताया कि बुधवार दोपहर को हनुमान अरोमा बीयर बार पहुंचे थे। बीयर पीने के बाद पेमेंट कर बाहर आ गए। बाहर खड़ी अपने कार में आकर बैठ गए। बीयर बार के गार्ड ने बताया कि दोपहर भर हनुमान अपनी कार में ही सोते रहे। इस बीच एक बार उसने उन्हें पानी भी पिलाया है। जिसके बाद शाम को हनुमान के कहने पर गार्ड ने अपने मोबाइल से कॉल किया और हनुमान की परिवार के लोगों से बात करवाई।

मृतक के हाथ पर चोट के निशान

प्रोपर्टी कारोबारी के परिजनों और स्थानीय लोगों ने मुरलीपुरा थाने में हंगामा किया।

नवजात बच्चों और प्रसूताओं का डीएनए टेस्ट के लिए सैम्पल लिए

- **सांगानेरी गेट महिला चिकित्सालय में बच्चे बदलने का मामला**
- **डीएनए रिपोर्ट आने के बाद बच्चों के माता-पिता का सही पता चल सकेगा**

जयपुर, (कासं)। राजधानी के के सांगानेरी गेट स्थित महिला चिकित्सालय में सप्ताह भर पहले बच्चे बदलने के मामले में पुलिस ने डीएनए टेस्ट के लिए सैम्पल लिए हैं।

लालकोठी थानाधिकारी सुरेन्द्र सिंह ने बताया कि दोनों पक्षों की मौजूदगी में अस्पताल में दोनों बच्चों और प्रसूताओं के डीएनए टेस्ट के लिए ब्लड के सैम्पल लिए। शुक्रवार को जॉच के लिए इन सैम्पल को एफएसएल लैब भेजा जाएगा। उन्होंने बताया कि मामला नवजात बच्चों का और संवेदनशील होने के कारण एफएसएल से जल्द रिपोर्ट देने के लिए आग्रह किया जाएगा। रिपोर्ट आने के बाद बच्चों के सही माता-पिता का पता चल सकेगा। हॉस्पिटल के डॉक्टर्स का कहना है कि इस तरह का ये पहला मामला है जब इसे सुलझाने के लिए डीएनए टेस्ट करवाया जा रहा है।

गौरतलब है कि एक सितम्बर को जयपुर के घाटगेट निवासी रेशमा और करौली की रहने वाली निशा की डिलीवरी हुई थी। इस दौरान दोनों बच्चों के टैग को लेकर गफलत हो गई और बच्चों की अदला-बदली हो गई। तीन दिन बाद यानि 3 सितम्बर को हॉस्पिटल प्रशासन को अपनी गलती का पता चला तो उन्होंने दोनों बच्चों के परिजनों को इसकी सूचना दी। इस बात पर रेशमा के परिजन आक्रोशित हो गए और उन्होंने बच्ची को लेने से इनकार कर दिया। इस विवाद के बाद दोनों नवजात बच्चों को हॉस्पिटल की नर्सरी में रखा गया और मामले को सुलझाने के लिए 6 डॉक्टर्स की एक कमेटी बनाई गई। इस मामले को सुलझाने के लिए पहले तो हॉस्पिटल प्रशासन ने दोनों बच्चों और दोनों के माता-पिता के ब्लड का सैंपल लेकर उसकी जांच के आधार पर निर्धारित किया कि लड़का निशा का है और लड़की रेशमा की। ब्लड सैंपल की इस रिपोर्ट को रेशमा के परिजनों ने मानने से इनकार कर दिया। उसके बाद जांच कमेटी ने दोबारा ब्लड सैंपल लेकर जांच करवाई, तब भी रिपोर्ट के आधार पर लड़की रेशमा की निकली और लड़का निशा का। हालांकि इस बार भी रेशमा के परिजनों ने बच्ची को अपनाने से मना कर दिया और डीएनए जांच की मांग करने लगे। जांच कमेटी की ब्लड रिपोर्ट आने के बाद भी परिजन तैयार नहीं हुए तो कमेटी ने डीएनए जांच की सिफारिश कर दी। इसे देखते हुए लालकोठी थाना पुलिस को मामला भेज दिया गया। उधर बच्चों को हॉस्पिटल प्रशासन की निगरानी में हॉस्पिटल स्थित नर्सरी में रखा गया है। जहां से दोनों बच्चों को मदर मिल्क बैंक से दूध पिलाया जा रहा है।

पति ने पत्नी को बेरहमी से पीटा, गर्भपात हुआ

जयपुर (कासं)। करधनी इलाके में एक गर्भवती विवाहिता की उसके पति ने बेरहमी से पिटाई कर दी। मारपीट के चलते गर्भ का मिसकेरेज हो गया और 5 दिन तक लगातार खून रिस्ता रहा। इतना ही नहीं दर्द से तड़पती विवाहिता को हॉस्पिटल में भी भर्ती नहीं करवाया गया। बुधवार को पडौसियों ने पीड़िता को हॉस्पिटल पहुंचाया। मेडिकल सूचना पर पहुंची करधनी थाना पुलिस ने पीड़िता के पर्चा बयानों के आधार पर मामला दर्ज किया। थानाधिकारी बनवारी लाल मीणा ने बताया कि करधनी निवासी 25 वर्षीय महिला का जनाना हॉस्पिटल में इलाज चल रहा है। बुधवार रात को जनाना हॉस्पिटल से करधनी थाने को मेडिकल सूचना भेजी गई। सूचना पर पहुंची करधनी थाना पुलिस ने पीड़िता का पर्चा बयान लिया। पर्चा बयान में पीड़िता ने बताया कि कुछ महीने पहले ही उसकी शादी करधनी निवासी युवक से हुई थी। वह चार महीने की गर्भवती थी। पांच दिन पहले मामूली बात को लेकर पति ने उसकी पिटाई कर दी। बेहरमी से पिटाई से उसका गर्भपात (मिसकेरेज) हो गया। पति ने उसको हॉस्पिटल में भर्ती नहीं करवाया। सास-ससुर पर भी बेटे का साथ देने का आरोप लगाया है।

निर्मल शुक्ला पंचतत्व में विलीन

जयपुर। प्राकृतिक चिकित्सालय प्रबंध समिति बापू नगर, जयपुर के पूर्व अध्यक्ष निर्मल शुक्ला का गुरूवार सुबह निधन हो गया। वे पिछले डेढ़ साल से बीमार थे और राजस्थान अस्पताल जयपुर के डॉक्टर्स से उपचार ले रहे थे। गुरूवार सुबह उन्होंने अस्पताल में ही आखिरी सांस ली। गमगीन माहौल के बीच मानसरोवर में शिप्रापथ स्थित मोक्षधाम में उनका अंतिम संस्कार हुआ। जहां उनके बड़े भाई अनिल शुक्ला ने मुखाग्नि दी। वे अपने पीछे छोटे भाई डॉ. अखिल शुक्ला, बेटी मैत्रेयी समेत भरा-पूरा परिवार छोड़कर गए है। स्व. निर्मल शुक्ला कानोडिया कॉलेज की प्रबंध समिति के चेयरमैन भी रहे। उन्होंने जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड में सराहनीय सेवाएं दी और वे उपसचिव पद से सेवानिवृत हुए थे। वे विपश्यना साधक और मोटिवेशनल स्पीकर थे। स्व. निर्मल शुक्ला हिंदी प्रचार-प्रचार संस्थान के संरक्षक तथा राजस्थान हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के सदस्य भी रहे।

दर्शकों ने अहिंसा का महत्व समझा

जयपुर। जवाहर कला केंद्र में गुरूवार को डॉली व्यास आहूजा की डाक्यूमेंट्री द लैंड ऑफ अहिंसा की स्क्रीनिंग और परीन सचदेवा द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। यह डॉक्यूमेंट्री भारत के 16 शहरों में 11 अगस्त से 11 सितंबर तक दिखाई जा रही है। द लैंड ऑफ अहिंसा पहली फीचर डॉक्यूमेंट्री है जो अहिंसा की उत्पत्ति की यात्रा को समझने पर आधारित है। इसमें पर्यावरण, पोषण, आध्यात्मिकता व वकालत के विशेषज्ञों को दिखाया गया है, जिन्होंने भारत में अहिंसा के महत्व को इस उदेश्य के साथ दर्शाया कि इसकी गूंज दुनिया भर में हो। डॉक्यूमेंट्री स्वतंत्रता सेनानी छगनलाल जोशी की पोती डॉली व्यास आहूजा का अहिंसा को लेकर नजरिए पर केंद्रित है।

क्रिकेट मैच पर सट्टा लगा रहे चार आरोपी गिरफ्तार

- **प्रताप नगर पुलिस ने यूनिक टावर के फ्लैट में दबिश देकर पकड़ा**
- **आरोपियों से 27 मोबाइल, 4 लैपटॉप और 9120 रु. जब्त**

जयपुर (कासं)। प्रताप नगर थाना पुलिस ने इलाके स्थित फ़्लैट में दबिश देकर क्रिकेट मैच पर सट्टा पकड़ा है। पुलिस ने चार आरोपियों को गिरफ्तार कर मौके से 27 मोबाइल, 4 लैपटॉप, 1 टैबलेट सहित 9120 रूपए की नकदी जब्त की है।

थानाधिकारी भजन लाल ने बताया इलाके स्थित यूनिक टावर में फ़्लैट में क्रिकेट मैच पर सट्टा लगाने की सूचना पर पुलिस ने दबिश मारी थी, जहाँ चार जने फोन पर सट्टा खिलवा रहे थे। इस पर पुलिस ने आरोपित मुकेश बेदी (38) निवासी हनुमानगढ़, राहुल कुमार (22) निवासी गंगानगर, समीर (40) निवासी मुंबई और भटिंडा निवासी पुनीत छाबड़ा (38) को गिरफ्तार कर लिया। वहीं मौके से 27 मोबाइल, 4 लैपटॉप, 1 टैबलेट सहित 9120 रूपए की नकदी जब्त की गई है।

सार-समाचार

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ का स्वागत

जयपुर (कासं)। भारत के उपराष्ट्रपति बनने के बाद पहली बार राजस्थान आए जगदीप धनखड़ का जयपुर में बार कौंसिल ऑफ राजस्थान की ओर से सम्मान किया गया। गुरूवार को मानसरोवर स्थित शिप्रापथ मॉर्डन स्कूल में आयोजित समारोह में कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश एम.एम. श्रीवास्तव, जस्टिस पंकज भंडारी, जस्टिस अशोक कुमार गौड़, जस्टिस विनोद कुमार भारवानी, जस्टिस इंद्रजीत सिंह, जस्टिस उमाशंकर व्यास, जस्टिस सुदेश बंसल, जस्टिस सीके सोनगरा, हाईकोर्ट रजिस्ट्रार जनरल एसपी काकड़ा, पीपीएस बृजेंद्र कुमार जैन, हाईकोर्ट रजिस्ट्रार प्रशासन भारत भूषण गुप्ता समेत बड़ी संख्या में जज एवं अधिवक्ता मौजूद रहे। ज्ञात रहे कि उपराष्ट्रपति धनखड़ भी नामचीन वकील रह चुके है। ऐसे में उनके राष्ट्रपति बनने से अधिवक्ताओं में काफी खुशी है। समारोह की शुरूआत में कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश एमएम श्रीवास्तव ने साफ पहनाकर उपराष्ट्रपति धनखड़ का स्वागत किया। साथ ही आरडी रस्तोगी ने पुष्पगुच्छ भेंट किया। बार कौंसिल के अध्यक्ष सुनील बेनीवाल और हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष भुवनेश शर्मा ने भी उन्हें बुके भेंट किया। कार्यक्रम में राजस्थान उच्च न्यायालय के अधिवक्ता रुपिन के. काला ने लेबर लॉ एसोसिएशन ऑफ राजस्थान जयपुर की ओर से पुष्पगुच्छ भेंट कर उपराष्ट्रपति का स्वागत किया। जगदीप धनखड़ बातों में उनके पूर्व रहे साथी वरिष्ठ अधिवक्ता स्व. राजकुमार काला को याद किया और रूपिन काला को उनके पदचिन्हों पर चलने का आर्शीवाद दिया। उपराष्ट्रपति ने रुपिन काला से उनकी वकालत के संबंध में भी चर्चा की।

पत्रकार कॉलोनी में फायरिंग से हड़कंप

जयपुर (कासं)। मुहाना इलाके में गुरुवार शाम सट्टे के विवाद को लेकर दो पक्ष आपस में भिड़ गए। दोनों एक दुसरे पर लाठी-डंडों से हमला किया और गाड़ी में तोड़फोड़ की गई। इस दौरान एयरगन से फायरिंग भी की गई। थानाधिकारी लखन सिंह खटाना ने बताया मानसरोवर निवासी जयवर्धन और टीटू उर्फ गौरव गुप्ता के बीच सट्टा कारोबार को लेकर विवाद चल रहा है। गुरुवार शाम को दोनों के बीच आपस में बैठकर विवाद हल करने को लेकर फोन पर बात हुई थी। इस दौरान जयवर्धन ने किसी अन्य दिन बात करने की बात कही। इस पर टीटू दो गाडियों में अपने साथियों सहित जयवर्धन का पीछा करता हुआ पत्रकार कॉलोनी में जा पहुंचा, जहां मेन रोड पर टीटू और उसके साथियों ने जयवर्धन को रुकवा लिया और उसकी गाड़ी पर लाठी डंडो डंडो हमला कर दिया। जयवर्धन ने गाड़ी में रखी एयरगन से फायर किया तो मामला और बढ़ गया। इसके बाद टीटू और उसके साथियों ने जयवर्धन और उसके दो साथियों से मारपीट शुरू कर दी। जय वर्धन साथी गजेंद्र राजपूत और प्रभु गुर्जर मौके से भाग गए। इसके बाद जयवर्धन से जमकर मारपीट कर दी गई। हमले में उसके सिर और पैरों में चोट आई है। पुलिस के पहुंचने से पहले हमलावर मौके से फरार हो गए। पुलिस ने जयवर्धन को धवंतरि अस्पताल में भर्ती करवाकर परचा बयान के आधार पर मुकदमा दर्ज किया है, जबकि उसके दो साथी गजेंद्र और प्रभु को डिटेन किया गया है।

राहगीरों से मोबाइल छीनने वाला दबोचा

जयपुर (कासं)। मुरलीपुरा थाना पुलिस ने राहगीरों से मोबाइल लूटने वाले सहित एक खरीददार को गिरफ्तार कर उनके पास से तीन एंड्रॉयड मोबाइल और एक बाइक बरामद की है। थानाधिकारी देवेंद्र जाखड़ ने बताया शातिर बदमाश चेतन सैनी उर्फ लाल निवासी नाहरी का नाका संजय सर्किल सहित लूट का मोबाइल खरीदने वाले आकाश कुमार निवासी खंडेला जिला सीकर हाल करधनी को गिरफ्तार किया है। आरोपित चेतन सैनी शातिर प्रवृति का अपराधी है और जो पूर्व में भी कई मामलों में चालान शुदा है। साथ ही नशा करने का आदि है। वहीं कोतवाली थाना पुलिस ने दो मोबाइल चोरों को गिरफ्तार किया है। थानाधिकारी ओमप्रकाश मातवा ने बताया कि मोबाइल चोर मोहम्मद नासिर उर्फ मिठू निवासी सिंदोली जिला गया बिहार हाल संजय सर्किल रोड और मोहम्मद गुलजार निवासी चाकन्द जिला गया बिहार हाल गलता गेट को गिरफ्तार कर उनके पास से तीन मोबाइल बरामद किए गए है।

कावा रेस्टोरेंट पर पुलिस की छापेमारी

जयपुर (कासं)। विधायकपुरी थाना पुलिस ने रेस्टोरेंट की आड़ में चल रहे हुक्का बार पर छापेमार कार्रवाई को अंजाम दिया है। थानाधिकारी राजेश गौतम ने बताया इलाके स्थित कावा रेस्टोरेंट कॉरपोरेट पार्क की आठवी मंजिल पर रेस्टोरेंट की आड़ में हुक्का बार चल रहा था। पुलिसकर्मी को बोगस ठााहक बना कर मौके पर भेजा गया, जहां कांस्टेबल का इशारा मिलते ही दबिश दी गई। मौके पर पांच व्यक्ति हुक्का पीते हुए मिलने पर कोटपा एक्ट में चालान किया गया। वहीं बिना लाइसेंस के हुक्का पिला रहे बार संचालक युवराज नेहरा (23) निवासी सालासर जिला चूरू को गिरफ्तार किया है। मौके से कई हुक्के, चिलम, पाइप, कटोरी व फ्लेवर जब्त किया है।

दो वाहन चोर गिरफ्तार

जयपुर। खोह नागोरियान थाना पुलिस ने दो वाहन चोरों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से चुराई गई दो बाइक जब्त की है। थानाधिकारी मनोहर लाल ने बताया कि शातिर वाहन चोर इमरान उर्फ इरफान (25) निवासी दिल्ली रोड गलता गेट और शंकर (19) निवासी कानोता को गिरफ्तार किया गया है। पूछताछ में आरोपियों ने कई वारदातों को खुलासा किया है, जिसकी जांच पड़ताल की जा रही है।

घर से जेवर-नकदी लेकर फरार हुई दुल्हन

- **लड़की के परिजनों व रिश्तेदारों ने शादी के नाम पर ढाई लाख रुपये ऐंठे**

जयपुर (कासं)। सांगानेर इलाके में गहने और नकदी लेकर लुटेरी दुल्हन के फरार होने का मामला सामने आया है। शादी के ढाई महीने के दौरान लुटेरी दुल्हन सिर्फ एक महिना ससुराल में रुकी। शादी के नाम पर पहले 2.50 लाख ऐंठने के बाद मौका मिलते ही रात में नकदी-जेवर समेटकर फरार हो गई। सांगानेर थाने में पीड़ित ने लुटेरी दुल्हन सहित अपने रिश्तेदारों के खिलाफ मामला दर्ज करवाया है।

सांगानेर थाने में सेक्टर-3 सांगानेर निवासी 45 साल के व्यक्ति ने मामला दर्ज करवाया है। उसने लुटेरी दुल्हन रितामणी और रिश्तेदार राधामोहन शर्मा, बलराम शर्मा सहित 4-5 लोगों के खिलाफ रुपए हड़पने के लिए प्लानिंग कर अंजाम देने का आरोप लगाते हुए रिपोर्ट दर्ज करवाई है। रिपोर्ट में बताया कि 10 मई 2022 को रिश्तेदार बौली सवाईमाधोपुर निवासी राधामोहन शर्मा और निवाई टोंक निवासी बलराम शर्मा उसके पास आए। बातचीत के दौरान राधामोहन शर्मा ने बताया कि उसके ससुराल असाम में रिश्तेदारी में एक लड़की है। जिसकी जयपुर में लड़का देखकर शादी करने की ससुराल वाले कह रहे है। हम तुम्हारी शादी उससे करवा देते है। लड़की के मां-बाप गरीब हैं, शादी का खर्चा उठाना पड़ेगा।

परिवार से बात होने पर तीन-चार दिन बाद लड़की और उसकी फैमिली को बुलाकर आपस में मिलवा दिया। लड़की से बातचीत पर अपना नाम रितामणी उर्फ पूजा उर्फ पायल होना बताया। लड़की पसंद होने पर शादी की बात स्टार्ट की। आसाम से जयपुर आकर शादी की बात तय हुई। आसाम से लड़की के रिश्तेदारों के आने-जाने के खर्च के नाम पर 50 हजार रुपए ले लिए। लग्न दस्तूर की कहकर दोबारा 50 हजार रुपए ले लिए। 26 मई को शादी जयपुर के देहलावास बालाजी मंदिर में रखी गई। मंदिर में शादी का कार्यक्रम और खाने की व्यवस्था की गई थी।शादी के चलते फंक्शन में लड़की के परिजनों ने पहले डेढ़ लाख रुपए मांगे। रुपए नहीं देने पर लड़की के मां-बाप ने शादी करवाने से ही इनकार कर दिया। जबकि शादी में केवल खर्च की बात तय थी, फिर भी डेढ़ लाख की मांग पर अड़ गए। शादी की पूरी तैयारी और समाज में बदनामी के डर के कारण पैसे दे दिए। शादी के 10-11 दिन तक उसके साथ घर पर रही। उसके बाद रितामणी अपने पीहर आसाम माता-पिता से मिलने की जिद करने लगी। परिवार वालों से मिलने जाएगी कहकर आरोपी राधामोहन ने रितामणी को खर्चा देने की कहा। इस दौरान 15 हजार रुपए खर्च के लेकर 7 जून को रिश्तेदारों के साथ चली गई। रिश्तेदार उसे फिर 27 जून को रितामणी को वापस सांगानेर छोड़कर गए। पीड़ित ने रिपोर्ट में बताया कि राजस्थान में जन आधार के लिए जब उसने आईडी मांगी तो वह टालमटोल करने लगी। 13 अगस्त की रात को 25 हजार रुपए, सोने-चांदी के गहने और कपड़े लेकर फरार हो गई।

वैशाली नगर में पांच मंजिला इमारत सील

जयपुर। जेडीए की प्रवर्तन शाखा ने गुरुवार को वैशाली नगर, सिरसी रोड और मुरलीपुरा में कार्रवाई की। वैशाली नगर में पांच मंजिला इमारत को सील कर दिया। यहां भूखंड संख्या बी-215 में जीरो सैटबेक पर पांच मंजिला व्यावसायिक बिल्डिंग बनाई जा रही थी। प्रवर्तन शाखा के मुख्य नियंत्रक रघुवीर सैनी ने बताया कि 28 अगस्त को नोटिस जारी कर निर्माण कार्य रुकवाने और अवैध निर्माण हटाने का नोटिस दिया था। कार्रवाई के दौरान इमारत के प्रवेश और निकास द्वारों पर ईंटों की दीवार खड़ी कर सील लगा दी गई। इसके अलावा जोन 6 में मुरलीपुरा के शंकर नगर में 333.33 वर्ग गज में चार मंजिला इमारत सील की। इससे पहले जेडीए ने नोटिस दिया था, लेकिन निर्माण कार्य चालू रहा। सिरसी रोड, सिवार मोड़ स्थित अंशिका विहार में अवैध रूप से 10 विला बना लिए थे। जुलाई में पहली बार नोटिस दिया था, लेकिन बिल्डर की मनमानी जारी रही।

दीनानाथजी की गली में नकली ड्राई फ्रूट्स जब्त

- **सीआईडी पुलिस व सीएमएचओ टीम ने बालाजी ट्रेडर्स और महेश ट्रेडर्स पर छापा मारकर कार्रवाई की**

जयपुर (कासं)। सीआईडी क्राइम ब्रांच और सीएमएचओ की टीम ने चांदपोल बाजार स्थित दीनानाथ जी की गली के ड्राई फ्रूट्स मार्केट में संचालित दो दुकानों पर दबिश देकर भारी मात्रा में अनुपयोगी व अन्य पदार्थों से मिश्रित नकली ड्राई फ्रूट्स जब्त किए हैं। दोनों दुकानों से अनुपयोगी व मिश्रित 88 किलो बादाम की कतरन में 22 किलो की पिस्ता की कतरन जब्त की गई है। इस कार्रवाई में नाहरगढ़ थाना पुलिस का भी सहयोग लिया गया।

एडीजी क्राइम डॉ. रवि प्रकाश ने बताया कि शहर में नकली ड्राई फ्रूटस बेचने के बारे में मुखबिर से सूचना मिली थी। इस पर डीएसपी पुष्पेंद्र सिंह राठौड़ के सुपरविजन में एक टीम भेजी गई। टीम ने सीएमएचओ प्रथम डॉ. विजय सिंह फौजदार और खाद्य सुरक्षा अधिकारी नरेश कुमार के साथ मिलकर नाहरगढ़ पुलिस के सहयोग से दीनानाथ जी की गली के ड्राई फ्रूट्स मार्केट में स्थित बालाजी ट्रेडर्स एवं महेश ट्रेडर्स नाम की दो दुकानों पर दबिश दी। दोनों दुकानों की तलाशी में 88 किलो मिश्रित व अनुपयोगी बादाम की कतरन एवं 22 किलो मिश्रित एवं अनुपयोगी पिस्ता कतरन मिली। जिसे सीएमएचओ टीम ने जब्त किया। संपूर्ण कार्रवाई में हैड कांस्टेबल शाहिद अली व कॉन्स्टेबल रविंद्र सिंह की अहम भूमिका रही है। इस कार्रवाई में राम सिंह नाथावत व शिवदास मीणा, एएसआई दुष्यंत सिंह, हेड कांस्टेबल शाहिद अली व शंकर दयाल शर्मा, कांस्टेबल रविंद्र सिंह, कृष्ण गोपाल, करणी सिंह एवं सोहन देव शामिल थे।

26 लाख का फ्लैट 15.70 लाख की कीमत में पाकर टीचर्स और पुलिसकर्मियों के चेहरे खिले

प्रताप नगर में शिक्षक-प्रहरी योजना के नाम से हाऊसिंग बोर्ड ने बनाये हैं 576 फ्लैट्स

जयपुर (कासं)। राजस्थान के सरकारी टीचर्स और पुलिस के जवानों के लिए बनी 576 फ्लैट्स की स्कीम का गुरूवार को राजस्थान हाउसिंग बोर्ड ने कब्जा सौंपा। करीब 26 लाख रुपए की कीमत वाले फ्लैट्स 15.70 लाख रुपए में पाकर सभी के चेहरे खिले नजर आए। यूडीएच मंत्री शांति धारीवाल, शिक्षा मंत्री बी.डी.कल्ला, गृह राज्य मंत्री राजेन्द्र सिंह गहलोत और आवासन आयुक्त पवन अरोड़ा ने 14 आवंटियों को फ्लैट्स की चाबियां और कब्जा पत्र सौंपा। बगरू विधायक गंगा देवी और यूडीएच प्रमुख शासन सचिव कुंजीलाल मीणा भी समारोह में मौजूद रहे।

आवासन आयुक्त पवन अरोड़ा ने बताया कि ये प्रदेश का पहला ऐसा प्रोजेक्ट हैं, जिसमें आवासीय सुविधा के अलावा स्वीमिंग पूल, सिंथेटिक बास्केटबॉल कोर्ट और 1000 मीटर का जॉगिंग ट्रेक है। जयपुर के प्रताप नगर में मुख्यमंत्री शिक्षक एवं प्रहरी आवासीय योजना नाम से बनाई इस स्कीम में 13 मंजिला 6 टॉवर बनाए हैं। हर टॉवर में 96 फ्लैट बने है।

मंत्री शांति धारीवाल, बी.डी.कल्ला और राजेन्द्र सिंह गहलोत ने आवंटितों को उनके फ्लैट की चाबियां सौंपी। इस मौके पर बगरू विधायक गंगा देवी, यूडीएच प्रमुख सचिव कुंजीलाल मीणा और आवासन आयुक्त पवन अरोड़ा भी मौजूद थे।

मंत्री शांति धारीवाल ने बताया कि ये पहला ऐसा मल्टी स्टोरी हाउसिंग प्रोजेक्ट है, जो कि 2 साल के रिकॉर्ड समय में पूरा हुआ है। इसके पीछे हाऊसिंग बोर्ड कमिश्नर पवन अरोड़ा और उनकी टीम की कड़ी मेहनत नजर आती है। उन्होंने खुद माना कि जिस तरह के फ्लैट्स बने हैं, ऐसे बाजार में 30 लाख रुपए से कम में नहीं मिलते। हाउसिंग बोर्ड को भी प्रत्येक फ्लैट को बनाने में करीब 26 लाख रुपए की कॉस्ट आई है। जबकि इन फ्लैट्स को बोर्ड ने रियायती दर 15 लाख 70 हजार रुपए में आवंटित किए है।

- **यह आवास योजना प्रदेश का पहला ऐसा सरकारी प्रोजेक्ट हैं, जिसमें स्वीमिंग पूल, सिंथेटिक बास्केटबॉल कोर्ट और 1000 मीटर का जॉगिंग ट्रेक जैसी सुविधाएं मिलेंगी : पवन अरोड़ा**

इस प्रोजेक्ट में बेसमेंट पार्किंग, स्वीमिंग पूल विद चेंजिंग रूम, सभी 6 ब्लॉक में ग्रीन एरिया, सिंथेटिक बास्केटबॉल कोर्ट, सीसीटीवी विद सर्विलांस, 24 घंटे वॉटर सप्लाई, पावर सप्लाई के लिए डेडीकेटेड फीडर, पावर बैकअप के लिए डीजी सैट, हर ब्लॉक में दो लिफ्ट (एक स्ट्रेचर लिफ्ट), हर टॉवर में विजिटर लाउंज, बर्थडे पार्टी, किटी पार्टी व सामाजिक आयोजन के लिए हर टॉवर में कम्यूनिटी स्पेसिंग भी दिया गया है।

शहरी रोजगार गारंटी योजना आज होगी लांच

जयपुर (कासं)। इंदिरा गांधी शहरी रोजगार गारंटी योजना 9 सितंबर से शुरू होगी। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत शुक्रवार सुबह 10.30 बजे आगरा रोड स्थित खानियां की बावड़ी के जीर्णोद्धार कार्य का शुभारंभ कर योजना की शुरुआत करेंगे। इसके बाद घाट की गूणी टनल के पास बने अम्बेडकर भवन पर सभा को संबोधित करेंगे। योजना के तहत राजस्थान के 213 शहरी निकाय क्षेत्रों में निवास करने वाले परिवारों को हर साल 100 दिन रोजगार उपलध कराने के लिए राज्य सरकार 800 करोड़ रुपये खर्च करेगी। इसे देश की इस तरह की सबसे बड़ी रोजगार गारंटी योजना बताया जा रहा है। योजना में जन-आधार कार्ड धारक परिवार आवेदन कर सकता है। अभी तक 2.25 लाख से अधिक परिवार पंजीकृत हो चुके हैं। स्वायत शासन विभाग ने इन परिवारों के सदस्यों को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए कुल 9,593 कार्य चिन्हित किए है। रोजगार की मांग के लिए आवेदनकर्ता ई-मित्र से आवेदन कर सकता है। रोजगार आवेदनकर्ता परिवार के नगर निकाय क्षेत्र की सीमा के किसी भी वार्ड में उपलब्ध कराया जाएगा।

International Sudoku Day

No one can explain exactly why Sudoku has become so popular all around the world, but some people think it has to do with the human's innate desire to find order from chaos. In addition, when a person is able to finish a Sudoku puzzle, it offers a sense of accomplishment and productivity. It makes a person feel like a winner. And they are!In 2013, International Sudoku Day was founded by the World Puzzle Federation to pay heed to this unique, challenging and somewhat addictive game.

#TRAVEL

Most Offbeat Places in South India

In case you have already explored most of India and are in search for that secret gem in the Southern part of India, then here are a list of offbeat places in South India.

Gandikota.

Have you been to South India yet? If yes, you must have ticked off all the tourist hotspots, and must be thinking what more this part of the country has to offer. So here is the list of most offbeat places in South India that you need to bookmark, and visit during your next trip.

Skandagiri Hills

Known for being a paradise for trekkers, it's an ancient mountain fortress located around 3 km from Chikkballapur. It can be best explored in a day trip from Bengaluru. As you reach the place, embark on a 2-hour easy trek up a well-marked route on the 1350 m high peak. And as you reach the top, you are rewarded with some gorgeous views around, and not to forget, some fresh air.

ArakuValley

If you have been seeking a relaxed vacation for a long time, Araku Valley should be the ideal place where you get to romance the beauty of Eastern Ghats. Undoubtedly an absolute stunner, this place sees less crowds, and is yet to become touristy. If possible, plan your visit to this place during winters, when it turns more pleasant and beautiful than you can imagine.

Belum Caves

It's the longest cave system in India that is open to tourists. Belum caves are also the second largest in the Indian subcontinent, which has been formed in black limestone, and features spacious chambers, long passages, and freshwater galleries. There are some spots where the caves go as deep as 46 m, and there are around 16 different pathways, including the main entrance.

Belum Caves.

Dhanushkodi, Tamil Nadu

Not frequented by a lot of visitors, you are sure that Dhanushkodi will give you all the serene ambience and space that you need. Make sure you hit the roads, as the best way to explore this beautiful offbeat destination is via road. Mark the Dhanushkodi Beach in your itinerary, and you will not regret it.

Hogenakkal Falls

Also referred to as the Niagara Fall of India at times, this place is a true beauty! The very view of the water falling on the rocks, which seems like emanating smoke from the top of the rock due to the force of water, is just unbelievable. You can spend hours of your precious time here, and let time slip by, as you appreciate the beauty around.

Ponmudi Hills

The serene ambience of this place will instantly soothe your senses and keep you hooked for some time. This place boasts of a scenic location that manages to catch the attention of every kind of traveller. Since it's offbeat and one of the less-explored hill destinations in South India, you can expect less crowd and get all the space that you want. When here, spend time admiring the gushing water streams, exploring beautiful hilltop spots, and much more.

Athirapally Falls

Do you remember watching the breathtaking waterfall in the blockbuster movie Bahubali? If yes, you should visit the Athirapally waterfalls, where the said scene was shot. Flowing from a height of around 80 ft, then breaking into numerous parallel streams, it's a sight to behold. It's the largest waterfall in South India, and the flow of water during the monsoon season is at its peak. Make sure you bring a set of extra clothes or a raincoat, as you might get drenched due to the splashing waterfalls.

Gandikota

The beauty of Gandikota is just magical! In other words, very few sights in India can match the grandeur of this place. You can hike all the way up to the top to the gorge to witness the spectacular beauty of the area. It's India's own Grand Canyon that is vast in size, and features landscapes that are way more dramatic than you can imagine. Over the years, it managed to gain momentum in the tourism circuit, and deserves a visit at least once.

Hogenakkal Falls.

Thank God! There is Talk Journalism

Talk Journalism, an event which was recently held at Clark's Amer Hotel did not have jostling crowds like JLF. It did not have people vying for attention from their favourite celebrity or attending the sessions for merely showing off their presence on the social media. Yet it was way more interesting and engaging. It was more of a melting pot of ideas, where journalists and journalism students met and shared their stories and lives. It was a forum where journalists talked about themselves and their craft more than the world events or lives of other people.

Asaduddin Owaisi, CP Joshi, communist leader D Raja with Rajdeep Sardesai at a session in Talk Journalism.

Shailaza Singh
Published author, poet and a YouTuber

#PONDER

Who are really journalists? Are they people who merely hound celebrities or are they people who report events, happenings and keep an eye on what is going on in the world? Every time that I have attended the Jaipur Literature Festival or many other such events as a journalist, I have felt like an intruder or a 'hounder' of celebrities and other speakers. The moment one tries to speak to a guest at the festival or a known person, a zealous PR person steps up from nowhere and almost chases the person away. But since one has a deadline to meet and an article or a story to deliver, it becomes a saga of constant cajoling and pleading to get that interview, that teeny weeny byte, that small little quote which when given feels like a big favour from a big celebrity in Jaipur, who quite paradoxically is mostly seen wandering alone and unnoticed in cities like Mumbai or Delhi or their own abode.

Men in Black

So, this time when one walked down the lane that led to the Clark's Amer Hotel for 'Talk Journalism', a recently held event, I was all set to deal with the zealous PRs again. It was common knowledge that celebrities like Sachin Pilot, Barkha Dutt, Rajdeep Sardesai, Sagarika Ghose would be attending the event. However, I saw no 'men or women in black' around the venue. 'Maybe they were invisible somewhere and will only appear when I approach a celebrity,' I thought. I made a mental note to keep a watch out for them as I made my way to the hall where the sessions were underway.

With Their Own Tribe

Unlike the multiple venues of JLF, Talk Journalism had only two venues- a hall on the ground floor and another one in the basement. Life was quite easy as one did not have to rush from one venue to the next or deal with the madding crowd on the way. Whether it was about Sachin Pilot discussing his destiny and politics with Rahul Shrivastava, national affairs editor, India Today TV or various workshops about fact checking or distinguishing real news from fake news, the halls were filled with students and spectators who were hanging on to every word. When Rajdeep Sardesai took over the stage, it was not a glamour stricken, unruly celebrity-mad crowd that was listening to him. Instead, the audience mostly comprised of their own tribe- journalists, budding and veterans both.

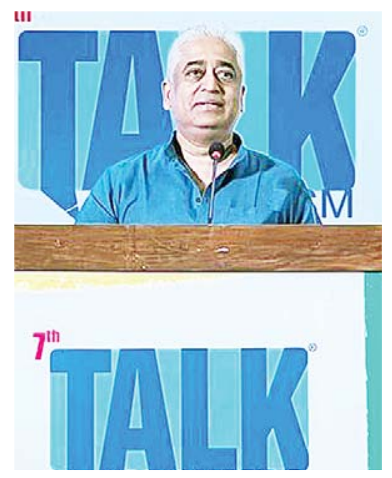

Rajdeep Sardesai addressing the audience.

Manish Kumar discussing media censorship in Bihar.

Sagarika Ghose discussing her book on Atal Bihari Vajpayee.

Varied Discussions

The discussions were also very varied. While on one hand, some speakers like Hyderabad MP and All India Majlis-e-Ittehad-ul Muslimeen (AIMIM) chief Asaduddin Owaisi tried to transform Talk Journalism into a political arena and announced his intentions of coming to power in Rajasthan, on the other hand BJP state president for Rajasthan, Satish Poonia sparked off a new discussion when he said that politicians should retire at the age of 60. He cited Nanaji Deshmukh who had stated that politicians should retire at the age of 65. This statement was quite interesting since the audience, especially the students then started asking if stalwarts like Prime Minister Narendra Modi, Vasundhara Raje Scindia, Ashok Gehlot, chief minister of Rajasthan will give up the power play and embrace retirement that easily.

> In yet another session, well known political biographer and author Sankarshan Thakur educated the audience about the dangers of journalism and told them not to be swayed by glamour or power or money even if their friends succumb to it.

Later, a thought-provoking discussion ensued between Meenal Baghel, executive editor, Hindustan Times, Naresh Fernandez, editor, The Scroll and Mukesh Mathur, state editor, Dainik Bhaskar Corporation where they talked about how people showed their dedication and zeal to their respective news organizations during the pandemic. Mukesh Mathur was quite matter of fact when he said, 'The newsrooms were always on during the pandemic. Journalists fell sick during the pandemic, rested, recovered and came back to their jobs. For us, it was business as usual in the sense that the newsrooms never stopped working.'

In fact, in a session with Barkha Dutt, a student from the Christ University, Bangalore (there was a whole batch which attended), got overwhelmed and started weeping tears of joy on meeting her idol in person. Barkha Dutt, who was having a very interactive session with her audience went to her and hugged her to console her. I wonder if JLF ever witnessed such a moment?

In yet another session, well known political biographer and author Sankarshan Thakur educated the audience about the dangers of journalism and told them not to be swayed by glamour or power or money even if their friends succumb to it. He said that these days the trend is that a politician becomes friends with the journalist and bestows him with so many favours that the journalist despite knowing the stark truth of the politician cannot write the truth. He talked about how 'being friendly' with someone is different than 'being friend's' with someone. He cautioned them to accept favours and advised them to ask the right questions before taking any decisions.

On a lighter note, journalist Sagarika Ghose read out excerpts from her new biography on former Prime Minister Atal Bihari Vajpayee titled 'Atal Bihari Vajpayee- India's most loved Prime Minister', as she conversed with Naveen Choudhary about the former's poetic personality. She talked about how despite being a Rashtriya Swayamsevak, Vajpayee had no qualms about drinking whisky or eating meat. The members of the audience were quite amused when she discussed how Vajpayee even in his heydays led a Bohemian lifestyle and openly acknowledged his relationship with Rajkumari Kaul, a married woman who lived with her husband in Vajpayee's residence. It was interesting that these controversial stories have been given in the book with such finesse that it was not offending to the RSS people.

Candid Conversations

After some sessions, one went to the restaurant at the Brij Nest Suite hotel for some refreshments. As I waited, I was pleasantly surprised to see Rajdeep Sardesai saunter into the restaurant, sit at a neighbouring table and order some snacks for himself. Just out of habit, I looked around to see if there were any PRs lurking around. Soon enough, another gentleman came and sat down at the same table. However, he wasn't the PR, he was a just a visitor at the event! That was surprising indeed. 'Excuse me sir,' I said as I addressed Rajdeep Sardesai half expecting him to secretly signal a PR person to protect him from a prying journalist. He smiled at me and said 'yes, tell me!' I introduced myself and asked him 'what makes you want to come to Talk Journalism and why is it so different from JLF?' He took a bite of his dosa and said, "Talk Journalism is a platform where all journalists come together. There is no other platform which offers this kind of an opportunity or environment for journalists to meet. I also see Avinash Kalla, the organizer of this festival working very hard and bringing different people from different walks of life in every session, every year. The audience is also quite vibrant where you get to meet young students and aspiring journalists. As compared to JLF where some people come just to increase their visibility or just have fun, Talk Journalism is a serious business and I love coming in such a forum.'

After a while, the man bid adieu to him. Soon, Rajdeep also finished his meal and got up. 'Sorry, I have another session,' he said as he walked out. After that, I made it a point to frequent the restaurant every day for the next four days. There, I could talk to Sagarika Ghose, journalist and author of Atal Bihari Vajpayee- India's most loved Prime Minister. I asked her the same question; what makes her attend Talk Journalism? She said, 'I think Talk Journalism is a very lively forum, whereas JLF attracts a more literature inclined audience. My current book is a political biography of Atal Bihari Vajpayee. Previously I had written about Indira Gandhi. Many people know these personalities and they are very interested in knowing the details of their lives. So, in Talk Journalism, it is a very engaged audience for the kind of books that I am presenting since lot of them are journalism students and I am myself a journalist. I have a particular fondness for being amongst journalists and journalism students. Moreover, there are also discussions about challenges facing the media, journalism, news gathering. So, those are all issues that are very close to my heart. I think we get down to a lot of basic issues regarding journalism, current affairs and politics.'

Perhaps the only celebrity I couldn't talk to was Asaduddin Owaisi, not because his best friend was a PR person but because he was flanked by mean-looking, beefed-up security men who didn't know how to smile.

Students of various universities attending Talk Journalism.

An Ongoing Conversation

Avinash Kalla, the organizer of Talk Journalism believes that that there should be an ongoing discussion about what journalism and journalists truly are. 'People identify celebrities like Rajdeep Sardesai or Barkha Dutt as journalists, but there is more to this. I am a journalist, you are a journalist, there is more to journalism and media than what is advertised or depicted in the social media. Since its inception, I have been able to get people like Edward Snowden, the well-known American author, to speak in this forum. The people who come here also make friends with other people and more ideas are generated. My idea is not to have masses attending this forum, I am only interested in people who would like to have meaningful discussions, sessions that can help us understand what's going on in the current scenario. Moreover, I think that this forum is all about celebrating those known and unknown journalists who work day in and day out to bring the truth to people. So, they too deserve their place in the sun. Though we journalists cover celebrities, for once on this forum, let us also be the celebrities!

writetoarbit@rashtradoot.com

Students discussing journalism and its various aspects.

Barkha Dutt, Arnav Kumar, Saarika R and Divyanshi Sumrav discuss the stress journalists go through.

#EVOLUTION

Family Dog

Many people think today's family dog is spoiled and has it all too good. However, they often suffer from loneliness and the unrealistic social expectations of owners.

Dogs that live with a family have it better than dogs that roam free when it comes to safety, nutritious food, and vet care. But it's a different story with regards to their mental health.

You would need to travel far from Denmark to meet a dog that roams the village streets freely, without belonging to any one family, one that may seem a bit shabby and underweight. One could easily believe that "village dogs" would be better off in a safe and stable environment alongside a family in suburban Denmark. But things aren't quite that simple.

The life of a typical Danish "family dog" comes with a price. Dogs have evolved to run freely among other dogs and humans, according to researchers at the University of Copenhagen's veterinary and animal sciences department and food and resource economics department. In a new study, the researchers compare the welfare of the modern family dog and the free-roaming village dog.

"Many people think today's family dog is spoiled and has it all too good. However, they often suffer from loneliness and the unrealistic social expectations of owners. This can eventuate in anxiety, depression, and even aggressive behaviour-problems that village dogs typically don't have," explains Iben Meyer, assistant professor, veterinarian, and first author of the study in Applied Animal Behaviour Science.

Family Dog Challenges

The shared history of dogs and humans extends 10,000 years, to the time when dogs first became domesticated as pets. But over the past two centuries, the typical dog's life has changed dramatically. Dogs have gradually evolved from living freely on farms, where there were always people around and other dogs nearby, to moving into small urban homes, as pets which were acquired to satisfy their owners, with confinement and loneliness built into the equation.

In today's Denmark, where dogs are not allowed to roam freely in public spaces, the free-roaming village dog no longer exists.

To compare the typical Danish family dog's welfare with something more "original," the researchers looked at studies of village dogs in Mexico. Along with many other less economically developed countries, Mexico is home to the majority of dogs in the world today. Many of these dogs live a life closer to their species' primal nature.

"Until about 50 years ago, there were still dogs in Denmark that lived more or less naturally. Since then, we have yanked them from their natural niche and created the modern family dog, which presents a few challenges for dogs," explains co-author Peter Sandøe, professor of bioethics.

Loneliness & Anxiety

For many families, 21st century work and institutional life means that people are away from home for a large portion of their day. During that time, dogs are left to their own devices. It is a life that doesn't harmonize with the social needs of dogs, which need to spend time in the company of humans and other dogs.

"Dogs that are often left alone at home or that haven't gotten progressively used to being alone can be affected by separation anxiety or other separation-related issues like boredom and frustration. At times, dogs vent their anxiety or frustration by gnawing on furniture, peeing on floors, or destroying homes. These are problems that prompt some owners to euthanize or give their dogs away. While most dogs suffer in a less destructive way, they don't necessarily have fewer problems," Meyer says.

In sharp contrast to their largely lonely lives, we have extremely high expectations for how dogs should behave when with us. Preferably, a dog should be able to interact with other dogs, allow itself to be petted by strangers, and in general, be able to satisfy its owners-which is not always realistic.

Unlike the village dog, which often roams freely with other dogs in small packs, and chooses with whom and when it wants to be social, the family dog does not experience the same natural form of socialization.

"Most dog owners have heard that socialization is important-puppies need to learn to be with other dogs, etc. Therefore, people seek out places with many other dogs, expecting for their dog to be social on command. The problem is that this is not very natural for a dog, which can risk having a bad experience that persists and can contribute to developing problematic behaviour," Sandøe says.

"Socialization is about giving a puppy positive experiences with other dogs and humans. If your puppy's boundaries are crossed or they don't have the opportunity to pull away, it won't have a good experience and could lead to problems with aggressive behaviour." Meyer adds.

Give Your Dog A Break

To make life easier for your dog, researchers suggest that it is very much about accepting that our dogs cannot always live up to everything we expect of them. Dogs are social and not designed to be home alone, all day long. This needs to be considered before getting a dog.

Finally, we need to learn to take our dogs' differences into account.

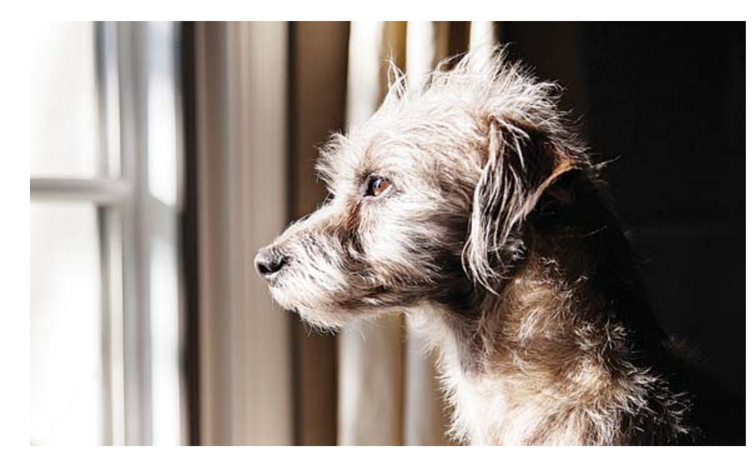

THE WALL

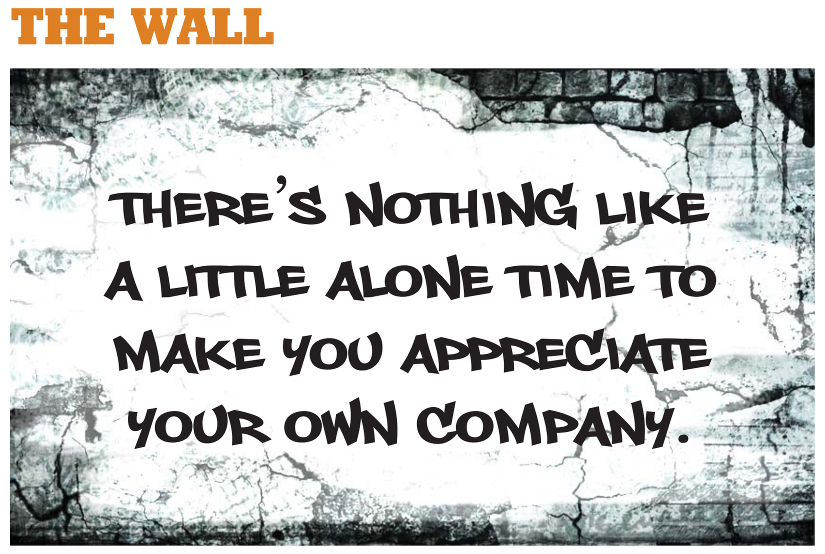

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

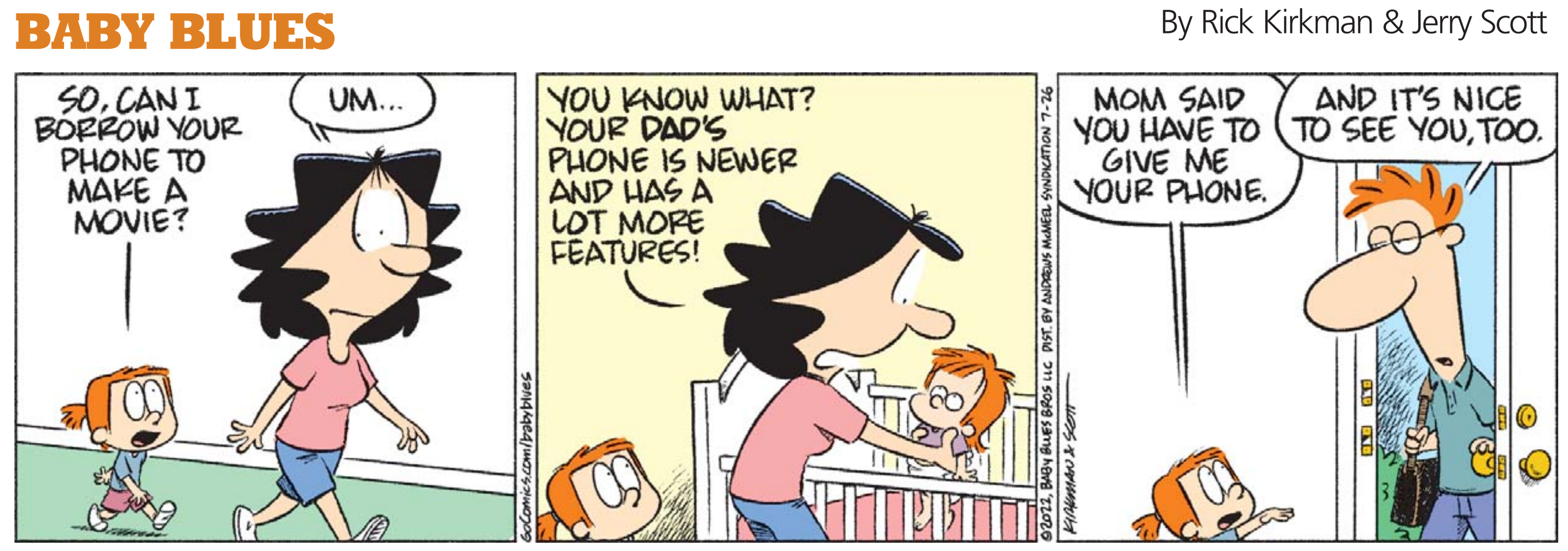

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

जोड़बीड़ में लम्पी से मरी गायों का ढेर, देर रात दफनाता रहा प्रशासन

राजस्थान में लम्पी से गायों की मौतों का आंकड़ा बढ़ रहा हैं

बीकानेर, (कासं)। राजस्थान में लम्पी से गायों की मौतों का आंकड़ा बढ़ता जा रहा है। हर जिले में लाशों के ढेर लगे हैं। उधर प्रशासन अब मौतों के आंकड़ों को छिपाने भी लग गया है। इधर, बीकानेर में गायों की लाशों के ढेर का वीडियो और फोटो सामने आने के बाद अधिकारी भी हरकत में आ गए। यह दावा किया गया कि यह गिद्द संरक्षण एरिया है और यहां दूसरी गायों मृत गायों के शव को फेंका जाता है।

लेकिन, इसकी हकीकत जानने टीम देर रात इस जोड़बीड़ एरिया में पहुंची तो हकीकत कुछ और ही थी। प्रशासन और नगर निगम जिसे सामान्य गाय बता रहा था, वहां लंपी से संक्रमित मृत गायों के ढेर पड़े थे। देर रात तक नगर निगम जेसीबी से गड्ढे खोद इन्हें दफनाता रहा। टीम जब मौके पर पहुंची तो गेट बंद कर दिए गए। इस दौरान कुछ स्थानीय नेता भी पहुंचे लेकिन उन्हें भी एंट्री नहीं दी गई।

दरअसल, पिछले कई दिनों से लंपी रोग से ग्रसित गायों को जोड़बीड़ में फेंका जा रहा था। । ऐसे में पूरे जोड़बीड़ एरिया में हजारों की संख्या में मृत गायें दिखने लगी। इसके वीडियो और फोटो सामने आने के बाद प्रशासन पर भी सवाल उठे। इसके बाद जिला प्रशासन इस पूरे मामले को दबाने में जुट गया। नगर निगम आयुक्त ने पहले ये बयान दिया कि लंपी पीड़ित गायों को यहां नहीं दफनाया जा रहा है। लेकिन, देर रात बाद निगम की ओर से इसी जोड़बीड़ में ही गड्ढे खोदकर गायों को दफनाना शुरू कर दिया। जेसीबी मशीनों को एक साथ गड्ढे खोदने के लिए लगाया गया। एक-एक करके मृत गायों को जेसीबी से उठा गड्ढों में दफन कर दिया गया।

उधर, प्रशासन ने दावा किया है कि जोड़बीड़ में सिर्फ उन्हीं गायों के शव डाले गए हैं, जो लंपी वायरस के कारण नहीं मरी है। यहां हमेशा से पशुओं व जानवरों के शव डाले जाते रहे हैं, क्योंकि ये गिद्ध संरक्षण क्षेत्र है। अब सवाल ये उठ रहा है कि लंपी पीड़ित गायें यहां डाली ही नहीं गई तो अब वहां पड़ी गायों को गड्ढे खोदकर क्यों दफनाया जा रहा है।

प्रशासन के दावे की हकीकत जानने जब टीम पहुंची तो तस्वीर कुछ और ही नजर आई। यहां जगह-जगह संक्रमित मृत गायों के ढेर पड़े थे। देर रात तक इन्हें दफनाने का सिलसिला जारी रहा। यहां अंदर जाना चाहा तो जोड़बीड़ में मौजूद गार्ड ने रोक दिया। जब इस मसले पर आयुक्त गोपालराम बिरदा से बातचीत की तो एंट्री दी गई। तब सामने आया कि यहां एक नहीं बल्कि 5 से 7 जेसीबी को गायों को दफनाने के लिए लगाया हुआ था।

जलदाय विभाग के कर्मचारियों को पेड़ से बांधा

सरपंच ने वाटर सप्लाई के पैसे लेना व महिलाओं पर गंदी नजर रखने का आरोप लगाया

अलवर, (निसं)। उमरैण के भूगोर गांव वालों ने जलदाय विभाग के 3 कर्मचारियों को पीपल के पेड़ से बांध दिया। आरोप लगाया कि वाटर सप्लाई पैसे लेकर की जाती है और महिलाओं से अभद्र भाषा में बात की जाती है। पंप हाउस पर शराब पी जाती है। पेड से बंधे मुंशी ने मोबाइल फोन से जेईएन को सूचित किया तब तीनों कर्मचारी बंधन मुक्त हुए। यहां जलदाय विभाग के तहत संचालित भूगोर गांव के पंप हाउस पर गांव वालों ने सुबह 9 बजे धावा बोल दिया। वहां पंप चालक उपेंद्र व जीतराम मौजूद थे। गांव के लोगों में महिलाएं भी शामिल थी। शोर शराबा सुनकर उपेंद्र व जीतराम बाहर आए तो तो ग्रामीणों ने उन्हें पकड़ लिया और वहीं एक पेड़ के तने से बांध दिया।

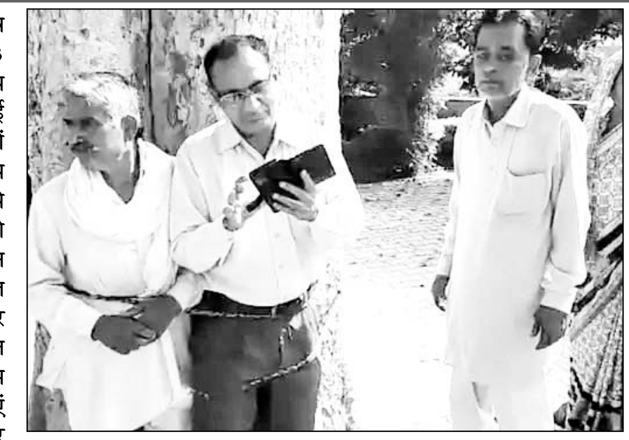

वाटर सप्लाई के पैसे लेने के आरोपियों को ग्रामीणों ने पेड़ से बांधा।

भूगोर गांव की एक महिला ने आरोप लगाया कि पंप कर्मचारी उपेंद्र अभी भी नशे में है, वह नशे में रहता है। पडौस के जलदाय दफ्तर से जब कर्मचारी राजेंद्र गांव वालों को समझाने पहुंचा तो उसे भी बांध दिया गया। इस दौरान उपेंद्र रस्सी खोलकर बाहर खड़ा हो गया। भूगोर सरपंच कैलाश मीणा ने कहा कि गांव वाले गुस्से में हैं। पंप के कर्मचारियों ने अति कर रखी है। रात में महिलाएं अगर पानी सप्लाई के लिए फोन करती हैं तो पंप चालक महिलाओं को गालियां निकालते हैं। कहते हैं- यहां आओ टंकी पर तब पानी देंगे। सरपंच ने कहा कि शराब पीकर ऐसी बातें करने का क्या मकसद है। गांव वालों से ये शराब के पैसे मांगते हैं, नॉनवेज के लिए पैसे मांगते हैं, पानी का कोई शेड्यूल नहीं, जो पैसे दे देता है उसके लिए रात को 1 बजे भी पानी सप्लाई कर दिया जाता है। बिल वालों को पानी नहीं मिल रहा। एक महीने से परेशान कर रखा है। उपेंद्र यहां का इंचार्ज है। वही यह सब कर रहा है। जीतराम नया लगा है।

सरपंच कैलाश मीणा ने कहा कि इन्हें इसलिए बांधा है ताकि अफसरों तक बात जाए। करीब 20 मिनट तक पंप इंचार्ज उपेंद्र व पंप चालक जीतराम पेड के तने से बंधे रहे। बाद में करीब 9.45 बजे जेईएन मौके पर पहुंचे और जीतराम व राजेंद्र को मुक्त कराया। उन्होंने सरपंच व गांव वालों को आश्वासन दिया कि वे पंप चालकों व कर्मचारियों के व्यवहार की जांच कराएंगे और दोषी पाए जाने पर कार्रवाई करेंगे। फिलहाल इस मामले में किसी पक्ष ने पुलिस में शिकायत नहीं की है।

जलदाय विभाग के जेईएन सीताराम ने कहा कि भूगोर पंप हाउस के कर्मचारियों पर ग्रामीणों ने पैसे लेकर वाटर सप्लाई करने के आरोप लगाए हैं। कर्मचारी उपेंद्र पर शराब पीकर ड्यूटी करने के आरोप हैं। दोनों मामलों की जांच कराएंगे।

जगदीप धनखड़ उपराष्ट्रपति बनने के बाद पहली बार आए अपने गांव 'किठाना'

बोले-किठाना मेरे दिल में है, में जो कुछ भी हूं किठाना की वजह से हूं

चिड़ावा/झुंझुनूं, (निसं)। देश के उपराष्ट्रपति और के किठाना गांव में जन्में जगदीप धनखड़ बुधवार को अपने गांव किठाना पहुंचे। वे उपराष्ट्रपति बनने के बाद पहली बार अपने गांव पहुंचे थे। यहां हैलीकॉप्टर से सपरिवार पहुंचे धनखड़ का जिले की प्रभारी मंत्री ममता भूपेश ने स्वागत किया। अपने संबोधन में धनखड़ ने कहा कि जिस गांव में जन्म लिया, जहां नींव बनी, वहां भाषण देना बहुत मुश्किल है।

उन्होंने राजस्थानी अंदाज में महिला सशक्तिकरण पर स्थानीय भाषा में कहा कि- सो क्यूं बदळ ग्यो। यो बदलाव देश में ऊपर ताणी ह। उनका ईशारा मंच पर बैठी नारी शक्ति धर्मपत्नी डॉ. सुदेश धनखड़, प्रभारी मंत्री ममता भूपेश, जिला प्रमुख हर्षिनी कुल्हरी, चिड़ावा प्रधान इंदिरा डूडी, सरपंच सुभीता की तरफ था। उन्होंने कहा कि आज देश में राष्ट्रपति पद को भी महिला सुशोभित कर रही हैं। उन्होंने अपने बचपन को याद करते हुए कहा कि छठी कक्षा के बाद लंबी दूरी तय करके स्कूल जाना पड़ता था। लेकिन आपके आशीर्वाद से इस मुकाम पर पहुंचा हूं।

देश के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ (बीच में) का किठाना गांव में स्वागत किया।

उन्होंने कहा कि देश में हालात बेहतर हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि कोई दिन ऐसा नहीं गया है जब किसान, गरीब, अजा-अजजा के व्यक्ति की और किठाना गांव की बात मेरे दिल में ना हो। उन्होंने कहा कि मैं इस मिट्टी को नमन करता हूं, मैं इसी मिट्टी का लाल हूं। जो कुछ भी हुआ उसका एक ही कारण है- शिक्षा। धनखड़ यदि उन्हें सैनिक स्कूल में स्कॉलरशिप नहीं मिली होती, तो हालात कुछ और होते। उन्होंने कहा कि सबसे ज्यादा जोर पढ़ाई पर दीजिए। धनखड़ ने कहा कि बच्चों पर तनाव मत डालें, उन्हें जो वे करना चाहें, करने दीजिए। उन्होंने कहा कि आज जो लोग उद्योग, व्यापार में आगे बढ़ रहे हैं, उनमें से अधिकांश साधारण पृष्ठभूमि से हैं।

धनखड़ ने मौजूद जनसमूह को प्रेरित करते हुए कहा कि अपनी प्रतिभा को उजागर करें। गांव के बालक-बालिकाएं शुरु में हिचकिचाते हैं, लेकिन कुछ समय बाद सबकुछ उनकी मुट्ठी में होता है। उन्होंने कहा कि किठाना गांव मेरे दिल में बसता है। मैं जो कुछ हूं किठाना गांव की बदौलत हूं। किठाना गांव के पराक्रम और बुजूर्गों के आशीर्वाद की बदौलत यहां तक पहुंचा है। उन्होंने कहा कि बदलते भारत के हिस्से के रूप में मैं किठाना को देखना चाहता हूं। जिसमें सभी लोग गैर राजनैतिक चश्में से देखते हुए मेरी इस परिकल्पना में साथ दें। यहां के विकास और शिक्षा में कोई कमी नहीं रहने दूंगा। उन्होंने अपने दिल का दर्द भी ठाामीणों के साथ साझा किया। उन्होंने कहा कि सुरक्षा की दृष्टि से उनकी गाड़ी के शीशे नीचे नहीं होते। वरना उन्हें भी अच्छा लगता है कि वे शीशे उतारकर सभी से मिले। सभी का अभिवादन करें। यही नहीं उन्होंने ग्रामीणों से कहा कि वे मुझे सूचना देकर कभी भी मिलने आए और कितनी भी संख्या में आए। क्योंकि सुरक्षा की दृष्टि से ही पहले अपाइंटमेंट का सिस्टम है। इसलिए उसे समझे। यह मुझे भी समस्या लगती है। लेकिन सुरक्षा के लिए अपनाए गए सिस्टम में मैं सहयोग दूंगा तो सभी मेरा भी सहयोग करें।

तालाब में डूबने से बालक की मौत

बामनवास, (निसं.)। थाना क्षेत्र के कोयला ग्राम में गुरुवार को तालाब में नहा रहा युवक कुलदीप अचानक डूबने के बाद लापता हो गया, वहीं दूसरी ओर पिपलाई गांव में भी गहरे पानी में डूबने से बालक की मौत हो गई। युवक के डूबने की सूचना के बाद पुलिस प्रशासन के अधिकारी मौके पर पहुंचे एवं तालाब में डूबे युवक को तालाब से निकालने की कोशिश की, लेकिन तालाब में काफी प्रयास के बाद भी युवक का कोई सुराग नहीं मिलने पर जिले से एसडीआरएफ की टीम को बुलाया। एसडीआरएफ की टीम ने गुरुवार देर रात तक तालाब में डूबे युवक को काफी तलाश किया पर कोई सुराग नहीं मिल पाया। बामनवास थाना अधिकारी बृजेश कुमार मीणा ने भी पुलिस कर्मियों के साथ काफी प्रयास किया। पुलिस उपाधीक्षक तेज कुमार पाठक ने बताया कि कोयला गांव के एक तालाब में युवक कुलदीप नहा रहा था। नहाते हुए युवक तालाब के अंदर चला गया। जिस समय तालाब में युवक डूबा था उस समय युवक के परिजन वहीं मौजूद थे। युवक का रेस्क्यू कार्य देर रात होने के कारण स्थगित किया। युवक को तालाब से ढूंढने का कार्य शुक्रवार सुबह फिर से शुरू किया जाएगा। दूसरी ओर के पिपलाई ग्राम में भी एक बालक के डूबने के कारण उसकी मौत हो गई, जहां पुलिस प्रशासन ने युवक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों के सुपुर्द किया।

यहां नाग से खेलते हैं गणपति

■ **शिव गणेश मंदिर में है गणपति का सिद्धि विनायक स्वरूप, दाई तरफ सूंड वाले हैं गणपति**

श्रीगंगानगर, (निसं.)। आप ने अब तक गले में नाग डाले महादेव के बारे में तो सुना होगा, दर्शन भी किए होंगे, लेकिन श्रीगंगानगर में हैं एक ऐसे गणपति जो नाग से खेलते हैं। जी हां, उनकी ऐसी प्रतिमा श्रीगंगानगर के पुरानी आबादी स्थित शिवगणेश मंदिर में है, जहां वे नाग देवता से खेलते नजर आते हैं। मंदिर में गणपति का सिद्धि विनायक स्वरूप है। मान्यता है कि मंदिर में स्थापित गणपति की प्रतिमा गणेश जी के बाल्यकाल की कथा पर आधारित है। यहां आने वाले भक्तों का भी मानना है कि गणपति के इस बाल स्वरूप के दर्शन करके उनकी मनोकामनाएं पूरी होती हैं।

मंदिर में जो गणपति स्थापित हैं उनकी कमर पर सांप लिपटा है। यह सांप उनकी छाती तक लगा हुआ है। इस बारे में पुजारी देवेंद्र भारद्वाज बताते हैं कि मंदिर में स्थापित प्रतिमा के साथ एक कथा जुड़ी हुई है। इस कथा के अनुसार एक बार बचपन में गणपति को खेलते हुए महादेव के गले में लिपटा नाग परेशान कर रहा था। गणपति ने कुछ देर तो नागदेवता की छेड़छाड़ सहन की लेकिन बाद में उन्हें अपनी कमर पर ही बांध लिया। उसी किस्से को दर्शाते हुए मंदिर में प्रतिमा स्थापित की गई क्योंकि मंदिर का नाम ही शिव गणेश मंदिर है, ऐसे में यहां प्रतिमा भी ऐसी स्थापित की गई जो गणपति और उनके पिता महादेव के जीवन से जुड़ी है।

भारद्वाज बताते हैं कि आम तौर पर मनोकामनाएं पूरी करने वाला गणपति का स्वरूप सिद्धि विनायक माना जाता है। गणपति के इस स्वरूप की विशेषता इनकी सूंड दाई होना मानी जाती है। आम तौर पर गणपति की सूंड बाईं तरफ होती है। इस प्रतिमा की खासीयत यह है कि यहां प्रतिमा दाईं तरफ है। मंदिर की स्थापना 33 साल पहले हुई। उस समय यहां शिव मंदिर स्थापित किया जाना था लेकिन बाद में महादेव और गणपति दोनों के स्वरूप स्थापित हुए। मंदिर में गणपति के स्वरूप की स्थापना इलाके में ही रहने वाले वाले रामदयाल सेतिया की याद में उनकी पत्नी शांति देवी और बेटों ने करवाई।

लम्पी वायरस की रोकथाम को लेकर प्रदर्शन

डूंगरपुर, (निसं)। राजस्थान में पिछले 3 महीने से लम्पी वायरस ने गौ माताओं पर कहर बरपा रखा है। इस जान लेवा वायरस से अब तक 1 लाख से ज्यादा गौ-माताओं की दुःखद मृत्यु हो चुकी है। साथ ही 10० लाख से ज्यादा संक्रमित है। सरकार द्वारा अब तक किये गये प्रयासों में न तो गम्भीर है और ना ही संवेदनशीलता रही है। इसी को लेकर भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष प्रभु पंडया के नेतृत्व में गुरूवार को कलेक्ट्रेट कार्यालय के बाहर धरना प्रदर्शन कर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के नाम ज्ञापन सौपा।

लम्पी वायरस की रोकथाम को लेकर कलेक्ट्रेट कार्यालय के बाहर प्रदर्शन करते भाजपाई।

जिलाध्यक्ष प्रभु पंडया ने कहा कि पूरे प्रदेश में सर्वे करवा कर सरकार तुंरत प्रति पशु मुआवजा जारी कर पशुपालक को राहत प्रदान करे साथ ही सरकार पशुपालन विभाग में तुरंत चिकित्सा कर्मियों व अन्य पदों पर आपात भर्ती करे। इस बीमारी को तुरंत राज्य आपदा घोषित करें। गौशालाओं, व्यक्तिगत गौपालकों तथा बेसहारा गौधन को इस तेजी से फैल रही बीमारी से बचाने के लिए युद्ध स्तर पर टीकाकरण अभियान चलाया जाऐ, जिन पशु पालकों ने विभिन्न बीमा कंपनियों से अपने गौधन का बीमा करवाया है, बीमा कंपनिया अब क्षतिपूर्ति करने में असमर्थता व्यक्त कर रही है ऐसे गौपालकों का एक अल्पकालिक संर्वेक्षण करवा कर उसकी क्षतिपूर्ति की व्यवस्था बीमा कंपनी से करवाये या सरकार स्वयं करें गौपालकों को नया पशुधन खरीदने के लिए ब्याज रहित ऋण दिया जाऐं गौशालाओं का अनुदान तुरंत जारी किया जाऐं। संपूर्ण प्रदेश में हजारों की संख्या में गौधन स्थान-स्थान पर मृत पडा है, जिसके कारण से जहां प्रदेश के बहुसंख्यक समाज की भावनाएं आहत हो रही है वही किसी महामारी के फैलने की आंशका भी प्रबल हो रही है।

गोली मारकर युवक की हत्या

तारानगर, (निसं)। तारानगर क्षेत्र के गाँव ढाणा कस्वां में गुरूवार शाम को एक युवक की गोली मारकर हत्या कर दी गयी। पुलिस से मिली जानकारी अनुसार गाँव ढाणा कस्वां निवासी राजेंद्र सहारण पर एक युवक ने गोली चलाकर उसकी हत्या कर दी। गोली लगने के बाद राजेंद्र को तारानगर के राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया जहां चिकित्सको ने उन्हें मृत घोषित कर दिया सूचना मिलने पर तारानगर पुलिस ने सीएचसी पहुंचकर घटना की जानकारी ली तथा शव को मोर्चरी में रखवा दिया। देर रात तक इस संबंध में कोई मामला दर्ज नहीं करवाया गया है।

शिक्षक के आचरण के विरोध में विद्यार्थियों का प्रदर्शन

प्रशिक्षु आरएएस व पुलिस मौके पर पहुंची

■ **शिक्षक को हटाए जाने की मांग**

छबड़ा, (निसं)। क्षेत्र के सीनियर विद्यालय निपानियां के शिक्षक के अनैतिक आचरण के विरोध में गुरूवार को छात्र-छात्राओं ने जमकर हंगामा किया और शिक्षक को हटाए जाने की मांग को लेकर डेढ़-दो घंटे तक छबड़ा-कुंभराज मार्ग पर भी धरना-प्रदर्शन किया। सूचना पाकर पहुंची पुलिस एवं प्रशिक्षु आरएएस ने विद्यार्थियों से समझाइश व आश्वासन देकर धरना-प्रदर्शन को समाप्त करवाया।

निपानियां गांव के उच्च माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत एक शिक्षक के आचरण से छात्र व ग्रामीण आक्रोशित थे। गुरूवार को उक्त शिक्षक विद्यालय नही पहुंचा और छात्र-छात्राओं ने शिक्षक के अनैतिक आचरण के विरोध में धरना-प्रदर्शन किया और कुंभराज रोड को कुछ समय के लिए जाम कर दिया। सूचना पाकर प्रशिक्षु आरएएस मनमोहन शर्मा व पुलिस कर्मी यहां पहुंचे तो छात्र शिक्षक को हटाए जाने की मांग पर अड़ गए। इन्होंने छात्रों के साथ समझाइश कर आश्वासन दिया कि उक्त मामले की निष्पक्ष जांच करवाकर दोषी के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की जाएगी। इस पर छात्रों ने धरना प्रदर्शन समाप्त किया।

वहीं, इस मामले में विद्यालय प्रधानाचार्य कैलाश श्रीवास्तव ने सीबीओ को पत्र लिखकर अध्यापक के संबंध में रिपोर्ट पेश की है। साथ ही प्रशिक्षु आरएएस मनमोहन शर्मा को भी रिपोर्ट पेश की है। इसके उपरांत शिक्षक के विरूद्ध नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। ग्राम पंचायत निपानियां के सरपंच विजयसिंह मीणा ने भी एसडीएम को दिए पत्र में षिक्षक को हटाए जाने की मांग की हैं।

आयुर्वेद विवि में प्रो. पाण्डे का ऑनलाइन व्याख्यान

जोधपुर, (कासं) । सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन् राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर में कुलपति प्रो. (डॉ.) अभिमन्यु कुमार के मार्गदर्शन में मनाये जा रहे आज़ादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रमों के अन्तर्गत विश्वविद्यालय के मानव संसाधन विकास केन्द्र (सीएचआरडी) द्वारा 'कैन्सर पेन मैनेजमेन्ट: चैलेन्जस् एण्ड पर्सपेक्टिव इन आयुर्वेदा' विषय पर बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय के इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज़ के अन्तर्गत फैकल्टी ऑफ आयुर्वेद के संज्ञाहरण विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. कुलदीप कुमार पाण्डे का ऑनलाईन व्याख्यान का आयोजन किया गया।

प्रो. पाण्डे ने अपने व्याख्यान में बताया कि वर्तमान में वैश्विक जनता कैन्सर रोग से भयग्रस्त है। इस रोग की सम्यक चिकित्सा उपलब्ध न होने से इस रोग के नाम मात्र से ही लोगों को भय लगता है ।

उन्होंने बताया कि वर्तमान में सबसे ज़्यादा होने वाले कैन्सर में फेफड़ों और स्तन ग्रन्थियां का कैन्सर प्रमुख है। डॉ. पाण्डे ने कैन्सर पेन मैनेजमेण्ट आयुर्वेद में रसायन पद्धित के अन्तर्गत ब्राह्मी, जटामांसी, अश्वगन्धा आदि औषधियां सहित योग आदि अनेक उपक्रमां के बारे में विस्तार से बताया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ. अभिमन्यु कुमार ने अपने उद्बोधन में प्रो. पाण्डे द्वारा कैन्सर पेन मैनेजमेण्ट के अन्तर्गत किये जा रहे शोधकार्य की प्रशंसा की और उन्हें आयुर्वेद के माध्यम से कैन्सर रोग एवं इसके पेन मैनेजमेण्ट हेतु निरन्तर प्रयास करते रहने हेतु प्रेरित किया।

मानव संसाधन विकास केन्द्र (सीएचआरडी) के मुख्य समन्वयक डॉ. राकेश कुमार शर्मा ने बताया कि सन् 2020 में स्थापित यह केन्द्र आयुर्वेद के शिक्षकां एवं छात्रां के निरन्तर ज्ञानवर्द्धन के लिए इस प्रकार के कई प्रकार ऑफलाईन एवं ऑनलाईन व्याख्यान का आयोजन कर रहा है और अभी तक लगभग 100 ऑफलाइन या ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन कर चुका है। यह व्याख्यान श्रृंखला निरन्तर जारी रहेगी।

सेमिनार में विश्वविद्यालय के संकाय सदस्या एवं छात्रा सहित राजस्थान, यूपी, एमपी, पंजाब, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, तेलंगाना, गुजरात एवं बिहार आदि राज्यां सहित देश भर से बड़ी संख्या में विद्वानों ने भाग लिया।

जेल में मिट्टी में दबाकर रखा मोबाइल मिला

श्रीगंगानगर, (निसं)। शहर की सेंट्रल जेल में तलााशी के दौरान मोबाइल मिला। यह एक कीपैड मोबाइल है तथा इसमें बैटरी और सिम भी लगे हैं। जेल प्रशासन ने मंगलवार रात मोबइल मिलने के बाद इस संबंध में कोतवाली थाने में मामला दर्ज करवा दिया। इस संबंध में जेल के बंदियों से जेल स्टाफ ने पूछताछ की लेकिन अब तक किसी ने भी मोबाइल उसका होना स्वीकार नहीं किया है। जेल प्रशासन के इस संबंध में कोतवाली में मामला दर्ज करवाने के बाद पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

जेल स्टाफ ने जेल के बैरकों की तलाशी ली थी। इस दौरान बैरकों में तो कुछ भी नजर नहीं आया लेकिन जब स्टाफ के लोग टॉयलेट के पास पहुंचे तो वहां मिट्टी में एक थैली में कोई चीज नजर आई। इसे देखा तो यह एक कीपैड मोबाइल था। इस पर जेल प्रशासन ने इसे कब्जे में ले लिया। इस संबंध में जेल प्रहरी रोहित कुमार ने अज्ञात के खिलाफ जेल में मोबाइल लाने का मामला दर्ज करवाया है। जेल में कुछ दिन पहले ही एक मोबाइल, चार्जर आदि सामान मिला था। कुछ दिन पहले अज्ञात व्यक्ति ने जेल के पीछे की दीवार से जेल कैंपस में मोबाइल फैंक दिया था। इस मामले की भी जांच की जा रही है।

सुविवि में जर्मनी, यूके एवं आईआईटी कानपुर के वैज्ञानिकों ने शुरू किया शोध कार्य

सुविवि प्राणी शास्त्र विभाग की प्रयोगशाला में शोध कार्य

उदयपुर, (कासं)। सुविवि के प्राणी शास्त्र विभाग की जनस्वास्थ्य किटविज्ञान प्रयोगशाला में जर्मनी से डॉ थॉमस, यूके से डॉ लेना, आइसीएमआर के पूर्व वैज्ञानिक डॉ घोष एवं आईआईटी कानपुर के शोधार्थी कार्तिक ने अपना शोध कार्य प्रारंभ किया।

विभागाध्यक्ष एवं प्रयोगशाला इंचार्ज प्रो आरती प्रसाद ने बताया कि गत जुलाई में विभाग द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के सफलतापूर्वक आयोजन से जनस्वास्थ्य किटविज्ञान के क्षेत्र में कार्यरत संस्थाओं के मध्य प्राणी शास्त्र विभाग ने एक अभूतपूर्व पहचान कायम की है जिससे विभाग के कार्यो की कीर्ती अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कार्य कर रहे वैज्ञानिकों तक पहुँची एवं उन्होंने विभाग के कार्यो को सराहा। इसी से प्रभावित होकर अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिकों का यह दल विभाग में शोध कार्य करने हेतु आया हुआ है। प्रो प्रसाद ने बताया कि यह दल 5 सितम्बर को उदयपुर पहुंचा एवं उन्होंने उस दिन राजकीय अवकाश होने के कारण प्रो प्रसाद से व्यक्तिगत मुलाकात कर विभाग में चल रहे कार्यो पर चर्चा की। दूसरे दिन 6 सितम्बर को दल ने विभाग का दौरा कर विभाग में चल रहे कार्यो के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी प्राप्त की। इसके पश्चात उन्होंने विभाग के शिक्षकों से संवाद कर विभाग के साथ साझे में किए जा सकने वाले कार्यो पर मंथन किया। ततपश्चात दल ने विज्ञान महाविद्यालय अधिष्ठाता प्रो सी पी जैन से मुलाकात की।

जर्मनी, यूके एवं आईआईटी कानपुर के वैज्ञानिक।

दौरे के तीसरे दिन 7 सितम्बर को दल ने विभाग के शोधार्थियों के साथ उदयपुर शहर के आस पास के गांवों में मलेरिया रोगवाहक एनोफिलीज मच्छर का सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षण के दौरान उन्होंने उदयपुर में पायी जाने वाली मच्छरों की प्रजातियों, उनकी रोकथाम के प्राकृतिक तरीको तथा स्थानीय प्रशासन द्वारा रोगवाहक मच्छरों की रोकथाम हेतु किए जा रहे प्रयासों के बारे में जानकारी एकत्रित की। प्रो प्रसाद ने बताया कि ये वैज्ञानिक मुख्यतया मलेरिया रोग के मुख्य वाहक मच्छर एनोफिलीज स्टीफेंसाइ के हाइड्रोकार्बन पर शोध कार्य करने हेतु प्राणी शास्त्र विभाग में आए है। यह दल 10 सितम्बर तक उदयपुर में अपना शोध कार्य करेगा।

संक्षिप्त

5 वार्डों के सदस्य निर्विरोध चुने

बोराज, (निसं)। भारत निर्माण राजीव गांधी सेवा केंद्र पर कस्बे में पहली बार हो रहे ग्राम सेवा सहकारी समिति लिमिटेड के चुनाव को लेकर ग्रामीणों में काफी उत्साह व उमंग है। दूदू निर्वाचन अधिकारी महेंद्र कटारिया ने बताया कि चुनावों के तीसरे चरण के तहत गुरुवार को बोराज जी एस एस के कुल 12 वार्डों की नामांकन प्रक्रिया शुरू हुई जिसमें 24 आवेदन पत्र प्राप्त हुए जांच व नाम वापसी के बाद देवीलाल ,जुगपाल दास ,कमला देवी ,लाली देवी व सरवन लाल कुल 5 वार्ड सदस्य निर्विरोध निर्वाचित चुने गए हैं। शेष प्रत्याशियों को चुनाव चिन्ह आवंटित कर दिया गया है। चुनाव 20 सितंबर को होंगे ।

हथकढ़ शराब सहित एक गिरफ्तार

खैरथल, (निस)। खैरथल वृत के आबकारी पुलिस थाना ने अवैध हथकढ शराब के खिलाफ चल रहे अभियान के तहत 55 लीटर ले जाते एक को गिरफ्तार किया है। आबकारी थानाधिकारी अमर सिंह ने बताया कि मुंडावर उपखंड के गांव खरेटा निवासी रेशम सिंह उर्फ काली पुत्र सरदार सिंह के पास से रबड़ की ट्यूब में भरी हुई 55 लीटर अवैध हथकढ शराब बरामद कर गिरफ्तार किया गया। आरोपी को न्यायालय में पेश किया गया जहां से न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

कल्याणजी के लिए पदयात्रा हुई रवाना

निवाई। गांव सैदरिया में गुरूवार को ठाकुरजी के मन्दिर से डिग्गी कल्याणजी के लिए पदयात्रा गाजे - बाजे के साथ रवाना हुई। ग्रामीण गिर्राज बोकण ने बताया कि पदयात्रा का जगह जगह स्वागत किया गया। श्रद्धालुओं ने यात्रियों को जलपान करवाया। पदयात्रा में शामिल श्रद्धालु जुलूस में डीजे पर नाचते गाते चल रहे थे। बोकण ने बताया कि पदयात्रा गुरूवार की शाम देवधाम जोधपुरिया विश्राम करेगी। यात्री शुक्रवार को सोडा में विश्राम करेगें तथा शनिवार को डिग्गी कल्याणजी के दर्शन करेंगे। इस दौरान डांक्टर देवराज गुर्जर, श्योराम हरसल, सूरज हरसल, गोलू शर्मा, केदार सैन, महेन्द्र हरसल,छाजू गुर्जर, योगेश, मनसेट, सुरज्ञान, सूरज, गोलू, देवराज, सुनील, रामवतार सैन सहित अनेक यात्री मौजूद थे।

पेयजल योजनाओं का शिलान्यास आज

लालसोट, (निसं)। विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न जगहों की जल जीवन मिशन के तहत विभिन्न पेयजल योजनाओं का शिलान्यास कार्यक्रम क्षेत्रीय सांसद जसकौर मीणा एवं स्थानीय विधायक चिकित्सा मंत्री परसादी लाल मीणा करेंगे। जलदाय विभाग के सहायक अभियंता अंकित जैन ने बताया कि शुक्रवार को दोपहर 1 बजे पंचायत समिति सभागार में विधानसभा क्षेत्र की जल जीवन मिशन से निर्मित होने वाली पेयजल योजनाओं का शिलान्यास करेंगे। शिलान्यास समारोह के दौरान लालसोट पंचायत समिति के प्रधान एडवोकेट नाथू लाल मीणा एवं रामगढ़ पचवारा पंचायत समिति के प्रधान कौशल्या मीणा भी मौजूद रहेगा।

बच्ची की मौत के बाद चिकित्सकों पर लगाया लापरवाही का आरोप

परिजनों के साथ सर्व समाज के लोगों ने मुख्यमंत्री व चिकित्सा मंत्री के नाम का ज्ञापन उपखंड कार्यालय में देकर दोषी चिकित्सकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग की।

श्रीमाधोपुर, (निसं)। उपखंड के ग्राम हरदाकावाली कंचनपुर निवासी एक 7 वर्षीय बच्ची की अस्पताल में उपचार के दौरान मौत के मामले में गुरुवार को बच्ची के परिजनों के साथ सर्व समाज के लोगों ने चिकित्सकों की लापरवाही से बच्ची की मौत होने का आरोप लगाते हुए मुख्यमंत्री व चिकित्सा मंत्री के नाम का ज्ञापन उपखंड कार्यालय में देकर दोषी चिकित्सकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग की है।

पीहू शर्मा के पिता बिजेश कुमार शर्मा ने ज्ञापन में लिखा है कि उनकी

■ मुख्यमंत्री व चिकित्सा मंत्री के नाम दिया ज्ञापन

बेटी जोधपुर में अपने ननिहाल में रहकर पढ़ रही थी। 18 जुलाई को बच्ची के श्वास लेने में तकलीफ होने पर पहले जोधपुर दिखाया व उसके बाद 22 जुलाई को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के अजमेर स्थित अस्पताल दिखाया गया। जहां से उसे जयपुर के लिए रेफर किया गया। 23 जुलाई को बच्ची को जयपुर के एक निजी अस्पताल में दिखाया जहां चिकित्सकों ने कुछ जांच कर 2 दिन बाद आने की बात कही।

दो दिन बाद 25 जुलाई को बच्ची को वापस भर्ती कर एंजियोग्राफी जांच करने के लिए सुबह 10 बजे करीब बच्ची को अस्पताल में अंदर लेकर गए थे। इसके बाद करीब साढे 3-4 बजे के आसपास बच्ची को स्वास कम आने की बात कहकर चिकित्सकों ने वेंटिलेटर पर ले लिया। परिजनों का आरोप है कि चिकित्सकों से बार-बार बच्ची के हालात पूछने पर भी हमें सही जानकारी नहीं दी गई।

25 जुलाई की देर रात 11.50 बजे हमें बच्ची की मौत की सूचना दी व सुबह बच्ची का शव हमें सौंपा गया। परिजनों का आरोप है कि चिकित्सक की लापरवाही से हमारी बेटी की मौत हुई है। सर्व समाज के लोगों ने बच्ची के परिजनों के साथ आकर अस्पताल व चिकित्सकों की लापरवाही के कारण बच्ची की मौत होने का आरोप लगाकर मुख्यमंत्री व चिकित्सा मंत्री के नाम का ज्ञापन उपखंड कार्यालय में देकर दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग की।

इस मौके पर श्रीमाधोपुर नगर पालिका अध्यक्ष हरिनारायण महंत, कंचनपुर सरपंच सुनील जांगिड़, पूर्व सरपंच ओम प्रकाश बोहरा, पूर्व प्रधान मक्खन लाल शर्मा, पूर्व जिप सदस्य कर्मवीर सिंह घोसल्या, विशाल बोहरा, दिनेश शर्मा, अमित महर्षि, बलदेव सैनी, पुरुषोत्तम शर्मा रमेश चंद्र ठेकेदार (नागवान) कंचनपुर प्रकाश हरसूखा, महेश शर्मा हरदाकव्वाली ,मालीराम बोहरा, महेश शर्मा सतनारायण खांडल, विमल इंदौरिया ,अमर चंद शर्मा समेत सैकड़ों महिला-पुरुष मौजूद थे। इससे पूर्व लोगों ने खंडेला बाजार स्थित श्रीश्यामजी के मंदिर से महिलाओं वह सैकड़ों पुरुषों ने हाथों में तख्तियां लिखी को रैली निकालकर अस्पताल व चिकित्सकों के खिलाफ नारेबाजी करते हुए उपखंड कार्यालय पहुंच कर ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन सौंपने से पहले 2 मिनट का मौन उपखंड कार्यालय के गेट रखा।

सेना भर्ती रैली की तैयारियों को अंतिम रूप दिया

अलवर, (निसं)। जिला कलेक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने अलवर, भरतपुर एवं धौलपुर जिले की आगामी 10 से 24 सितम्बर तक जिले में आयोजित होने वाली सेना भर्ती को शांतिपूर्ण सम्पन्न करवाने के लिये संबंधित अधिकारियों को सौंपे गए दायित्वों को अंतिम रूप देकर सुचारू व्यवस्था कराने के निर्देश दिये। जिला कलेक्टर की अध्यक्षता में बहरोड के अनंतपुरा में स्थित केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के एमपीआरटीसी सक्रटर में आयोजित होने वाली सेना भर्ती की व्यवस्थाओं के संबंध में बैठक आयोजित हुई। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि 10 सितम्बर से 24 सितम्बर तक सेना भर्ती का आयोजन होगा। इसके लिए संबंधित अधिकारी दिए गए दायित्वों की व्यवस्थाएं समयबे रूप से सुनिश्चित करें। उन्होंने उपखण्ड अधिकारी बहरोड एवं संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिये कि व्यवस्थाओं की जांच हेतु आज मध्य रात्रि को भर्ती की रिहर्सल करावे। उन्होंने भर्ती स्थल की व्यवस्थाओं का जायजा लेकर पीडब्ल्यूडी के अधीक्षण अभियन्ता को निर्देश दिये कि प्रवेश द्वार के पास कारपेटिंग व्यवस्था करावे। कंकर, पत्थर को हटवाए। उन्होंने रैन बसेरा के पास वाहन पार्किंग स्थल पर बैरिकेटिंग आदि की व्यवस्था कराने, भर्ती दौड में असफल रहने वाले अभ्यर्थियों को बाहर जाने के लिए अलग से बैरिकेटिंग कराने एवं उनके लिए अपने गन्तव्य तक जाने के लिए निकास द्वार के पास ही बसों की व्यवस्था कराने के निर्देश दिये। उन्होंने निर्देश दिये कि बैरिकेटिंग व्यवस्था मजबूत रहे।

शहरी रोजगार गारंटी योजना का लाभ आज से मिलेगा

मंडावरी, (निसं)। ग्राम पंचायत को नगर पालिका बनाने के बाद शहरी क्षेत्र होने के चलते अब तक शहरी रोजगार गारंटी योजना के अभाव में रोजगार की कमी से जूझ रहे मंडावरी कस्बे के जरूरतमंद लोगों को अब शहरी रोजगार गारंटी योजना का लाभ आज से मिलना शुरू हो जाएगा।

अधिशासी अधिकारी नमन शर्मा ने बताया कि इंदिरा गांधी शहरी रोजगार गारंटी योजना के तहत इच्छुक परिवारों को सौ दिन का रोजगार उपलब्ध कराने की राजस्थान सरकार द्वारा शुरुआत की गई है। अब तक दौ सो से ज्यादा परिवार शहरी रोजगार गारंटी योजना में रोजगार पाने के लिए खुद का ईमित्र के माध्यम से पंजीकरण भी करा चुके हैं। उन्होंने बताया कि जॉब कार्ड के माध्यम से 18 आयु वर्ग से 60 आयु वर्ग के पात्र लोगों को शहरी नरेगा योजना से लाभान्वित किया जाएगा। अधिशासी अधिकारी शर्मा ने बताया कि जिन जगहों पर शहरी रोजगार गारंटी योजना के तहत नरेगा कार्य कराए जाने हैं उन्हें चिन्हित भी कर वहां नरेगा श्रमिकों को सृजन करने का कार्य भी पूरा कर लिया गया है। वहीं दूसरी ओर बुधवार को नगर पालिका में पट्टा शिविर के दौरान अधिशासी अधिकारी द्वारा लाभार्थियों को पट्टों का भी वितरण किया गया। अधिशासी अधिकारी शर्मा ने बताया कि लोगों को उनके भूखंड अथवा मकान आदि का पट्टा देकर वास्तविक मालिकाना हक सुनिश्चित भी किया जा रहा है।

'शिक्षक ही भविष्य निर्माता'

निवाई, (निसं)। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में गुरुवार को ईश्वरीय ब्रह्मकुमारी आश्रम के तत्वावधान में शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। सम्मान समारोह में ब्रह्माकुमारी आश्रम की बहन बी.के. रेखा एवं बहन बी.के. सुनीता ने सभी शिक्षकों को दुपट्टा, प्रशस्ति पत्र एवं पौधा भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर बहन बी.के. रेखा ने शिक्षक का महत्व समझाते हुए कहा कि शिक्षक राष्ट्र निर्माता है और वही बालकों का भविष्य निर्माता है। शिक्षक ही एक शिक्षित एवं जिम्मेदार समाज का निर्माण करता है। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य देवेन्द्रपाल सिंह चौधरी ने कहा कि छात्र-छात्राएं शिक्षकों के बताए मार्ग पर चलकर अपने भविष्य का निर्माण करें। इस अवसर पर व्याख्याता सत्यनारायण मंगल, कैलाश चंदलानी, सुरेंद्र जैन, शैलेंद्र गिंदोडी, तुलसी चंदलानी, रघुनंदन गौतम, प्रतिभा मीणा, पूजा गोस्वामी, रचना मीणा, सुमन विजय एवं रामबाबू शर्मा सहित कई शिक्षक मौजूद थे।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में अतिथियों ने शिक्षकों को सम्मानित किया।

ग्राम सेवा सहकारी समिति के चुनाव 20 को

सांभरझील, (निसं)। लूणवा ग्राम सेवा सहकारी समिति में संचालक मंडल के 12 सदस्यों के लिए 20 सितंबर को चुनाव कराए जाएंगे। हालांकि, चुनाव प्रक्रिया दो सितंबर से ही प्रारंभ हो चुकी है।

मतगणना 21 सितंबर को होगी तथा संचालन मंडल के पदाधिकारियों का चुनाव 22 सितंबर को चुनाव होगा। निर्वाचन अधिकारी श्रीराम चौधरी और मतदान अधिकारी मोहन राम बिडियासर ने बताया कि ग्राम सेवा सहकारी समितियों के सफल संचालन के लिए ग्राम सेवा सहकारी समितियों के संचालक मंडल के सदस्यों के चुनाव कराए जा रहे हैं। इसके लिए विभाग ने चुनाव कार्यक्रम निर्धारित कर दिया है। नागौर जिले में पांच चरणों में चुनाव प्रक्रिया संपन्न कराई जाएगी, जिसमें लूणवां.ग्राम में 20 सितंबर को संचालन मंडल के सदस्यों व सभी पदाधिकारियों का चुनाव कराया जाएगा। 1 एससी, 1 एसटी व 2 महिलाओं के लिए सदस्य पद आरक्षित है जिनमे दोनो महिलाए निर्विरोध निर्वाचित चुनी गई।

इस बार ग्राम सेवा सहकारी समिति के चुनाव प्रक्रिया में बदलाव किया गया है। इसमें इस बार चुनाव वार्ड वार कराने की व्यवस्था की है, जिससे मतदान दलों व प्रत्याशियों को किसी भी तरह की परेशानी नहीं रहेगी। लूणवां.ग्राम पंचायत की सहकारी समिति पर गुरूवार को बारह वार्डों में चुनाव होना तय हुआ। जिनमें उन्नीस उम्मीदवारों ने नामांकन दाखिल किया। एक आवेदन समर्थक नहीं होने से रद्द हो गया। एक आवेदक धर्मवीर बेनीवाल ने अपना नाम वापस ले लिया। कुल एक हजार चार सौ बयासी मतदाता है।जिनमें पाच सो दस ऋणी तथा नो सो बहतर अऋणी है। गुरूवार को नो बजे से ग्यारह नामांकन, बारह से चार फार्म की जांच, साढे चार बजे साढे पांच तक नाम वापसी प्रकिया चली। पांच बजे बाद सात उम्मीदवार निर्विरोध निर्वाचित हुए।

ब्लॉक स्तरीय ओलंपिक प्रतियोगिता की तैयारी बैठक

■ एसडीएम ने अधिकारियों के साथ खेल मैदान व सांस्कृतिक संध्या कार्यक्रम स्थल का अवलोकन किया

किशनगढ़ बास, (निसं)। एसडीएम गंगाधर मीणा ने राजीव गांधी सेवा केंद्र पर गुरुवार को खैरथल स्कूल के खेल मैदान पर 12 सितंबर को आयोजित होने वाली ब्लॉक स्तरीय ओलंपिक खेलकूद प्रतियोगिता व किशनगढ़ बास के राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में होने वाली सांस्कृतिक संध्या कार्यक्रम को लेकर बैठक ली और अधिकारियों के साथ खेल मैदान व सांस्कृतिक संध्या कार्यक्रम स्थल का अवलोकन किया।

किशनगढ बास के काले खां बाग स्थित राजीव गांधी सेवा केंद्र पर एसडीएम ने 12 सितंबर को आयोजित होने वाली ब्लॉक स्तरीय ओलंपिक खेलकूद प्रतियोगिता वह सांस्कृतिक संध्या कार्यक्रम को लेकर नगर पालिका पंचायत समिति अधिकारी जनप्रतिनिधि एवं व्यापारियों के साथ भोजन पानी साफ सफाई सहित अन्य व्यवस्थाओं को लेकर चर्चा की। बैठक के उपरांत एसडीएम गंगाधर मीणा ने नगरपालिका पंचायत समिति सहित अन्य विभागों के अधिकारियों के साथ खैरथल राजकीय विद्यालय के खेल मैदान व किशनगढ बास के राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में आयोजित होने वाले कार्यक्रम स्थल का अवलोकन किया और साफ-सफाई को लेकर अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। बैठक में तहसीलदार खैरतल रामकिशन नायब तहसीलदार पवनेश शर्मा विकास अधिकारी राजकुमार बायला शिक्षा अधिकारी ओम शंकर वर्मा ईओ खैरथल पवन शर्मा किशनगढ बास नगर पालिका चेयरमैन तारामणि सिंघल प्रतिपक्ष नेता पार्षद उमेश यादव व्यापार महासंघ के अध्यक्ष परमानंद लखयाणी सहित व्यापारिक संगठनों के पदाधिकारी एवं जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

संयुक्त निदेशक ने ई-कियोस्कों का औचक निरीक्षण किया

लालसोट, (निसं)। उपखंड क्षेत्र में विभिन्न जगहों पर सूचना प्रौद्योगिकी विभाग की विभिन्न टीमों द्वारा ईमित्र कियोस्क पर दी जा रही सेवाओं का औचक निरीक्षण कर ई मित्र कियोस्क धारकों को आवश्यक दिशा निर्देश जारी किए।

सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग दौसा के संयुक्त निदेशक आर एस बैरवा के नेतृत्व में गठित दल जितेन्द्र

■ कम ट्रांजेक्शन को लेकर नाराजगी जाहिर का

कुमार, राकेश मीना प्रोग्रामर, भरत मीना सहायक प्रोग्रामर, जितेन्द्र कुमार महावर सूचना सहायक द्वारा ब्लॉक लालसोट की ग्राम पंचायतों एवं स्थानीय ई-मित्र कियोस्क और आधार केन्द्रो का औचक निरीक्षण किया गया।

निरीक्षण के दौरान आजादी का अमृत महोत्सव के आयोजन की श्रृंखला में भारत निर्माण राजीव गांधी सेवा केन्द्रों पर स्थापित ई-मित्र प्लस मशीन के माध्यम से प्रदर्शित की जा रही गांधी फिल्म का अवलोकन किया गया। भारत निर्माण राजीव गांधी सेवा केन्द्रों पर स्थापित ई-मित्र कियोस्क की समीक्षा में ई-मित्र प्लस मशीनों पर होने वाले कम ट्रांजेक्शन को लेकर नाराजगी जाहिर की एवं उपस्थित ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों को कार्यवाही करने के निर्देश दिए। साथ ही कियोस्क धारकों को राज्य सरकार द्वारा निर्धारित रेट लिस्ट को सदृश्य स्थान पर चस्पा करने, रेट लिस्ट अनुसार ही शुल्क लेने, कम्प्यूटर जनरेटेड रसीद उपलब्ध करवाने हेतु संयुक्त निदेशक द्वारा निर्देशित किया गया। वही ई मित्र कियोस्क धारकों को चेतावनी दी गई कि अगर ईमित्र किओस्क पर आने वाले लाभार्थी से सरकारी तय शुल्क से ज्यादा लिया गया तो कडी कार्रवाई की जाएगी।

सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के संयुक्त निदेशक ने ईमित्र कियोस्क का निरीक्षण आवश्यक निर्देश दिये।

विवाहिता से दुष्कर्म का प्रयास

कोटपूतली, (निसं)। कस्बे में एक 20 वर्षीय दलित वर्ग की नव विवाहिता के साथ दुष्कर्म के प्रयास व जातिसूचक शब्दों से अपमानित करते हुए मारपीट किये जाने का मामला सामने आया है। इस सम्बंध में पीड़िता ने स्थानीय थाने में मामला दर्ज करवाया है। रिपोर्ट के मुताबिक वह जयपुर की रहने वाली है, जो वर्तमान में कोटपूतली में अपने पति के साथ रह रही है। साथ ही डाबला रोड़ स्थित श्री श्याम स्टीम बॉयलर में कार्य करती है। उक्त प्रतिष्ठान का मालिक संतराम सांवरिया जाति गुर्जर ग्राम पंवाला राजपूत का रहने वाला है। आरोप है कि विगत 5 सितम्बर को वह बॉयलर देखने के लिए उसे हरियाणा के ग्राम धोलेड़ा ले गया। जहां रास्ते में उसने पीड़िता के साथ बलात्कार करने का प्रयास किया। विरोध करने पर वह प्राईवेट अंगों पर हाथ लगाने लगा। यह भी आरोप है कि आरोपी ने गाड़ी में जातिसूचक शब्दों से सम्बोधित करते हुए गंदी-गंदी गालियां भी दी। यहीं नहीं अपने दबंग जाति का व्यक्ति होने की धमकी देते हुए जबरदस्ती करने का बार-बार प्रयास किया।

स्थाई वारंटी पकड़ा

निवाई। थाना प्रभारी अजय कुमार मीणा ने बताया कि पुलिस थाने में दर्ज मामले में फरार चल रहे वांछित वारंटी आरोपी तेजवीरसिंह को गिरफ्तार किया।

सार-समाचार

जोधपुरिया पदयात्रा का स्वागत

देवली, (निसं)। देवधाम जोधपुरिया पद यात्रा का बनेठा में स्वागत किया गया। पदयात्रा में शामिल लगभग 150 पदयात्रियों के सम्मान में बालकानंद महाराज के सानिध्य में समिति के सभी धर्मों एवं विभिन्न जातियों के कार्यकर्ताओं ने जन सेवा समिति देवली उनियारा के संयोजक डॉ. विक्रम सिंह के नेतृत्व में सभी को माला पहना कर सम्मानित किया। इसके बाद सायंकाल में मालपुआ दाल के सामूहिक भोज का आयोजन हुआ, जिसमें सैकडों भक्तों एवं जनसेवा समिति के कार्यकर्ताओं ने बालकनाथ जी महाराज जी का आशीर्वाद प्राप्त किया तथा प्रसादी ग्रहण की।

समझौते को लागू करने की मांग

गोविंदगढ़/अलवर, (निसं)। राजस्थान तहसीलदार सेवा परिषद के प्रदेश स्तरीय आव्हान पर गुरुवार को गोविंदगढ तहसीलदार विनोद कुमार मीणा, नायब तहसीलदार दिनेश यादव तथा पटवारियों ने उपखंड अधिकारी रेखा मीणा को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। नायब तहसीलदार दिनेश यादव ने बताया कि राजस्व सेवा परिषद के साथ 4 नवंबर 2021 को सरकार से हुए समझौते को लागू नहीं करवाने से तहसीलदारों में काफी आक्रोश है उन्होंने बताया कि 11 माह व्यतीत होने के बावजूद सरकार उनकी मांगों को ध्यान में नहीं ला रही है जिसके चलते वह अब से सत्याग्रह आंदोलन करने को मजबूर हैं। तहसीलदार विनोद कुमार मीणा ने बताया कि सात दिवस की अवधि में कार्यवाही नहीं होती है तो फिर राजस्व कार्मिक व अधिकारी सविनय अवज्ञ पूर्ण पेन डाउन अनिश्चितकालीन कार्य बहिष्कार करने पर मजबूर हो जाएंगे जिसकी जिम्मेदारी राजस्व परिषद के प्रति उपेक्षा पूर्ण रवैया व राज्य सरकार के कमिटमेंट किया बिना के कारण होगी।

विश्व साक्षरता दिवस मनाया

गोविंदगढ़,(निसं)। नेहरू युवा केंद्र संगठन, अलवर और एक्शनऐड/यूनीसेफ के संयुक्त तत्वावधान में विश्व साक्षरता दिवस के अवसर पर बाल अधिकार विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। केंद्र के राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक अनिल कुमार ने बताया कि आज राउमा विद्यालय परिसर में कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों के मध्य विश्व साक्षरता दिवस के उपलक्ष में कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला के माध्यम से बच्चों को अपने अधिकारों के विषय में जागरूक किया गया, बाल श्रम, बाल अधिकार, कन्या भ्रूण हत्या, बाल विवाह,अनैतिक व्यवहार,विद्यार्थियों का स्कूल ड्रॉपआउट को रोकने में सहायक सरकार की विभिन्न प्रकार की प्रोत्साहन योजनाओं, छात्रवृत्ति योजना, चाइल्ड लाइन नंबर 1098 पोक्सो एक्ट 2012,विषय पर विस्तार पूर्वक व्याख्यान दिया।

नौ दिवसीय महोत्सव का समापन

खैरथल, (निसं)। कस्बे में गजानंद मित्र मंडल की ओर से आनन्द नगर में स्वामी होतुराम दरबार के पास चल रहे विशाल गणेश महोत्सव का समापन गुरुवार को किया गया। सेवादार पीकू लालवानी व ईश्वर माखीजा ने बताया कि गुरुवार को सुबह आरती के बाद गणेश जी की प्रतिमा की शोभायात्रा का नगर भ्रमण किया गया। प्रतिमा विसर्जन के लिए शोभायात्रा विभिन्न मार्गो से होती हुई नटनी का बारा अलवर में विसर्जन किया गया। महिला मंडल की प्रमुख मोहिनी लालवानी, भावना बालानी, कंचन असरानी, उषा माखीजा, सपना तीर्थानी, सुखदेव लालवानी, गिरीश वासु ,सेवक लालवानी, मिरचु हासवानी,राजेश वासु, ईश्वर माखीजा,पीकू लालवानी, श्याम लालवानी, आशीष हासवानी,गौरव लालवानी, राधाकिशन रोचवानी, पवन माखीजा,कुशल बालानी ने नाचते गाते हुए गणेश जी भगवान के जयकारों के साथ प्रतिमा का विसर्जन किया।

पशुओं के लगाया टीका

निवाई, (निसं)। वेदांता ममता हेल्थ इंस्टिट्यूट फॉर मदर एंड चाइल्ड के तत्वावधान में गुरूवार को गांव केरोद के नंदघर पर लम्पी स्कीन डिजीज बिमारी की रोकथाम हेतु शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. शिवराज शर्मा एवं सरपंच मदनलाल मीणा ने किया। डॉ शिवराज शर्मा ने लम्पी बीमारी से ग्रसित 29 पशुओं के टीकाकरण करके ग्रामीणों को लम्पी रोग की रोकथाम के लिए जागरूकता किया। इस दौरान आयुर्वेदिक उपचार की जानकारी देते हुए फिटकरी का पानी, ग्वार पाठा, सरसों का तेल, नीम की पत्तियां आदि दवाओं की जानकारी दी। इस दौरान पशु चिकित्सा अधिकारी शिवराज शर्मा, सहायक पशु चिकित्सा अधिकारी निर्मल सालोदिया, कंपाउंडर विशाल गुर्जर, कार्यकर्ता ममता बैरवा, आशा सहयोगिनी इंदिरा बैरवा, कलस्टर कोऑर्डिनेटर शिप्रा शर्मा सहित कई ग्रामीण मौजूद थे।

अवैध शराब की दुकान बंद करवाने की मांग

निवाई, (निसं)। गांव मंडालिया से गांव सीन्दरा के रास्ते में लगी हुई अवैध शराब की दुकान को बंद करवाने की मांग को लेकर ग्रामीणों ने तहसीलदार को ज्ञापन सौंपा है। तहसीलदार प्रांजल कंवर को सौंपे ज्ञापन में बताया कि गांव मंडालिया से 40 छात्राएं गांव सीन्दरा के राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में पढने जाती हैं। इसी रास्ते में करीब डेढ किलोमीटर की दूरी पर अवैध शराब की दुकान लगी हुई है जहां पर बैठे हुए शराबी फब्तियां कसते हैं जिससे छात्राओं को परेशानी उठानी पड रही है। शराबी अभद्र भाषा का उपयोग कर छात्राओं को परेशान करते हैं। शराब की दुकान को बंद करवाने के लिए ग्राम पंचायत सीन्दरा सरपंच, राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय सीन्दरा के विद्यालय प्रशासन ने भी तहसीलदार को ज्ञापन भेजा है।

राजकार्य में बाधा का आरोपी गिरफ्तार

निवाई, (निसं)। सदर थानाधिकारी कप्तान सिंह ने बताया कि 4 माह पूर्व गांव प्रतापपुरा में कुछ लोग एकराय होकर पुलिस के कब्जे से जब्त अवैध बजरी की ट्रैक्टर व ट्रॉली छुडा ले गए थे। पुलिस ने आरोपियों के विरुद्ध राजकार्य में बाधा पहुंचाने का मुकदमा दर्ज किया था। गुरुवार को राजकार्य में बाधा पहुंचाने के आरोप में फरार वांछित आरोपी छीतर पुत्र जन्शी मीणा निवासी भजाईयों की ढाणी प्रतापपुरा को गिरफ्तार किया है। इसी प्रकार बरोनी थाना एमएमआरडी एक्ट के दर्ज प्रकरण में वांछित दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। बरोनी थानाधिकारी हरिराम ने बताया कि एमएमआरडी एक्ट के दर्ज प्रकरण में एक वर्ष से फरार चल रहे आरोपी निवासी गुर्जरों का मौहल्ला वनस्थली को गिरफ्तार किया है।

कार्यालय कृषि उपज मंडी समिति ''विशिष्ट श्रेणी'' खैरथल
Email: kums.khalrth@rajasthan.gov.in T.P. No. 01460&222112
क्रमांक-1368-1377 दिनांक-07.09.2022

विज्ञप्ति

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि गौण मण्डी यार्ड बानसूर (अनाज) में निर्मित क्योस्क संख्या 01 में जल-पान व्यवस्था हेतु वर्ष 2022-23 में कार्य आदेश दिनांक से 01 वर्ष के लिए निलामी पद्धति से ठेका राशि का निर्धारण किया जाना है। इसलिए कोई भी इच्छुक व्यक्ति/संस्था निर्धारित धरोहर राशि एवं प्रार्थना-पत्र के साथ बोलीदाता की आई.डी. (आधार कार्ड/परिचय पत्र/जन आधार आदि) कार्यालय कृषि उपज मण्डी समिति, खैरथल में जमा कराकर बोली में भाग ले सकता है। क्योस्क संचालन ठेके की शर्तें कार्यालय में देखी/ज्ञात की जा सकती है। उपरोक्तानुसार क्योस्क की निलामी निम्नलिखित अनुसार दिनांक को होगी। बोली छोडने या निरस्त करने का अधिकार मण्डी समिति का होगा।

क्र. सं.	क्योस्क का विवरण	आरक्षित राशि	निर्धारित धरोहर राशि	निर्धारित निलामी दिनांक	निलामी स्थान
1	गौण मण्डी यार्ड बानसूर (अनाज) में निर्मित क्योस्क संख्या 01	76000/-	5000/-	14.09.2022 को दोपहर 12.00बजे	कार्यालय कृषि उपज मण्डी समिति खैरथल

सचिव, कृषि उपज मण्डी समिति ''विशिष्ट श्रेणी'' खैरथल
प्रशासक, कृषि उपज मण्डी समिति ''विशिष्ट श्रेणी'' खैरथल
(सुरेन्द्र कुमार सैनी) सचिव, कृषि उपज मण्डी समिति कृषि उपज मण्डी समिति

संक्षिप्त

बलौदा फिर अध्यक्ष बने

रींगस, (निसं)। श्री सूर्य मण्डल समाज सेवा समिति के चुनावों में एक बार फिर से गुरूजी हरिप्रसाद बलौदा अध्यक्ष निर्वाचित घोषित हुए हैं। वे लगातार तीसरी बार अध्यक्ष बने हैं। चुनावों में उपाध्यक्ष पोखर मल कुमावत, महामंत्री श्रवण कुमार सैन, कोषाध्यक्ष कैलाश चन्द्र छीपा, व्यवस्थापक प्रकाश सारस्वत, घनश्याम कुमावत, सांस्कृतिक मंत्री बाबू लाल जांगिड़, भण्डार मंत्री बजरंग लाल बुला, राहुल अग्रवाल तथा प्रचार मंत्री हिमांशु पारीक सहित कार्यकारिणी में 11 अन्य सदस्य शामिल किये गये हैं।

छात्रवृत्ति के आवेदन शुरू

फुलेरा, (निसं)। राठी फाउण्डेशन की छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत इस वर्ष भी 3.5 लाख रुपये की छात्रवृत्ति का वितरण होगी। ट्रस्टी कैलाश बैनाडा ने बताया कि पिछले वर्ष में उच्च अध्ययनार्थ एवं तकनीकी (आईटीआई) कोर्स में लाभान्वित लाभार्थी एवं इस वर्ष के ऐसे विद्यार्थी जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं और जिनका उच्च अध्ययन/ आई टी आई में चयन हुआ हो वह उक्त छात्रवृत्ति के आवेदन कर सकते हैं। वहीं आगे बताया कि सभी आवेदक राजबाजार स्थित फूलचन्द धर्मचन्द जैन(बैनाडा जी) की दुकान से प्राप्त कर सकते हैं। गौरतलब है कि आवेदन जमा कराने की अंतिम तारीख 15 सितम्बर है।

दो जेब कतरों को पकड़ा

मालपुरा, (निसं)। मालपुरा थाना पुलिस ने भीड़ में जेब तराशी की वारदातों को अंजाम देने के दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। थानाधिकारी कैलाश विश्नोई ने बताया कि बीते दिन बुधवार को मालपुरा में निकाली गई कर्नल किरोड़ी सिंह बैंसला की अस्थि कलश विसर्जन यात्रा के दौरान भीड़ में शामिल दो शातिर युवक अजय भाट व अर्जन भाट निवासी बूंदी को ड्रॉन कैमरों की नजर से चिन्हित कर दबोच दोनों आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

सीकर सांसद का स्वागत किया

कोटपूतली, (निसं)। सीकर सांसद स्वामी सुमेधानंद सरस्वती का कोटपूतली आगमन पर राजमार्ग स्थित भाजपा कार्यालय पर कार्यकर्ताओं ने वरिष्ठ भाजपा नेता शंकर लाल कसाना के नेतृत्व में स्वागत किया। इस दौरान कसाना ने प्रतीक चिन्ह भेंटकर सांसद का अभिनन्दन किया। इस मौके पर रोशन हवलदार, भूपेन्द्र यादव, इंजी. विक्रम कसाना, अशोक आर्य समेत अन्य मौजूद थे।

एक माह में अनुकंपा नियुक्ति दी

श्रीमाधोपुर, (निसं)। नगर पालिका श्रीमाधोपुर में विधायक दीपेंद्र सिंह शेखावत की अनुशंसा पर तत्काल प्रभाव से बिना विलंब करते हुए सफाई कर्मचारी पद पर इन्द्र लाल वाल्मिकी पुत्र राकेश कुमार को मृतक आश्रित को एक महीने के भीतर पार्षद मनोज बीवाल के प्रयास से नगर पालिका ने अनुकंपा नियुक्ति दी है। इस मौके पर पार्षद मनोज बीवाल ने बताया कि नगर पालिका अधिशासी अधिकारी रजत जैन की मेहनत से कर्मचारी को हक मिल पाया है।

उपखंड स्तरीय जनसुनवाई आयोजित

श्रीमाधोपुर, (निसं)। प्रशासनिक सुधार एवं समन्वयक विभाग जयपुर एवं जिला कलेक्टर सीकर से प्राप्त निर्देशों की पालना करते हुए आमजन की परिवेदना, समस्याओं की सुनवाई कर त्वरित समाधान हेतु गुरुवार को पंचायत समिति श्रीमाधोपुर के वीसी रूम में उपखंड स्तरीय जनसुनवाई का आयोजन किया गया। बताया गया है कि जनसुनवाई में पेयजल, विद्युत, राजस्व, पंचायती राज विभाग से संबंधित समस्याओं की सुनवाई की गई व उनके शीघ्र निस्तारण हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया। जनसुनवाई में कुल 10 प्रकरण प्राप्त हुए जिनमें से 3 प्रकरणों का मौके पर ही निस्तारण किया गया, एक प्रकरण सार्वजनिक निर्माण विभाग के सहायक अभियंता, एक प्रकरण जलदाय विभाग के सहायक अभियंता ,एक प्रकरण में सहायक अभियंता अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड, 2 प्रकरणों में विकास अधिकारी पंचायत समिति श्रीमाधोपुर, एवं दो प्रकरणों में तहसीलदार को शीघ्र निस्तारण हेतु निर्देश दिए जाकर संबंधित विभाग को ऑनलाइन प्रेषित किए गए। संपत राम सैनी विकास अधिकारी पंचायत समिति श्रीमाधोपुर, मालीराम रेगर मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी सहित अन्य उपखंड स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे।

सवारियों से भरे ओवरलोड वाहन हादसों को न्यौता दे रहे हैं

पावटा, (निसं)। शहर में यातायात व्यवस्था खस्ताहाल है, ओवरलोडिंग वाहनों पर भी कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। जिससे यात्रियों की जान को खतरा बना रहता है।

गौरतलब है कि बस जीप, ऑटो में क्षमता से ज्यादा सवारियां बैठने पर पहले भी कई घटनाएं घट चुकी हैं लेकिन ओवरलोड करके वाहनों को चलाने वालों पर पुलिस की कार्रवाई शून्य है। शहर व ग्रामीण क्षेत्रों में जाने वाले बस, जीप, ऑटो ओवरलोड होकर

- वाहन चालक मनमर्जी से भर रहे हैं सवारियां
- शहर में यातायात व्यवस्था खस्ताहाल

जाते हैं। वाहन चालक ज्यादा रूपए कमाने के लिए लोगों की जान जोखिम में डाल रहे हैं।

वाहनों में ऐसी कोई जगह नहीं बचती है जहां यात्री न बैठाते हों। यहां तक कि चालक के दोनों तरफ एक-एक सवारी बैठती है और पीछे, बाजू में पायदानों, बसों की छत पर बैठकर लोग

पावटा क्षेत्र में सवारियों को ओवरलोड बैठाकर वाहन चालक हादसों को न्यौता दे रहे हैं।

यात्रा करते हैं। शहर में बस, स्कूल वाहनों में भी ओवरलोडिंग की जाती है। उनमें भी तय सीट से अधिक यात्री और बच्चों को बैठाया जाता है। यह नजारा पुलिस भी देखती रहती है, लेकिन कार्रवाई नहीं की जाती। सवारियों ने बताया कि वाहनों में यात्रा करना मजबूरी है, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में जाने के लिए अन्य साधन नहीं है। अधिक सवारियां भर जाने के बाद यात्रा करने में डर लगता है।

शहर की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में जाने वाले वाहन चालक लापरवाही बरतते हैं। क्योंकि यह एक बार में ही ज्यादा से ज्यादा सवारियां ले जाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में रोड भी उबड-खाबड होते हैं जहां हादसा होने की संभावना ज्यादा रहती है।

दो बाइक व ट्रैक्टर की बैट्री चोरी

मालपुरा, (निसं)। मालपुरा शहर सहित ग्रामीण क्षेत्र में पुलिस की निष्क्रियता का फायदा उठाते हुए शातिर चोर एक के बाद एक चोरी की वारदातों को अंजाम दे पुलिस की सजगता के दावों की पोल खोल रहे हैं।

गुरूवार को शहर में दो अलग-अलग स्थानों से दिनदहाड़े मोटरसाईकिल चोरी की वारदात को अंजाम दिया वहीं तो चान्दसेन गांव में ट्रेक्टर की बैटरियां व टैप रिकॉर्डर सहित डीजल चोरी की वारदात होना सामने आया। मालपुरा शहर निवासी मीठालाल जैन ने रिपोर्ट में बताया कि गुरूवार की दोपहर बस स्टैण्ड के बाहर बैंक के पीछे गोदाम के बाहर मोटरसाईकिल खड़ी कर कुछ देर बाद ही गोदाम से वापस आया तो मोटरसाईकिल गायब मिली। वहीं दूसरी चोरी की वारदात भी मालपुरा शहर के सरकारी अस्पताल परिसर में हुई जहां से रमेश चौधरी निवासी केरिया की स्पलेण्डर मोटरसाईकिल चोरी हुई है। चान्दसेन गांव में जगदीश सैनी के मकान के बाहर खड़े ट्रेक्टर से बैट्री, स्पीकर व डीजल चोरी की वारदात हुई। दो थाना क्षेत्रों में अलग-अलग स्थानों से हुई तीन चोरी की वारदातों के बावजूद पुलिस के कानों पर जूं तक नहीं रैंकी। बीते दो माह में हुई दर्जनों चोरी की वारदातों के बावजूद एक भी वारदात में लिप्त चोरों की गिरफ्तारी नहीं होने से अब लोगों में पुलिस की कार्यप्रणाली को लेकर गहरा रोष देखा जा रहा है।

जिला प्रमुख को ज्ञापन दिया

टोंक, (निसं)। जिला परिषद (डीआरडीए) कर्मचारी संघ ने पदोन्नति प्रक्रिया में जिला परिषद ग्रामीण विकास प्रकोष्ठ के कर्मचारियों को सम्मिलित करने की मांग को लेकर जिला प्रमुख सरोज नरेश बंसल को ज्ञापन दिया।

संघ के नवीन कुमार, मोहम्मद जाहिद खान, बिशनलाल, बलवीर सिंह, पवन कनोजिया ने बताया कि जिला प्रमुख को ज्ञापन देकर अवगत कराया है कि निदेशक पंचायती राज विभाग, राजस्थान का आदेश क्रमांक 2169 दिनांक 18.03.2022 द्वारा पंचायती राज विभाग में कार्यरत मंत्रालयिक संवर्ग के कर्मचारियों के पदो के संबंध में वित्त विभाग द्वारा तय किए गए मानदंडानुसार पदों का पुर्नगठन कर संस्थापन अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी एवं अतिरिक्त प्रशासनिक के नवीन पद सृजित किए गए है साथ ही सहायक प्रशानिक अधिकारी, वरिष्ठ सहायक एवं कनिष्ठ सहायकों के पूर्व सृजित पदों में वृद्धि की गई है। यहां यह उल्लेखनीय है कि तत्कालीन जिला ग्रामीण विकास अभिकरण के कर्मचारियों का जिला परिषदों में विधिवत विलय किए जाने व इन

- पदोन्नति प्रक्रिया में जिला परिषद ग्रामीण विकास प्रकोष्ठ के कर्मचारियों को सम्मिलित करने की मांग

कर्मचारियों हेतु जिला स्तर पर ग्रामीण विकास प्रकोष्ठ का गठन किए जाने के आदेश अतिरिक्त मुख्य सचिव, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग, राज के आदेश क्रमांक 3851 दिनांक 31.12.2012 द्वारा जारी किए गए थे। साथ ही विलय होने वाले कर्मचारियों के पद जिला स्तर पर जिला परिषद (ग्रामीण विकास प्रकोष्ठ) में ही माने जाने के आदेश प्रसारित किए गए थे। आदेश के बिन्दु स. 3 पर अंकित किया गया है, विलय होने वाले डीआरडीए कर्मचारियों की वरिष्ठता जिला परिषदों में पूर्व से कार्यरत पंचायती राज के कर्मचारियों से अलग रखी जायेगी व इनकी पदोन्नति ग्रामीण विकास प्रकोष्ट के रिक्त / रिक्त होने वाले पदों पर की जावेगी।

पर्याप्त पेयजल आपूर्ति नहीं होने पर ज्ञापन दिया

टोंक, (निसं)। नगर परिषद के वार्ड 41 के घोसियों का मौहल्ला मुबारक मंजिल पांचबत्ती क्षेत्रवासियों ने पर्याप्त पेयजल आपूर्ति नहीं होने पर पार्षद सुनील बंसल के नेतृत्व में जलदाय विभाग के सहायक अभियंता को ज्ञापन देकर पेयजल की नियमित आपूर्ति कराने की मांग की है।

पार्षद सुनील बंसल, याकूब अली, मोहनी, माया, संतोष, कांता, सुनिता,

- 6 माह से पानी की आपूर्ति पर्याप्त एवं नियमित रुप से नहीं हो पा रही है

पवन, छोटूलाल, राजकुमारी, लक्ष्मी, फूला, सुशीला, मुकेश कुमार, भूरी, पार्वती, राजू, अजय आदि ने दिए ज्ञापन में बताया कि वार्ड 41 के घोसियों का मौहल्ला मुबारक मंजिल पांचबत्ती में

पर्याप्त पेयजल आपूर्ति नहीं होने पर पार्षद सुनील बंसल के साथ वार्ड वासी सहायक अभियंता से मिले।

विगत 6 माह से पानी की आपूर्ति पर्याप्त एवं नियमित रुप से नहीं हो पा रही है। जिसके लिए मौहल्लेवासियों को पीने के पानी के लिए भटकना पड़ रहा है।

इसको लेकर पूर्व में 181 संपर्क पोर्टल पर शिकायत की थी और जलदाय विभाग को लिखित में शिकायत दी थी, जिस पर कोई समाधान नहीं हुआ। उन्होंने मांग की है कि पूर्व में काटी गई पेयजल लाइन को पुन: सुचारु करवाकर पेयजल आपूर्ति नियमित की जाए।

उपखंड अधिकारी ने पंचायत स्तरीय जनसुनवाई की

पावटा, (निसं)। पंचायत समिति पावटा के सभागार में गुरुवार को उपखंड अधिकारी राजवीर सिंह के मुख्य आतिथ्य व विकास अधिकारी राकेश कुमार आर्य व प्रधान पूजा चौधरी की अध्यक्षता में जनसुनवाई की बैठक आयोजित की गई।

बैठक में उपस्थित ग्राम सरपंचों व पंचायत समिति सदस्यों सहित पावटा प्रधान प्रतिनिधि जगन चौधरी ने गौवंश में फैल रहे लंपी स्किन रोग के उपचार और रोकथाम के संबंध में व इस गंभीर बीमारी से उनकी मौत हो जाने पर उन्हें दफनाने के लिए ग्राम पंचायतों में संसाधनों की व्यवस्था नहीं होने की समस्या से अवगत करवाया व उसके निस्तारण की बात कहीं। वहीं बिजली

- बिजली, पानी व लंपी बीमारी से संबंधित समस्याओं से अवगत कराया

और पानी की समस्याओं के समाधान के के लिए टैंकरों की व्यवस्था करवाने की बात कही। डामर रोड पर जितनी भी तार बाउंड्री है सबको दुरुस्त किया जाए। ग्राम पंचायत लाडाकाबास में चरागाह भूमि का सीमा ज्ञान कर उसे अतिक्रमण मुक्त करवाने व पावटा नहर पर हो रहे अतिक्रमणों को हटाने को लेकर अधिकारियों से वार्ता की गई।

जिस पर उपखंड अधिकारी राजवीर सिंह ने कहा कि पहली प्राथमिकता है कि लोगों को बिजली और पानी की समस्या नहीं रहे और समस्याओं के समाधान के लिए अधिकारी और कर्मचारी सतर्क रहें। साथ ही उपखंड अधिकारी ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि कोई भी शिकायत रोके नहीं और लोगों के कार्य करें। इस मौके पर तहसीलदार ओमप्रकाश गुर्जर, विकास अधिकारी विकास कुमार, लाडाकाबास पूर्व सरपंच मदन यादव, कैरोडी सरपंच उदयवीर सिंह, बडनगर सरपंच रामकरण यादव, चौबाला सरपंच प्रतिनिधि राजू धनकड, खेलना सरपंच राजकुमार, सुजातनगर सरपंच प्रतिनिधि हरिराम, बुचारा भागीरथ गुर्जर, वीरतेजाजी नगर सरपंच प्रतिनिधि अमित गजराज सहित विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

पावटा में लुटेरों व चोरों का खौफ

पावटा, (निसं)। शहर में लगातार प्रागपुरा थाना पुलिस गश्त कर रही है। वहीं जयपुर ग्रामीण पुलिस अधीक्षक मनीष अग्रवाल के निर्देशन में कोटपुतली अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विद्याप्रकाश के वृत्ताधिकारी वृत्त कोटपुतली डॉ. संध्या यादव के सुपर विजन में अपराधियों के खिलाफ धरपकड अभियान चलाया जा रहा है। इसके बावजूद लुटेरों व चोरों के हौंसले कम होने का नाम नहीं ले रहे हैं।

पावटा में चोरों का खौफ इतना बढ़ गया है कि ग्रामीण रात भर जागकर पहरा देने को मजबूर हैं। एक ओर जहां पुलिस प्रशासन अपराधियों पर अंकुश लगाने के दावे कर रही है। वहीं बेखौफ अपराधी न सिर्फ उनके दावों की पोल खोल रहे हैं। बल्कि लूट व चोरी की घटनाओं को लगातार अंजाम दे कर

- ग्रामीण रात भर जागकर पहरा देने को मजबूर

उन्हें चुनौती दे रहे हैं।

आलम यह है कि चोरों के खौफ से स्थानीय ग्रामीणों में दहशत का माहौल बना हुआ है। हर किसी को अपने घर परिवार की चिंता सता रही है। यही वजह है कि ग्रामीणों ने चोरों के खिलाफ खुद मोर्चा खोल दिया है। प्रागपुरा थाना क्षेत्र के पावटा में पिछले एक सप्ताह से चोरों का खौफ बरकरार है। ग्रामीणों में चोरों का खौफ इस कदर है कि अब ग्रामीण व महिलाए भी पुलिस और चौकीदार के साथ रात को जागकर गांव की गली-गली में पहरा देना शुरू कर दिया है।

ट्रांसफार्मर चोरी की अंतरजिला गैंग का पर्दाफाश

चौंमू/कालाडेरा, (निसं)। जयपुर ग्रामीण पुलिस अधीक्षक मनीष कुमार अग्रवाल के द्वारा जिले में हो रही सिलसिले वार चोरी, नकबजनी व विद्युत डीपी चोरी की घटनाओं पर रोकथाम के लिए विशेष अभियान चलाकर अंकुश लगाने के आदेश दिए थे। जिस पर कालाडेरा थाने में दर्ज मुकदमा नंबर 136/ 2022 को लेकर जयपुर ग्रामीण अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) धर्मेन्द्र यादव वृताधिकारी वृत गोविन्दगढ़ राजेश ढाका के सुपर विजन में कालाडेरा थाना प्रभारी हरबेन्द्र सिंह के नेतृत्व में एक विशेष टीम गठित की गई।

टीम के द्वारा दर्ज प्रकरण में आम सूचना संकलन कर ट्रांसफार्मर चोरी करने वाली अंतरजिला गैंग का पर्दाफाश कर गैंग के सदस्य महेश बावरिया व सोनू बावरिया को गिरफ्तार कर अनुसंधान जारी है।

कालाडेरा थाना प्रभारी हरबेन्द्र सिंह ने बताया कि 4 जुलाई 2022

कालाडेरा थाना पुलिस ने ट्रांसफार्मर चोरी करने वाले अंतरजिला गैंग का पर्दाफाश कर दो जनों को गिरफ्तार किया।

को परिवादी संजय कुमार यादव कनिष्ठ अभियंता विद्युत डोला का बास ने कालाडेरा थाने में उपस्थित होकर एक लिखित रिपोर्ट इस आशय की पेश की कि 20 जून 2022 को रात्रि को अज्ञात व्यक्तियों द्वारा मोहित नगर कॉलोनी अनोपपुरा रोड से सिंगल फेस ट्रांसफार्मर को नीचे गिरा दिया व दिनांक 2 जुलाई 2022 को रात्रि को अज्ञात व्यक्तियों द्वारा विमलपुरा गांव दूध डेरी के पास से सिंगल फेस ट्रांसफार्मर को नीचे गिरा कर ट्रांसफार्मर को क्षतिग्रस्त कर ट्रांसफार्मर के अन्दर से आयल व कॉपर को चोरी कर लिया गया है जिससे निगम को काफी नुकसान हुआ है। जिसके बाद ट्रांसफार्मर चोरी करने वाली अन्तरजिला गैंग का पर्दाफाश कर गैंग के सदस्य मुल्जिम महेश बावरिया व सोनू बावरिया को गिरफ्तार किया गया।

मुल्जिमान दो या तीन बाइकों से दिन में डीपी कहां लगी हुई है कि रेकी करते और रात के समय में आकर एक बाइक से ध्यान रखकर दूसरी बाइक से घटना को अंजाम देते हुए ट्रांसफार्मर का माल निकाल कर तीसरी गाड़ी को सुपुर्द कर देते व दूसरी वारदात को अंजाम देकर स्वयं भी निकल जाते तथा डीपी नहीं मिलने पर मोटरसाइकिल की चोरी कर ले जाते।

अमृत महोत्सव पर व्याख्यान

कोटपूतली, (निसं)। कस्बे के निकटवर्ती ग्राम नांगल पण्डितपुरा स्थित श्री गणेश पब्लिक सीनियर सैकण्डरी स्कूल में आजादी के अमृत महोत्सव पर व्याख्यान का आयोजन हुआ।

अध्यक्षता वरिष्ठ भाजपा नेता व समाजसेवी शंकर लाल कसाना ने की। मुख्य अतिथि व मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत सह शारीरिक शिक्षण प्रमुख मोहन सिंह रहे।

जिला प्रचारक राकेश कुमार व नगर प्रचारक विशाल ने भी स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान पर प्रकाश डाला। मुख्य वक्ता ने राजस्थान के क्रांतिकारियों विजय सिंह पथिक, गोविंद गुरु, सागरमल गोपा, मोतीलाल तेजावत, कुशाल सिंह, केसरी सिंह बारेठ, भोगीलाल पंड्या आदि के योगदान पर विस्तार से व्याख्यान दिया।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान, भारत माता की जयघोष के साथ हुआ। इस दौरान व्यवस्थापक सुवालाल गुर्जर, प्रधानाचार्य घनश्याम गुर्जर, व्याख्याता कंवर सिंह, आशीष शर्मा, महेंद्र कुमार, भगवती प्रसाद, सतीश धालीवाल समेत अन्य मौजूद रहे।

सार-समाचार

राष्ट्रीय पोषण माह का आयोजन

कोटपूतली, (निसं)। महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से नाटापन, दुबलापन और कुपोषन की दर में कमी लाने व गर्भवती महिला एवं बच्चों के पोषण में सुधार के लिए 5 वां राष्ट्रीय पोषण माह का आयोजन पंचायत समिति परिसर में किया जा रहा है। जिसमें सप्ताह के प्रथम दिन समुदाय आधारित कार्यक्रम के अंतर्गत सुपोषण दिवस को उत्सव का रूप देते हुए प्रारंभ किया गया। पोषण माह के तहत सभी केंद्रों पर सुपोषण दिवस का आयोजन किया गया। ग्राम स्तर पर गर्भवती महिला, धात्री माता व बच्चों के साथ किशोर-किशोरियों के रक्ताल्पता, स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजन करके आयरन फोलिक एसिड और कृमि नाशक गोलियों का वितरण किया गया। स्तनपान को बढ़ावा देने के लिए आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा धात्री माताओं को उचित परामर्श दिया गया। सीडीपीओ सतपाल यादव ने बताया कि आज के युग में शिशुओं को उचित प्रकार से स्तनपान और सही मात्रा में स्तनपान नहीं करवाने से ही स्तन कैंसर जैसी गंभीर समस्या आ रही है। महिला पर्यवेक्षक वीणा सेहरा ने भी महिलाओं में मधुमेह रक्ताल्पता और एनीमिया आदि रोग के लक्षणों से अवगत कराया। प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के अंतर्गत श्रेष्ठ कार्य करने वाली कार्यकर्ताओं को परियोजना स्तर पर सम्मानित किया गया।

एसडीएम ने सुनी लोगों की फरियाद

नारायणपुर, (निसं)। ग्राम पंचायत मिनिसचिवालय में गुरुवार को उपखंड स्तरीय जनसुनवाई एसडीएम सुनीता मीणा की अध्यक्षता में आयोजित हुई। जनसुनवाई में एसडीएम मीणा ने लोगों की फरियाद सुनी और समस्याओं के निस्तारण के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। एसडीएम मीणा ने बताया कि जनसुनवाई में कुल 13 परिवेदनाएं आई, जिसमें बिजली, पुलिस विभाग, पंचायतीराज और अतिक्रमण से बंद रास्तों को खुलवाने की शिकायत मिली है। वहीं गौरक्षकों ने प्रशासन द्वारा बनाया गया संक्रमित गौवंशों को रखने के लिए आइसोलेशन वार्ड में सुविधाओं का अभाव बताया। इसको लेकर दर्जनों गौरक्षकौं ने एसडीएम को ज्ञापन दिया है। इस पर एसडीएम ने संबंधित विभाग को जल्द सुविधाओं व्यवस्थित करने के निर्देश दिए हैं। इस मौके नायब तहसीलदार शिवानी शर्मा, एसीबीओ इन्द्राज गुर्जर, जलदाय विभाग एईएन युवराज सैनी, एबीडीओ गिर्राज मीणा, वरिष्ठ पशु चिकित्सक रमेश चन्द वर्मा, कनिष्ठ अभियंता कैलाश चन्द, पीडब्ल्यूडी किशन लाल शर्मा सहित सभी विभागों के अधिकारी और कर्मचारी मौजद थे।

51 गणेश प्रतिमाओं का विसर्जन किया

मालपुरा, (निसं)। पूज्य सिंधी समाज द्वारा एवं गणेश मित्र मंडल के तत्वावधान में गुरूवार को सिंधी समाज के घर-घर में विराजित सभी 51 गणेश प्रतिमाओं का ट्रक स्टैण्ड सिंधी धर्मशाला से जूलूस निकाला गया। सिंधी गानों पर नाचते-गाते महिला-पुरूषों ने गणपत्ति बप्पा के जयकारे लगाते हुए पुरानी तहसील गोवला घाट पहुंचे। ब्रह्म तालाब के घाट पर पूजा अर्चना कर गणपत्ति बप्पा मोर्या अगले बरस तू जल्दी आ के जयकारों के साथ सभी गणेश प्रतिमाओं का विसर्जन किया गया। हिन्दु समरसत्ता मंच एवं गणेश विसर्जन आयोजन समिति के तत्वाधान मे आज दोपहर बाद शहर के अलग-अलग स्थानों पर विस्थापित की गई 100 से अधिक गणेश प्रतिमाओं की विशाल शोभायात्रा निकाल ब्रह्म सरोवर में विसर्जन किया जायेगा।

बदमाशों का साथ देने वालों को गिरफ्तार करने की मांग

टोंक, (निसं)। ग्राम बनेठा में एक युवक के गोली मारने वाले बदमाशों का साथ देने वाले आरोपियों को गिरफ्तार करने की मांग को लेकर माली समाज के लोगों ने जिला कलेक्टर को ज्ञापन दिया। माली समाज के कैलाश, पप्पूलाल, गोपाल माली, अजय सांखला, पवन सैनी, तुलसीराम, मुकेश, बाबू, फूंदीलाल, रमेश, उमाशंकर सैनी, सीताराम, छीतर, दीपक आदि ने ज्ञापन में बताया कि 3 सितम्बर को बनेठा में सागर पुत्र फूंदीलाल पर गोली चलाई जिससे गोली जांघ पर लगने से वह घायल हो गया। आशाराम गुर्जर, मनकेश गुर्जर, लोकेश गुर्जर बदमाशों को सायर मीना, अशोक मीना सरदापुरा, रामलाल सैनी बनेठा करीब 10-15 दिनो से मारने की रैकी कर रहे थे, क्योकि सागर द्वारा अवैध बजरी भरे डम्परों की शिकायत करता था। जिस पर एक माह पहले भी सरियों व लाठियों से हमला किया था। परन्तु पुलिस से मिलीभगत होने के कारण उल्टा पीड़ित को रातभर पुलिस थाने में दवाई पट्टी करवाकर रखा गया और न ही एफआईआर दर्ज की गई। उन्होंने मांग की है कि इस मामले की सही जांच कर सभी आरोपियों को गिरफ्तार किया जाए।

रींगस के 6 होनहार डॉक्टर बनेंगे

रींगस, (निसं)। शहर के 6 छात्रों का नीट परीक्षा में सलेक्शन हुआ है। इनमें तीन छात्र स्वर्णिम क्लासेज के भी शामिल हैं। सीसीए शिक्षण संस्थान समूह द्वारा संचालित स्वर्णिम कैरियर इंस्टिट्यूट के नीट 2022 के परिणाम संस्थान के लिए खुशखबरी लेकर आये हैं। संस्थान के 11 में से तीन होनहारों ने बाजी मार ली। संस्थान के निदेशक डॉ. अजय सक्सैना ने बताया कि कोरोना आदि की वजह से इस बार उनकी संस्थान में 11 स्टूडेंट थे। इनमें से तीन टीना पुत्री जगदीश प्रसाद निठारवाल, तुलसी पुत्र लक्ष्मण स्वरूप शर्मा तथा हर्षित पुत्र महेन्द्र कुमार महला शामिल हैं। इस मौके पर संस्थान की ओर से चयनित विद्यार्थियों के परिजनों का साफा व माला पहना कर स्वागत किया गया। वही रींगस के तीन अन्य छात्रों ने भी अपना जलवा बिखेरा है। इनमें पुलकीत शर्मा पुत्र विष्णु चुलेट, कशीश शर्मा पुत्र पुरूषोतम बागडा तथा कुमावत भी शामिल हैं।

पंचम योग शिविर नियमित जारी

कोटपूतली, (निसं)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से समर्थ सशक्त अभियान कोटपूतली के तहत विश्व योग दिवस से प्रारम्भ योग शक्ति कार्यक्रम का पंचम योग शिविर गुरूवार को तीसरे दिन ग्राम बेरी बॉध में आयोजित हुआ। योगशक्ति कार्यक्रम में योगाचार्य राजेश लखेरा ने ग्रामवासियों को योग व प्राणायाम का प्रशिक्षण दिया। अभियान के संयोजक मुकेश गोयल ने बताया कि योगशक्ति कार्यक्रम के ग्राम बेरी बॉध में तीसरे दिन आयोजित इस योग शिविर में ग्रामीण बढ-चढकर हिस्सा ले रहे है। ग्राम बेरी बॉध में 10 सितम्बर तक चलने वाले योग शक्ति कार्यक्रम में लोग स्वत: ही प्रात: जल्दी उठकर सम्मिलित हो रहे है।

खेल जगत

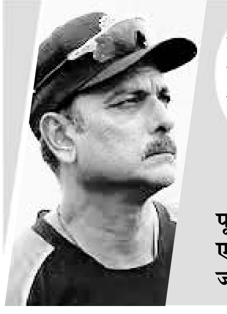

मैं पूरी तरह से सरप्राइज हूं कि इतने बड़े टूर्नामेंट के लिए मोहम्मद शमी को भारतीय टीम में क्यों नहीं चुना गया। -रवि शास्त्री

पूर्व हेड कोच, मोहम्मद शमी को एशिया कप में शामिल नहीं किये जाने पर।

आज का खिलाड़ी — रवि शास्त्री

ओलंपिक रजत पदक विजेता पहलवान रवि दहिया की नजरें आगामी विश्व चैंपियनशिप और अगले साल चीन के हांगझोऊ में होने वाले स्थगित एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीतने की है। रवि 10 सितंबर से बेलग्रेड में शुरू होने वाले विश्व चैम्पियनशिप की तैयारियों के लिए रूस में प्रशिक्षण ले रहे हैं। बर्मिंघम में राष्ट्रमंडल खेलों में 57 किग्रा वर्ग में स्वर्ण पदक जीतने वाले रवि ने एक विज्ञप्ति में कहा, खिलाड़ी के रूप में मेरे जीवन का एकमात्र उद्देश्य अपने देश का नाम रोशन करना है। मेरा तात्कालिक लक्ष्य विश्व चैंपियनशिप और एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीतना है।''

क्या आप जानते हैं ?... जिम्माब्वे के तातेदु ताएब ने मई 2004 में श्रीलंका के विरुद्ध अपनी टीम की कप्तानी करके सबसे कम उम्र का टेस्ट कप्तान बनने का रिकॉर्ड अपने नाम किया।

कोहली का विराट शतक, भारत ने जीत के साथ समाप्त किया एशिया कप अभियान

दुबई, 8 सितंबर। भारत ने विराट कोहली (122 नाबाद) के बहुप्रतीक्षित शतक के बाद भुवनेश्वर कुमार (चार रन, पांच विकेट) की घातक गेंदबाजी की बदौलत अफगानिस्तान को एशिया कप के सुपर-4 मैच में गुरुवार को 101 रन से मात दी। भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 212 रन बनाये थे, जिसके जवाब में अफगानिस्तान पूरे ओवर खेलकर 111 रन ही बना सकी।

कोहली ने आखिरकार अपना 71वां सैकड़ा जमाते हुए 61 गेंदों पर 12 चौकों और छह छक्कों की बदौलत 122 रन बनाये। यह टी20 अंतरराष्ट्रीय में कोहली का पहला शतक है। कोहली का यह अंतरराष्ट्रीय शतक 1020 दिनों के लंबे इंतजार के बाद आया है, जबकि उनका आखिरी शतक 23 नवंबर 2019 को बंगलादेश के खिलाफ खेले गये टेस्ट मैच में आया था।

यह फाइनल की दौड़ से पहले ही बाहर हो चुकी भारतीय टीम का एशिया कप 2022 में आखिरी मैच था, जिसे जीतकर उसने अपने अभियान को समाप्त किया।टॉस हारने के बाद पहले बल्लेबाजी करते हुए भारत को केएल राहुल और विराट कोहली ने शानदार शुरुआत दिलायी और पहले विकेट के लिये 119 रन जोड़े। राहुल ने आउट होने से पहले 41 गेंदों पर छह चौकों और दो छक्कों की बदौलत 62 रन बनाये।

तीसरे स्थान पर बल्लेबाजी करने उतरे सूर्यकुमार यादव ने पहली गेंद पर छक्का लगाया लेकिन दूसरी गेंद पर आउट होकर पवेलियन लौट गये। इसके बाद विकेट पर आये ऋषभ पंत ने कोहली का साथ दिया और दोनों ने चौथे विकेट के लिये 42 गेंदों पर 87 रन की साझेदारी की। पंत ने इस साझेदारी में सिर्फ 20 रन बनाये। कोहली ने 19वें ओवर की दूसरी गेंद पर छक्का जड़कर 84 पारियों बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 100 रन का आंकड़ा छुआ।

कोहली ने आखिरी ओवर में दो छक्के और एक चौका लगाकर भारत को 20 ओवर में 212 रन तक पहुंचाया।अफगानिस्तान कोहली की पारी से उभरी भी नहीं थी कि दूसरी पारी में भुवनेश्वर कुमार ने उनके ऊपरी क्रम को ढेर कर दिया। भुवनेश्वर ने नयी गेंद से अपना कमाल दिखाते हुए एक मेडेन सहित चार ओवर डालकर पांच विकेट लिये।

भुवनेश्वर ने हज़रतुल्लाह ज़ज़ई, रहमानुल्लाह गुरबाज़ और नजीबुल्लाह ज़ादरान को शून्य पर आउट किया, जबकि करीम जन्नत को दो रन पर स्लिप में कैच करवाया। अर्शदीप ने भुवनेश्वर का साथ देते हुए अफगानिस्तान के कप्तान मोहम्मद नबी को आउट किया, जिसके नतीजे में छह अफगान बल्लेबाज 21 रन के स्कोर पर ही पवेलियन लौट गये।

इब्राहिम ज़ादरान ने अफगानिस्तान के लिये सर्वाधिक 64 (59) रन बनाये और अफगानिस्तान की पूरे 20 ओवर खेलने में मदद की। मुजीब उर रहमान ने 18 (13) रन बनाये जबकि राशिद खान ने 15 (19) रन का योगदान दिया। दिनेश कार्तिक ने 20वां ओवर डालकर 18 रन दिये लेकिन यह अफगानिस्तान की जीत के लिये काफी नहीं था और भारत ने 101 रन की विशाल विजय हासिल की। भुवनेश्वर के पंजे के अलावा अर्शदीप, रविचंद्रन अश्विन और दीपक हुड्डा को भी एक-एक विकेट हासिल हुआ।

बायर्न ने चैम्पियंस लीग में इंटर मिलान को हराया

मिलान, 8 सितंबर। बायर्न म्यूनिख ने सैन सिरो में इंटर मिलान को 2-0 से हराकर चैंपियंस लीग फुटबॉल टूर्नामेंट का अपना पहला मैच जीतने की परंपरा को जारी रखा। लेरॉय साने ने बायर्न को 25वें मिनट में बढ़त दिलाई और दूसरे गोल में भी उनकी भूमिका रही। इंटर के डिफेंडर डेनिलो डिएम्ब्रोसियो ने 66वें मिनट में सासने के शॉट पर गेंद को अपने ही गोल में डाल दिया। यह लगातार 19वीं बार है जब जर्मनी की टीम ने प्रतियोगिता में अपना पहला मैच जीता है और 17वीं बार उसके खिलाफ कोई गोल नहीं हुआ।

प्रणवी ने महिला पेशेवर गोल्फ टूर खिताब जीता

हैदराबाद, 8 सितंबर। प्रणवी उर्स ने अपना दबदबा बरकरार रखते हुए गुरुवार को यहां पांच शॉट के बड़े अंतर से महिला पेशेवर गोल्फ टूर के 12वें चरण का खिताब जीत लिया। प्रणवी ने अंतिम दौर में दो ओवर 72 का स्कोर बनाया। स्थानीय गोल्फर स्नेहा सिंह ने एक ओवर 71 के स्कोर से एमेच्योर कृति चौहान के साथ संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर रहीं। कृति ने अंतिम दौर में तीन ओवर 73 का स्कोर बनाया। मौजूदा सत्र में 12 प्रतियोगिताओं में यह प्रणवी की पांचवीं जीत है जिससे उन्होंने आर्डर आफ मेरिट में भी अपनी बढ़त मजबूत कर ली है। प्रणवी ने कुल 12 लाख 24 हजार 500 रुपये की इनामी राशि जीती है जबकि हिताशी बख्शी आठ लाख 62 हजार 700 रुपये की इनामी राशि के साथ दूसरे स्थान पर हैं। सहर अटवाल आठ लाख 23 हजार 350 रुपये की इनामी राशि के साथ तीसरे स्थान पर हैं।

ड्रेसिंग रूम में तनावपूर्ण माहौल के बीच नसीम पर भरोसा था : बाबर

शारजाह, 8 सितंबर। अफगानिस्तान के खिलाफ एशिया कप टी20 टूर्नामेंट के 'सुपर फोर' चरण में एक विकेट की रोमांचक जीत दर्ज करने के बाद पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम ने बुधवार को कहा कि उन्हें 10वें क्रम के बल्लेबाज नसीम शाह पर भरोसा था। पाकिस्तान को 20वें ओवर में जीत के लिए 11 रन की जरूरत थी और क्रीज पर उसकी आखिरी जोड़ी थी। नसीम ने फजलहक फारूकी की शुरुआती दो गेंदों पर छक्का लगाकर पाकिस्तान को यादगार जीत दिला दी। मैच के बाद बाबर ने पुरस्कार समारोह में कहा, ''सच कहूं तो ड्रेसिंग रूम में काफी तनावपूर्ण माहौल था। हम पिछले कुछ मैचों की तरह इस मुकाबले में भी साझेदारियां नहीं बना सके। नसीम ने हालांकि जिस तरह से मैच खत्म किया, उसके बाद आप सकारात्मक माहौल को महसूस कर सकते है।'' उन्होंने नसीम के छक्के की तुलना जावेद मियांदाद की इसी मैदान में भारत के खिलाफ 1986 में आखिरी गेंद पर लगाये छक्के से करते हुए कहा, '' मैंने नसीम को इस तरह बल्लेबाजी करते देखा है, इसलिए मुझे थोड़ा विश्वास था। इसने मुझे इसी मैदान पर मियांदाद के द्वारा लगाये छक्के की याद दिला दी।''

जैम्पा के पंजे से ऑस्ट्रेलिया विजयी

केर्न्स, 8 सितंबर। ऑस्ट्रेलिया ने स्टीव स्मिथ (61) के अद्धर्शतक के बाद एडम जैम्पा (पांच विकेट) की घातक गेंदबाजी की बदौलत न्यूजीलैंड को दूसरे एकदिवसीय मैच में गुरुवार को 113 रन से मात देकर शृंखला में 2-0 की अजेय बढ़त हासिल की। ऑस्ट्रेलिया ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 50 ओवर में नौ विकेट के नुकसान पर 195 रन बनाने के बाद न्यूजीलैंड को 82 रन पर समेट दिया। न्यूजीलैंड ने टॉस जीतकर गेंदबाजी करने का फैसला किया और पहले मैच की तरह ही इस मैच में भी ऑस्ट्रेलिया के ऊपरी क्रम को जल्द पवेलियन लौटाया। ऑस्ट्रेलिया के 54 रन पर पांच विकेट गिरने के बाद स्मिथ ने ग्लेन मैक्सवेल के साथ 49 रन की बहुमूल्य साझेदारी की। मैक्सवेल ने 50 गेंदों पर एक चौका और एक छक्का लगाकर 25 रन बनाये, जबकि स्मिथ ने 94 गेंदों पर पांच चौकों और एक छक्के की बदौलत 61 रन की पारी खेली।

जयपुर, बीकानेर और पाली सेमीफाइनल में

जयपुर, 8 सितम्बर। जय क्लब के टेनिस प्रांगण में चल रही राजस्थान राज्य जूनियर ओपन व अंतर जिला टेनिस प्रतियोगिता के प्री क्वार्टरफाइनल में आज जयपुर ने चित्तौड़ को 2-0 से प्रथम एकल टीम मैच में फरहान (जयपुर) यश सिसोदिया (चित्तौड़गढ़) को 8-2 से, दूसरे एक एकल वरुण रस्तोगी (जयपुर) ने मनशीज गुप्ता चित्तौड़ को 8-1 से हराया। बीकानेर ने झुनझुनु को 2-1 से प्रथम एकल में, गंगनदीप (बीकानेर) में जीवम ओला (झुनझुनु) को 8-7 (7-5) से व दूसरे एकल में रचित केडिया (झुनझुनु) ने पार्थ शर्मा (बीकानेर) को 8-4 से तथा निर्णायक युगल में पार्थ व गगनदीप (बीकानेर) ने रचित केडिया व जीवाओला (झुनझुनु) को 8-1 से हराया। पाली ने उदयपुर को 2-1 से हराया। परथम एकल में धनराज चौधरी (पाली) ने कार्तिक मेहता (उदयपुर) को 8-0 से दूसरे एकल में भाविक रीमती (उदयपुर) ने हर्ष तायल (पाली) को 8-5 से व निर्णायक मुकाबले में हर्ष तायल धनराज (पाली) ने भाविक एवं कार्तिक (उदयपुर) को 8-1 से हराया एकल मुकाबलों में ओपन 18 वर्ष आयुवर्ग प्रथम दौर के मुकाबले में भाविक ने विवान को 8-1 से, निलेश्वर ने युगानंतर को 8-0 से, मैदांश ने दक्ष जैन को 8-3 से संदीप सिंह ने मोक्ष गुप्ता 8-0 से, बीलाल खान ने बद्री को 8-0 से, साध ने गगदीप को 8-7 (7-4) से, गर्वित ने रौनक मंगल को 8-0 से मुकुल चौधरी ने सईद को 8-3 से, वरुण रस्तोगी ने अश्वीन को 8-1, यथाथर ने अरुणादित्य को 8-4, दक्षा मेहता ने हर्मन को 8-2 से यश सिलोदिया ने शौर्यवीर को 8-0 से प्रियांशु चौधरी ने मनन गुप्ता को 8-4 से, धनराज ने अमित गोदारा को 8-4 से कुशल ने निकुज को 8-0 से, हर्ष ने प्लांश को 8-3 से, फरहान ने लक्ष्य जैन को 8-0 से, हर्ष तायल ने रुद्र को 8-1 से, उज्जवल ने अधर्व देव को 8-1 से हराया।

हॉकी विश्व कप के लिए ड्रॉ घोषित

इंग्लैंड, वेल्स और स्पेन भारत के पूल में

भुवनेश्वर, 8 सितंबर। भारत को ओडिशा के भुवनेश्वर और राउरकेला में होने वाले अंतरराष्ट्रीय हॉकी महासंघ (एफआईएच) पुरुष हॉकी विश्व कप 2023 के लिये पूल-डी में इंग्लैंड, वेल्स और स्पेन के साथ रखा गया है। एफआईएच ने गुरुवार को यह जानकारी दी।

एफआईएच ने विश्व कप 2023 के लिये यहां जारी ड्रॉ में टीमों को चार पूलों में बांटा है। हॉकी की शीर्ष संस्था ने बताया कि एक जून 2022 की रैंकिंग के आधार पर भारत, ऑस्ट्रेलिया, बेल्जियम और नीदरलैंड को अपने-अपने पूल के शीर्ष पर रखा गया है।

मेजबान भारत पूल-डी की अगुवाई करेगा। भारत (विश्व नंबर-5) इस पूल में सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग वाली टीम है। यहां उसका सामना इंग्लैंड (विश्व नंबर-6), स्पेन (विश्व नंबर-14) और विश्व कप में पहली बार भाग ले रही वेल्स (विश्व नंबर-16) से होगा।

पूल-ए में अर्जेंटीना, फ्रांस और दक्षिण अफ्रीका के साथ विश्व की नंबर एक टीम ऑस्ट्रेलिया है जिसने विश्व कप 2018 में कांस्य पदक जीता था।

विश्व की नंबर दो टीम और गत चैंपियन बेल्जियम को 2006 विश्व चैंपियन जर्मनी, कोरिया और जापान के साथ पूल-बी में जगह दी गई है। पूल सी की अगुवाई विश्व कप 2018 की फाइनलिस्ट नीदरलैंड करेगी। वह इस पूल में न्यूजीलैंड और मलेशिया के साथ-साथ चिली का भी सामना करेगी, जो वेल्स की तरह ही पहली बार एफआईएच हॉकी पुरुष विश्व कप में भाग ले रही है।

एफआईएच के मुख्य कार्यकारी अधिकारी थिएरी वेल की निगरानी में हुए ड्रॉ समारोह में ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन

पटनायक और एफआईएच के कार्यकारी अध्यक्ष सेफ अहमद के साथ-साथ ओडिशा खेल और युवा सेवाएं मंत्री तुषारकांति बेहरा मौजूद रहे।

पटनायक ने ड्रॉ जारी होने के बाद कहा, हमें इस तरह के उत्कृष्ट आयोजन के लिए दुनिया की सर्वश्रेष्ठ हॉकी टीमों और खिलाड़ियों का स्वागत करते हुए हमेशा बहुत गर्व होता है। इस बार हम दुनिया को भुवनेश्वर के हमारे शानदार कलिंगा स्टेडियम के साथ-साथ राउरकेला के बिरसा मुंडा हॉकी स्टेडियम में भी आमंत्रित कर रहे हैं। यह नया स्टेडियम हॉकी के प्रति हमारी मजबूत प्रतिबद्धता का एक और प्रमाण है। एफआईएच पुरुष हॉकी विश्व कप का आयोजन ओडिशा के भुवनेश्वर और राउरकेला में 13 जनवरी 2023 से किया जाएगा।

नेपोली ने चैम्पियंस लीग में लीवरपुल को 4-1 से हराया

नेपल्स, 8 सितंबर। नेपोली ने चैंपियन्स लीग फुटबॉल में पिछले सत्र के उप विजेता लीवरपूल पर बुधवार को 4-1 की आसान जीत दर्ज की। ग्रुप के पहले दौर के मैच में नेपोली ने पहले हाफ मे तीन जबकि दूसरे हाफ में एक गोल दागा। नेपोली को पियोत्र जीलिंस्की ने पेनल्टी पर गोल दागकर बढ़त दिलाई जिसके बाद आंद्रे फ्रेंक जेंबो एनगुइसा ने टीम की बढ़त को दोगुना किया। एटलेटिको मैड्रिड के कोच डिएगो सिमियोन के बेटे जियोवानी सिमियोन ने इसके बद स्थानापन्न खिलाड़ी के रूप में उतरकर गोल दागा और नेपाली को 3-0 से आगे किया। मध्यांतर के दो मिनट बाद जीलिंस्की ने एक और गोल दागकर नेपोली को 4-0 की बढ़त दिला दी। लीवरपूल की ओर से मैच का एकमात्र गोल 49वें मिनट लुई डियाज ने किया। लीवरपूल की नेपल्स के स्टेडियो डिएगो अर्मांडो माराडोना में चार मैच में चौथी हार है।

मैराथन मुकाबले में अल्काराज ने सिनर को मात दी

न्यूयॉर्क, 8 सितंबर। स्पेन के युवा सनसनी खिलाड़ी कार्लोस अल्काराज ने गुरुवार को ऐतिहासिक मुकाबले में इटली के जैनिक सिनर को मात देकर यूएस ओपन टेनिस के सेमीफाइनल में जगह बनायी। अल्काराज़ ने पांच घंटे 15 मिनट चले क्वार्टरफाइनल मैच में सिनर को 6-3, 6-7(7),6-7(0),7-5,6-3 से हराया। यह मैच अमेरिकी समयानुसार देर रात 2:50 बजे समाप्त हुआ जो यूएस ओपन के इतिहास में सबसे ज्यादा देर तक चला मैच है। इससे पहले तीन मैच देर रात 2:26 बजे तक खेले जा चुके हैं। यूएस ओपन इतिहास का सबसे लंबा मैच 1992 में स्टेफन एडबर्ग और माइकल चैंग के बीच खेला गया सेमीफाइनल था जो पांच घंटे 26 मिनट बाद समाप्त हुआ था। अल्काराज ने सिनर के खिलाफ चौथे सेट में 4-5 पर मैच पॉइंट बचाया और एटीपी रैंकिंग में सबसे कम उम्र का नंबर एक खिलाड़ी बनने की अपनी उम्मीदों को जिंदा रखा। अल्काराज ने मैराथन मुकाबले में जीत के बाद कहा, ''मुझे अब भी नहीं पता कि मैंने यह कैसे किया। आपको अपने ऊपर विश्वास करना होता है। मैंने अपने खेल पर विश्वास किया। मैच को समाप्त करना बहुत मुश्किल था। मैंने शांत रहने की कोशिश की, हालांकि यह उस समय बहुत कठिन था।''

उन्होंने कहा, ''मैं ग्रैंड स्लैम में अपने पहले सेमीफाइनल में पहुंचने की उपलब्धि का आनंद लूंगा, और कल मेरे पास मैच के बारे में सोचने का समय होगा।'' अल्काराज़ फ्लशिंग मीडोज़ के सेमीफाइनल में अमेरिका के फ्रांसेस टियाफो का सामना करेंगे जो क्वार्टरफाइनल में 7-6(3),7-6(0), 6-4 से हराकर आ रहे हैं।

हार के बाद रैकेट तोड़ने के लिये किर्गियोस पर लगा जुर्माना

न्यूयॉर्क, 8 सितंबर। ऑस्ट्रेलिया के शीर्ष टेनिस खिलाड़ी निक किर्गियोस पर यूएस ओपन क्वार्टरफाइनल में कारेन खचानोव से हारने के बाद रैकेट तोड़ने के लिये 14,000 डॉलर का जुर्माना लगाया गया है। खचानोव ने बुधवार को खेले गये क्वार्टरफाइनल में किर्गियोस को 7-5, 4-6, 7-5 6-7(3) 6-4 से मात दी थी। ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी ने हार के बाद झुंझलाकर दो रैकेट आर्थर ऐश स्टेडियम में पटककर तोड़ दिये थे। यह जुर्माना इस साल टूर्नामेंट में लगाया गया सबसे बड़ा जुर्माना है और न्यूयॉर्क में अपने इन पांच अपराधों के लिए किर्गियोस पर कुल 32,500 डॉलर का जुर्माना लगाया गया है।

स्वियातेक साल के तीसरे ग्रैंड स्लैम सेमीफाइनल में

न्यूयॉर्क, 8 सितंबर। विश्व की नंबर एक टेनिस खिलाड़ी पोलैंड की इगा स्वियातेक ने यूएस ओपन क्वार्टरफाइनल में अमेरिका की जेसिका पेगुला को हराकर साल के तीसरे ग्रैंड स्लैम सेमीफाइनल में जगह बना ली है। स्वियातेक ने बुधवार को आर्थर ऐश स्टेडियम में आठवीं सीड पेगुला को 6-3, 7-6(4) से हराया। पोलैंड की स्वियातेक ने फ्रेंच ओपन 2022 खिताब जीतने से पहले साल के पहले ग्रैंड स्लैम आयोजन ऑस्ट्रेलियन ओपन के सेमीफाइनल तक सफर किया था। स्वियातेक 2016 में सेरेना विलियम्स के बाद सेमीफाइनल में पहुंचने वाली पहली टॉप सीड खिलाड़ी हैं। अब वह सेमीफाइनल में अरीना सबालेंका का सामना करेंगी, जो चेक गणराज्य की कैरोलीना प्लिस्कोवा को हराकर आ रही हैं।

टी-20 विश्व कप से पहले ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड से भारत वार्मअप मैच खेलेगा

दुबई, 8 सितंबर। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने गुरुवार को अगले महीने ऑस्ट्रेलिया में होने वाले आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप से पहले सभी 16 टीमों के लिये अभ्यास (वॉर्म अप) मैचों की घोषणा की। आईसीसी ने बताया कि ये सभी मैच ब्रिस्बेन और मेलबर्न में खेले जाएंगे। पहले दौर की टीमें अपने वॉर्म अप मैच 10 और 13 अक्टूबर को मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड और जंक्शन ओवल में खेलेंगी। सुपर-12 राउंड में सीधे प्रवेश करने वाली टीमें अपने वॉर्म-अप मुकाबले 17 और 19 अक्टूबर को ब्रिस्बेन के गाबा में खेलेंगी, जिसमें भारत भी शामिल है।

पहला अभ्यास मैच 10 अक्टूबर को जंक्शन ओवल में वेस्टइंडीज और संयुक्त अरब अमीरात के बीच होगा। स्कॉटलैंड फिर नीदरलैंड और श्रीलंका के साथ एक ही दिन में दो अन्य मैचों में उसी स्थान पर जिम्बाब्वे से खेलेगा। भारतीय टीम अपना पहला मैच ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 17 अक्टूबर को खेलेगी। रोहित शर्मा की टीम दो दिन बाद 19 अक्टूबर को न्यूजीलैंड का सामना करेगी।

मेरे अंदर छक्के जड़ने का आत्मविश्वास था : नसीम

शारजाह, 8 सितंबर। पाकिस्तान के निचले क्रम के बल्लेबाज नसीम खान ने एशिया कप में अफगानिस्तान के खिलाफ अंतिम ओवर में लगातार दो छक्के जड़ने का श्रेय आत्मविश्वास और नेट पर अभ्यास सत्र को दिया।

नसीम के लगातार दो छक्कों से पाकिस्तान ने सुपर चार के मुकाबले में अफगानिस्तान को हराकर फाइनल में जगह बनाई। यह 22 वर्षीय खिलाड़ी टूर्नामेंट में अपनी तेज गेंदबाजी से पहले ही प्रभावित कर चुका है लेकिन बुधवार को उसने बल्ले से भी कमाल दिखाते हुए न सिर्फ पाकिस्तान को एक विकेट की रोमांचक जीत दिलाई बल्कि चिर प्रतिद्वंद्वी भारत को भी टूर्नामेंट से बाहर कर दिया।

नसीम ने मैच के बाद कहा, ''जब मैं बल्लेबाजी करने गया तो मुझे छक्के मारने का विश्वास था। मैं अभ्यास करता हूं (छक्के मारने का) और मुझे पता था कि वे यॉर्कर फेंकेंगे क्योंकि उन्होंने क्षेत्ररक्षक अंदर खड़े किए हुए थे। मैंने बस कोशिश की और इसे अंजाम दिया।''

उन्होंने कहा, ''हमें विश्वास की जरूरत है कि हम बड़े शॉट खेल सकते हैं, हम नेट पर अभ्यास करते रहते हैं और मैंने अपना बल्ला भी बदल दिया, यह काम कर गया।'' नसीम ने कहा, ''जब आप नौवां विकेट खो देते हैं तो कोई भी आपसे जीतने की उम्मीद नहीं करता लेकिन मुझे विश्वास था कि मैं कर सकता हूं। मैं बड़े शॉट खेलने का बहुत अभ्यास करता हूं। यह मेरे लिए एक यादगार मैच रहा। हर कोई भूल गया कि मैं एक गेंदबाज हूं।'' नसीम जब क्रीज पर उतरे तब पाकिस्तान को 10 गेंद में 20 रन चाहिए थे और दो विकेट बचे थे। इस 10वें नंबर के बल्लेबाज ने इससे पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय में सिर्फ एक गेंद खेली थी। जब आसिफ अली 19वें ओवर की पांचवीं गेंद पर आउट हुए तो टीम मुश्किल में घिर गई। पाकिस्तान को अंतिम ओवर में 11 रन चाहिए थे और नसीम ने लगातार दो छक्के जड़कर टीम को जीत दिला दी।

बड़ी टीमों के खिलाफ मनोवैज्ञानिक समस्या को दूर करने की जरूरत : फेरांडो

कोलकाता, 8 सितंबर। एटीके मोहन बागान के मुख्य कोच जुआन फेरांडो ने यहां एएफसी कप अंतर क्षेत्र सेमीफाइनल में कुआलालंपुर सिटी एफसी के खिलाफ अपनी टीम की निराशाजनक हार को महाद्वीप के बड़े क्लब का सामना करते हुए 'मनोवैज्ञानिक समस्या' बताया। सभी चीजें एटीके मोहन बागान के पक्ष में थीं- दर्शकों का समर्थन, 78 प्रतिशत समय गेंद पर कब्जा और गोल पर 19 शॉट (प्रतिद्वंद्वी टीम की तुलना में दोगुने) लेकिन 2021 की तरह टीम को एक बार फिर 1-3 से हार का सामना करना पड़ा।

बुधवार को सॉल्ट लेक स्टेडियम में एटीके मोहन बागान की हार के बाद फेरांडो ने कहा, ''यह एक मनोवैज्ञानिक समस्या है लेकिन एक बड़े क्लब के लिए खेलते समय जज्बा दिखाना आवश्यक है। यहां तक कि अगर आप एक अवसर पर चूक जाते हैं तो आपको काम जारी रखना होगा।'' उन्होंने कहा, ''मेरी तरह खिलाड़ी भी बहुत निराश हैं लेकिन समाधान यह है कि हम काम करना जारी रखें।''

जापान में शिनहैन डोंगहेई ओपन में संधू शीर्ष भारतीय

नारा (जापान), 8 सितंबर। भारतीय गोल्फर अजितेश संधू गुरुवार को यहां पहले दौर में तीन अंडर 68 के स्कोर के साथ 38वें शिनहैन डोंगहेई ओपन में संयुक्त 34वें स्थान पर चल रहे हैं। संधू ने प्रतियोगिता में हिस्सा ले रहे चार भारतीयों के बीच सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। शिव कपूर और एसएसपी चौरसिया दोनों दो अंडर 69 के समान स्कोर के साथ संयुक्त 58वें स्थान पर हैं जबकि 2016 में यहां खिताब जीतने वाले गगनजीत भुल्लर एक ओवर 72 के स्कोर से संयुक्त 105वें पायदान पर चल रहे हैं। कनाडा के रिचर्ड टी ली ने नौ अंडर 62 के कोर्स रिकॉर्ड के साथ बढ़त बना ली है।

सारस्वत निर्विरोध हॉकी संघ के अध्यक्ष चुने गये

जयपुर, 8 सितम्बर। हॉकी राजस्थान के आज करौली में संपन्न हुए चुनाव में करौली के अरुण कुमार सारस्वत को सर्वसम्मति से पुनः निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया सचिव पद पर जयपुर के मित्रानंद पूनिया एवं कोषाध्यक्ष हनुमानगढ़ के मलकीत सिंह मान को चुना गया। अन्य चुने गए पदाधिकारियों में महिपाल सिंह (पाली), देवेंद्र सिंह शेखावत(अजमेर) मोहम्मद यूसुफ चौहान (चूरू) मदन सिंह राठौर (जालौर) रंजी स्मिथ (सिरोही) सत्येंद्र शर्मा (बारां) गणेश बोहरा (बीकानेर) डॉ. आरती सिंह (सवाईमाधोपुर) एवं आमना खातून (चित्तौडगढ़) को उपाध्यक्ष लोकेश मीणा (अलवर) सुमेर सिंह (कोटा) मोनिका सिंह (उदयपुर) एवं वर्षा कुमारी (दौसा) को संयुक्त सचिव शहज़ाद खान (नागौर) गणेशराम यादव (सीकर) कुलदीप सिंह गौड़ (राजसमंद) को सर्वसम्मति से कार्यकारिणी सदस्य चुना गया। बैठक में हॉकी इंडिया के पर्यवेक्षक राजेश चौधरी राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद के पर्यवेक्षक डॉ. दिनेश चौधरी एवं राजस्थान राज्य ओलंपिक संघ के पर्यवेक्षक डॉ. रमेश इंदौलिया की उपस्थिति में निर्वाचन अधिकारी ओमप्रकाश शर्मा सर्वसम्मति से चुने गए पदाधिकारियों की घोषणा की। इससे पूर्व साधारण सभा की बैठक में गत बैठक की पुष्टि वार्षिक लेखा का अनुमोदन, महासचिव का वार्षिक प्रतिवेदन सर्वसम्मति से पास किये गये। एवं आगामी राज्य प्रतियोगिताओ का आवंटन किया गया। जिसमे सीनियर पुरुष राजसमंद सीनियर महिला जयपुर जूनियर पुरुष एवं महिला बाड़मेर सबजूनियर पुरुष अलवर सबजूनियर महिला सीकर मिनी सबजूनियर प्रतियोगिता हनुमानगढ़ जिले मे आयोजित की जायेंगी।

चौबे ने महिला फुटबॉल के विस्तार के लिये अंडर-17 लीग की घोषणा की

कोलकाता, 8 सितंबर। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) के अध्यक्ष कल्याण चौबे ने गुरुवार को महिला फुटबॉल का विस्तार करने और कम उम्र में सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं को उजागर करने के लिए अंडर-17 महिला लीग शुरू करने की अपनी योजना की घोषणा की।

चौबे ने यहां संवाददाताओं से कहा, हम जल्द ही भारतीय खेल प्राधिकरण के सहयोग से भारत में अंडर-17 महिला लीग शुरू करने जा रहे हैं। चौबे ने भारतीय फुटबॉल में पूर्ण लैंगिक समानता बनाए रखने का संकेत देते हुए कहा कि महासंघ की भारतीय महिला लीग (आईडब्ल्यूएल) में खिलाड़ियों के लिए न्यूनतम वेतन कैप शुरू करने की योजना है। उन्होंने कहा, यह सही नहीं है कि फुटबॉलरों के मानदेय में पुरुषों और महिलाओं के स्तर पर भारी अंतर हो। संतुलन बहाल करने के लिए सभी प्रयास किए जाने चाहिए। चौबे ने कहा कि नव-निर्वाचित समिति भारतीय लाइसेंस प्राप्त कोचों और पेशेवर फुटबॉलरों को एक ऐसे स्तर पर ले जाना चाहती है जहां विश्व स्तर पर उनकी सबसे अधिक मांग हो।

उन्होंने कहा, आज भारतीय व्यवसायी, कॉर्पोरेट अधिकारी, वैज्ञानिक आदि दुनिया में शीर्ष पदों पर काबिज हैं, फिर हमारे कोच और खिलाड़ी ऐसा क्यों नहीं कर सकते? हमारा मानना है कि सही शिक्षा और निर्देश दिए जाने पर वे भी दुनिया में सर्वश्रेष्ठ साबित हो सकते हैं। हमें इसके लिए प्रयास करना चाहिए। चौबे ने कहा कि राज्य स्तर पर खेल में सुधार भारतीय फुटबॉल को आगे ले जाने का सबसे अच्छा मार्ग है, और भविष्य में संतोष ट्रॉफी और अन्य अंतर-राज्यीय चैंपियनशिप को बहुत महत्व दिया जाएगा। उन्होंने कहा, वर्षों से, भारतीय फुटबॉल के कुछ बेहतरीन नाम इन मुकाबलों से उभरे हैं। हम इन टूर्नामेंटों का पोषण करना जारी रखेंगे।

यह स्पष्ट करते हुए कि फुटबॉल में धन के दुरुपयोग को रोका जाना चाहिए और सबसे सख्त तरीके से निपटा जाना चाहिए, चौबे ने कहा, हमारा उद्देश्य खेल को स्कूलों तक ले जाना है। भारत में 25 करोड़ छात्रों के साथ 16 लाख सरकारी स्कूल हैं। इनमें से अधिकांश स्कूलों में प्रत्येक में एक फुटबॉल मैदान है। यदि हम उस क्षेत्र तक पहुंचकर अपने लाइसेंस प्राप्त प्रशिक्षकों को स्कूल में भौतिक प्रशिक्षकों के साथ जोड़ सकते हैं, तो ऊर्जा और संसाधनों को बर्बाद किए बिना बहुत कुछ किया जा सकता है।

चौबे ने कोचिंग, स्काउटिंग और खिलाड़ियों के चयन जैसे कई मुद्दों को अंतिम रूप देने के लिए एआईएफएफ की तकनीकी समिति की बैठक बुलाने की घोषणा करते हुए कहा कि राष्ट्रीय टीम और क्लबों के हितों के बीच संतुलन बनाए रखने की जरूरत है क्योंकि दोनों ही भारतीय फुटबॉल को एक साथ आगे ले जाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। एआईएफएफ अध्यक्ष ने एक सवाल के जवाब में कहा कि महासंघ पद्मश्री और अर्जुन पुरस्कारों के लिए अपने नामांकित व्यक्तियों के नाम 15 सितंबर तक भेजेगा।

बच्चों को डैन्डेलियन फूल बहुत पसंद होते हैं। रोएंदार सफेद भाग पर फूंक मारने से इनके बीज उड़कर चारों तरफ फैल जाते हैं। डैन्डेलियन के बीज जमीन पर किसी नई जगह पर गिरने से पहले मीलों तक का सफर कर लेते हैं। लेकिन बच्चों की मदद के बिना भी बीज उड़ते हैं और शोधकर्ताओं ने हाल ही में पता लगाया है कि डैन्डेलियन किस प्रकार अपने बीजों का प्रकीर्णन (फैलने की प्रक्रिया) करते हैं। इससे यह समझने में भी मदद मिलेगी कि वे जलवायु परिवर्तन से कैसे डील करते हैं। हरेक बीज 100 के लगभग रोओं से जुड़ा होता है और दोनों को मिलकर पैराशूट जैसी संरचना बन जाती है, जिससे बीजों को फैलने में मदद मिलती है। जब बीज फूल के शीर्ष से अलग होते हैं तो पैराशूट जैसी संरचनाए हवा के सहारे बीज को उड़ा ले जाती हैं। शोध लेखक नाओमी नाकायामा (इम्पीरियल कॉलेज लंदन) ने कहा, "हमने देखा कि सुबह जब कोहरा होता है तब डैन्डेलियन पैराशूट्स बंद रहते हैं पर जब धूप खिल जाती है तो वे खुल जाते हैं। नाओमी ने कहा, हमने अध्ययन किया कि डैन्डेलियन कैसे उड़ते हैं, फिर हमने यह पता लगाने की कोशिश की कि पैराशूट के बंद होने से इनकी उड़ान पर क्या प्रभाव पड़ता है। इसके बाद हमने यह देखने का प्रयास भी किया कि रूप बदलने की इस प्रक्रिया को कैसे नियंत्रित किया जाता है। जब हवा में नमी होती है तो रोएंदार पैराशूट बंद हो जाता है, क्योंकि हवा में नमी का अर्थ है हवा धीमी होना। जब खुश्की होती है तो हवा भी तेज चलती है इस समय पैराशूट खुल जाते हैं और बीज उड़ जाते हैं। नेचर कम्युनिकेशन्स नामक जर्नल में छपे नतीजों के अनुसार शोधकर्ताओं ने पाया कि पैराशूट जैसी ये संरचनाएं गति देने वाली एक डिवाइस (प्रवर्तक) का प्रयोग करके खुलती बंद होती हैं। एक ऐसी डिवाइस जो एनर्जी व सिग्नल को गति में तब्दील करती है। लेकिन यह ऊर्जा का इस्तेमाल नहीं करती। यह जानने के बाद कि, बीज फैलाने के लिए डैन्डेलियन का उत्प्रेरक (ट्रिगर) क्या है, वैज्ञानिकों को यह समझने में आसानी होगी कि ये क्लाइमेट चेंज से कैसे निपटते हैं। इससे वैज्ञानिकों को नए सॉफ्ट रोबॉट्स बनाने में मदद मिल सकती है। नाकायामा ने कहा, डैन्डेलियन इकोसिस्टम की नींव हैं, ये कीड़ों व पक्षियों का भोजन हैं और पर्यावरण के प्रति भी संवेदनशील हैं।

राजस्थान के गृह राज्य मंत्री के यहां आयकर विभाग की कार्यवाही दूसरे दिन भी जारी रही

सर्च के दौरान फर्जी कम्पनियों से जुड़ी जानकारी सामने आई, आधा दर्जन जगहों से बड़ा कैश भी बरामद

- **गृह राज्यमंत्री राजेन्द्र यादव के कई रिश्तेदारों पर आयकर विभाग का शिकंजा कसा जा रहा है।**
- **ज्ञातव्य है, कि मिड डे मील में अनियमितताओं के मामले में राजस्थान के गृह राज्यमंत्री राजेन्द्र यादव के राजस्थान सहित तीन अन्य राज्यों में मौजूद ठिकानों पर आयकर की जांच चल रही है।**

जयपुर, 8 सितम्बर (का.प्र.)। मिड डे मील में अनियमितताओं के मामले में राजस्थान के गृह राज्य मंत्री राजेंद्र यादव के राजस्थान सहित तीन अन्य राज्यों में कई ठिकानों पर चल रहा आयकर विभाग का सर्व दूसरे दिन भी जारी रहा। बताया जा रहा है कि, गृह राज्य मंत्री के कई नजदीकी रिश्तेदारों पर आयकर विभाग शिकंजा कसा जा रहा है। अभी तक बड़ी संख्या में टैक्स चोरी के दस्तावेज बरामद हुए हैं। आईटी सर्च के दौरान फर्जी कंपनियों से जुड़ी जानकारी भी सामने आई है। आधा दर्जन जगहों से भी सर्च के दौरान बड़ी मात्रा में कैश बरामद हुआ है।

ऐसा माना जाता है कि, राजेन्द्र सिंहयादव मुख्यमंत्री गहलोत के बेहद विश्वासपात्र मंत्री हैं। राजेन्द्र यादव के कोटपुतली, जयपुर, गुडगांव, उत्तराखंड की फैक्ट्री और घरों पर यह सर्च चल रहा है। कोटपुतली स्थित राजस्थान फ्लैक्सिबल पैकिंग लिमिटेड कंपनी है, जहां पर आटा पैकिंग का काम किया जाता था। यहीं से अन्य जिलों और राज्यों में सप्लाई दी जाती थी। मिड डे मील योजना की सप्लाई में अनियमितता पाई गई, जिस पर आयकर विभाग की टीमें काम कर रही हैं। तापड़िया ग्रुप, जेवीएम फूड कंपनी और तांबी ग्रुप के खिलाफ भी आयकर विभाग के छापे की कार्रवाई जारी हैं। जानकार सूत्रों की मानें तो इनकम टैक्स इस मामले में अनुमति देने वाले अधिकारियों और सलाहकारों पर भी शिकंजा कस सकती हैं। जानकारी के अनुसार सर्च ऑपरेशन के बाद शुक्रवार को आयकर विभाग की टीमें बैंक खातों और लॉकर की तलाशी ले सकती हैं।

इन आयकर छापों को लेकर गृह राज्य मंत्री राजेन्द्र यादव ने मीडिया के सामने फिर दोहराया कि, उनके द्वारा किसी भी प्रकार की कोई अनियमतत्ता नहीं की गई है। यह फैक्ट्री 1950 में उनके पिता ने लगाई थी, जिस पर मेहनत करके उन्होंने इसे और आगे बढ़ाया गया। राजनीति में आने के बाद दोनों बेटे और भाई इस काम सम्भाल रहे हैं। साथ ही कुछ परिवार के लोग भी हैं, जो इस काम को कर रहे हैं। 700 से अधिक लोग कोटपूतली और एक हजार से अधिक लोग उत्तराखंड में काम करते हैं। आयकर को लेकर फाइल हर वर्ष तैयार होती है।

यादव ने यह भी कहा कि उनका कोई मिड डे मील का काम नहीं है। उनका केवल आटा मिल, कोल्ड स्टोरेज और दूसरी कम्पनी के माल का स्टोरेज और ट्रांसपोर्टेशन का काम है। ऐसी कोई चीज उनकी फैक्ट्री में नहीं है जो मिड डे मील से मिलती- जुलती हो।

नेताजी को ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों आदि के लिए उनकी स्पष्ट प्रतिक्रिया होती थी- ये आज़ादी झूठ है।"

अधिक असाधारण बात यह है कि वामपंथियों ने अपने सैद्धान्तिक रूख को लेकर सुभाष चन्द्र बोस की भी आलोचना की थी और अब भी जो थोड़े बहुत सच्चे वामपंथी बचे हैं, वे अपने निजी वार्तालापों में तो जापान सरकार और जर्मनी के हिटलर का समर्थन मांगने को लेकर बोस की आलोचना करते हैं।

लेकिन दूसरे विश्व युद्ध के शुरूआती दौर में जब सोवियत यूनियन ने जर्मनी के नाज़ी शासन से मेल जोल बढ़ ाना शुरू किया था उसे लेकर भारत के कम्युनिस्ट परेशान नहीं होते, उनकी नज़रों में यह एक रणनीतिक और चतुराई पूर्ण कदम था, लेकिन बोस इसी संदर्भ में घृणित थे।

भावनाओं की वर्षो तक की गई अनदेखी और स्वतंत्रता दिवस समारोह के बड़े कार्यक्रमों को ना मनाए जाने ने इन स्मृतियों को आधा तो विस्मृत कर ही दिया हैं।

नई पीढ़ ी के लिए स्वतंत्रता संघर्ष अब एक तरफ से इतिहास के पन्नों में हैं युवा पीढ़ी जीवन के तय कार्यक्रमों को पूरा करने के लिए बाध्य हैं। युवा वर्ग स्वयं के लिए एक सहज जीवन सुनिश्चित करने की प्रतिस्पर्धा में है और इसी सोच से घिरा हुआ है।

स्वतंत्रता आंदोलन की फिर से यादें ताजा करने और दशकों तक इसका नेतृत्व करने वाले महापुरूषों की कहानियों को कहने की अब शायद ही कोई जरूरत हैं।

वास्तव में पहले स्कूल के बच्चों द्वारा पहले मार्चपास्ट किया जाना और स्वतंत्रता संघर्ष की स्मृति में कार्यक्रम आयोजित किया जाना, अब दुर्लभ वस्तु बन चुका हैं।

अम्बेडकर लॉ युनिवर्सिटी के वी.सी. की नियुक्ति के खिलाफ सुनवाई जारी

- **वी.सी. डॉक्टर देव स्वरूप की ओर से पैरवी कर रहे वकील अधिवक्ता कमलाकर शर्मा ने कहा कि, क्योंकि केन्द्र सरकार ने प्रथम वी.सी. की नियुक्ति के विषय में कोई स्पष्ट कानून नहीं बनाया है, इसलिए अदालत को राज्य सरकार द्वारा पारित एक्ट, (जिसके तहत प्रथम वी.सी. को नियुक्त किया गया है,) को केन्द्र सरकार के कानूनों के साथ समंजस्य बिठाकर पढ़ना चाहिये।**
- **वहीं याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता सुनील समदड़िया ने कहा कि यू.जी.सी. ने 2018 में लिखित गाईडलाइन पारित की थी, जिसमें स्पष्ट लिखा है कि वी.सी. का चयन करने के लिए गठित सर्च कमेटी में यू.जी.सी. का प्रतिनिधि होना चाहिये, उन्होंने कहा कि अम्बेडकर लॉ युनिवर्सिटी के वी.सी. की नियुक्ति में इस नियम को पूरी तरह अनदेखा किया गया और अयोग्य व्यक्ति को वी.सी. के पद पर चुना गया।**

जयपुर, (का.प्र.)। राजस्थान हाईकोर्ट में भीमराव अम्बेडकर लॉ यूनिवर्सिटी के वी.सी. की नियुक्ति को चुनौती देने वाली जनहित याचिका पर सुनवाई आज भी जारी रही। अदालत ने शुक्रवार को भी दोपहर तीन बजे से सुनवाई जारी रखने को कहा।

सुनवाई के दौरान भीमराव अम्बेडकर लॉ यूनिवर्सिटी के वर्तमान वी.सी. की ओर से पैरवी कर रहे वरिष्ठ अधिवक्ता कमलाकर शर्मा ने अदालत को कहा कि जिस एक्ट के तहत इस विश्वविद्यालय का गठन किया गया है, उस एक्ट में प्रथम वी.सी. को चुनने के लिये बोर्ड मेम्बर्स के विषय में स्पष्ट जानकारी दी गई है।

जैसा कि विदित है कि प्रथम वी.सी. की चयन प्रक्रिया के लिये कॉलेज प्रशासन के प्रतिनिधि बोर्ड में शामिल हो ही नहीं सकते। इसीलिये प्रथम वी.सी. का चयन ट्रांजिशनल (अवस्था परिवर्तन कालिक) प्रक्रिया है, जब तक कि कॉलेज में पढ़ाने वाले सभी शिक्षक और प्रशासन अधिकारी नियुक्त नहीं किये जाते और यू.जी.सी. से मान्यता प्राप्त नहीं की जाती। उन्होंने आगे कहा कि क्योंकि केंद्र के किसी भी कानून में प्रथम वी.सी. की नियक्ति के विषय में कोई कानून नहीं है, इसीलिये अदालत को राज्य सरकार द्वारा पारित भीमराव अम्बेडकर लॉ यूनिवर्सिटी एक्ट, 2019 को केंद्र के कानून के साथ सामंजस्य के साथ पढ़ना चाहिये।

वहीं याचिकाकर्ता के अधिवक्ता सुनील समदड़िया ने अदालत को बताया कि यू.जी.सी., जो सभी विश्वविद्यालयों के लिये मापदंड तय करती है, ने 2018 में नई गाइड लाइन जारी की थी जिसके तहत वी.सी. के चयन प्रकिया के संबंध में विस्तृत नियम कायदे लिखे गये हैं। इस गाइड लाइन में स्पष्ट लिखा है कि वी.सी.का चयन करने के लिये सर्च कमेटी में यू.जी.सी.का प्रतिनिधि भी शामिल होना चाहिये। उन्होंने बताया कि अम्बेडकर लॉ यूनिवर्सिटी जयपुर के वी.सी. के चयन के लिये गठित सर्च कमेटी/बोर्ड में यू.जी.सी. की 2018 की गाइड लाइन को बिलकुल अनदेखा कर दिया गया और यू.जी.सी. के प्रतिनिधि को इस सर्च कमेटी का हिस्सा नहीं बनाया गया। इसलिये एक ऐसे व्यक्ति को वी.सी. के पद पर चयनित किया गया, जो विधि स्नातक भी नहीं है। अदालत में इस मामले में शुक्रवार को भी बहस जारी रहेगी।

मजबूत ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

प्रभावित है क्योंकि यह निर्यातों की तुलना में स्थानीय मांग पर अधिक निर्भर है। कई लोग इस उपलब्धि का श्रेय सरकार की नीतियों को भी देते हैं, जिनमें सार्वजनिक खर्च में दी गई वृद्धि तथा देनदारों व क्रेडिट गारन्टर्स को दी गई राहत शामिल है और जिसकी वजह से महंगाई को तुलनात्मक रूप से नियंत्रित करने और जनता को आर्थिक सदमे से उबारने में मदद मिली है। पश्चिमी देशों की इच्छा के विपरीत रूप से कम कीमत पर तेल खरीदने ने ऊर्जा की कीमत वृद्धि पर लगाम कसने में मदद की है।

डेटा: भारतीय अर्थव्यवस्था अब दुनिया में पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है। उसने अपने पूर्व उपनिवेशवादी ब्रिटेन को पीछे छोड़ दिया है।

चुनौतियां: शिक्षित होकर प्रतिवर्ष नौकरी की तलाश में बेरोजगारों की जमात में जुड़े युवाओं को पर्याप्त नौकरियां देने में भारतीय अर्थव्यवस्था असमर्थ बनी हुई है और विश्लेषकों के अनुसार आर्थिक वृद्धि की लय को बनाए रखना मुश्किल हो रहा है। आर्थिक वृद्धि के अगले वर्ष करीब 6 प्रतिशत नीचे गिरने का अनुमान लगाया जा रहा है।

चावल के एक्सपोर्ट पर 20% एक्साइज़ ड्यूटी लगेगी

सरकार का कहना है कि, फसल खराबे के कारण बढ़ती कीमतों को नियंत्रित करने के लिए यह फैसला किया गया है

- **गौरतलब है कि, यू.पी. और बिहार में बारिश की भारी कमी के कारण इस बार चावल की फसल बहुत कम हुई है।**

नई दिल्ली, 8 सितंबर। भारत में चावल की कीमतों को कंट्रोल में लाने के लिए केंद्र सरकार ने एक अहम फैसला लिया है। सरकार ने चावल के विभिन्न ग्रेड के निर्यात पर 20 प्रतिशत शुल्क लगाया है। दरअसल, पश्चिम बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे प्रमुख चावल उत्पादक राज्यों में औसत से कम बारिश की वजह से चावल के उत्पादन में दिक्कत आने की आशंका है।

हालांकि, इससे पहले केंद्र सरकार ने कहा था कि चावल के निर्यात पर कोई प्रतिबंध लगाने की योजना नहीं है। सरकार की ओर से कहा गया था कि घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त बफर स्टॉक है। बता दें कि चीन के बाद भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा चावल उत्पादक देश है। वित्त वर्ष 2021-22 में भारत ने 21.2 मिलियन टन चावल का निर्यात किया था। हालांकि, इस साल कम बारिश के कारण धान की बुवाई का रकबा 6 प्रतिशत घटकर 367.55 लाख हेक्टेयर रह गया है। चालू खरीफ सीजन के 26 अगस्त तक, झारखंड में 10.51 लाख हेक्टेयर, पश्चिम बंगाल (4.62 लाख हेक्टेयर), छत्तीसगढ़ (3.45 लाख हेक्टेयर), उत्तर प्रदेश (2.63 लाख हेक्टेयर), बिहार से धान का कम रकबा बताया गया है।

डॉनल्ड ट्रम्प ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रिपब्लिक का 63 प्रतिशत को ट्रम्प को एक बड़ा व्यक्तित्व बने रहना देखना चाहता है, उसमें 39 प्रतिशत वे हैं जो ट्रम्प को वर्ष 2024 में राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के रूप में देखना चाहते हैं। शेष 23 प्रतिशत का कहना है कि जहां वे ट्रम्प के एक राष्ट्रीय राजनीतिक व्यक्तित्व रूप में बने रहना पसन्द करेंगे, लेकिन वहीं वे यह भी चाहेंगे कि ट्रम्प अपने कद का उपयोग राष्ट्रपति पद के ऐसे किसी अन्य उम्मीदवार का समर्थन करने में करे जो उनके विचारों से सहमति रखता हो।

जहाँ स्नातक एवं इससे ज्यादा ऊँची शिक्षा प्राप्त आधे रिपब्लिकन कहते हैं ट्रम्प एक बड़ी राजनैतिक हस्ती बने रहने चाहिये, वहीं कम शिक्षित 69 प्रतिशत रिपब्लिकन ऐसा चाहते हैं। कॉलेज स्नातकों की अपेक्षा, कॉलेज शिक्षा तक पहुँचे तथा और भी कम शिक्षित रिपब्लिकन इस बात को ज्यादा कहते हैं कि ट्रम्प को राष्ट्रपति चुनाव एक बार फिर लड़ना चाहिये। कम पढ़े-लिखे 45 प्रतिशत लोग कहते हैं कि 2024 में राष्ट्रपति चुनाव स्वयं ट्रम्प को ही लड़ना चाहिये, जबकि ऐसा कहने वाले रिपब्लिकन कॉलेज ग्रेजुएट केवल 26 प्रतिशत ही हैं। अनुदार तथा रूढ़िवादी रिपब्लिकनों की तुलना में नरमपंथी तथा उदार रिपब्लिकन ऐसा कम ही कहते हैं कि ट्रम्प को राष्ट्रीय राजनैतिक परिदृश्य में बने रहना चाहिये। (52 प्रतिशत बनाम 69 प्रतिशत)।

जहाँ तक बाइडन का प्रश्न है, डेमोक्रेट 2024 में राष्ट्रपति की उम्र तथा पुनरुत्थान रिपब्लिकन पार्टी का सामना करने की उनकी सामर्थ्य को लेकर बहुत चिन्तित हैं। राष्ट्रपति 79 वर्ष के हो चुके हैं तथा अब तक के सर्वाधिक उम्रदराज राष्ट्रपति हैं। अगर वे दोबारा चुनाव लड़ते हैं तथा चुनाव जीत जाते हैं, तो जनवरी 2025 में, जब वे राष्ट्रपति के रूप में अपना दूसरा कार्यकाल शुरु करेंगे, उनकी उम्र 82 वर्ष हो चुकी होगी।

पश्चिमी मीडिया की रिपोर्ट इस बात पर जोर दे रही है कि डेमोक्रेटिक पार्टी के प्रमुख मुद्दों से संबंधित प्रमुख विधेयकों को पारित कराने में उनके बार-बार विफल होने से राष्ट्रपति के समर्थन की रेटिंग गिर रही है। प्रमुख डेमोक्रेटिक मुद्दों में शामिल हैं- मतदान अधिकार टैक्स, इन्फ्रास्ट्रक्चर निवेश तथा जलवायु परिवर्तन-फंडिंग। इसके अतिरिक्त, उनकी प्रशासनिक कमजोरी का संदेश भी जनता तक जा रही रहा है। लम्बी खिंचती जा रही कोविड-19 महामारी, महँगाई तथा यूक्रेन युद्ध जैसे अन्य वैश्विक मुद्दे, जो बाइडन की पकड़ से बाहर हो गये हैं, के कारण भी उपभोक्ता-आत्मविश्वास कमजोर हो गया है तथा पूरे देश की मन:स्थिति निराशावादी हो गई है।

सी.ए.ए...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

समक्ष लंबित हैं। इनमें कहा गया है कि सी.ए.ए. गैर मुस्लिमों को नागरिकता प्रदान करने में उदारता बरतता है और इस प्रोसैस को फास्ट-ट्रैक करता है, लेकिन यह धर्म आधारित भेदभाव को प्रोत्साहित करता है, जिसकी भारतीय संविधान में अनुमति नहीं है।

सरकार ने वर्ष 2020 में प्रस्तुत अपने शपथ-पत्र में कहा था कि "सी.ए.ए. एक विशिष्ट संशोधन है जिसका तात्पर्य अतिविशेष देशों में मौजूद विशेष समस्या का निराकरण करना है, पानी कि अति विशेष देशों में धर्मशासित संवैधानिक स्थिति के कारण हो रहा धार्मिक उत्पीड़न और भारत में पहले से रह रहे मुस्लिमों का इससे कोई लेना देना नहीं है।"

शपथ पत्र में आगे स्पष्ट किया गया था कि संशोधन से पूर्व में विद्यमान रहे किसी भी नागरिक के अधिकार पर सी.ए.ए. अतिक्रमण नहीं करता है और किसी भी रुप में किसी भी भारतीय नागरिक के विधिक, लोकतांत्रिक या धर्मनिरपेक्ष अधिकारों को प्रभावित करने का इसका मन्तव्य नहीं है।

'सिखों की पगड़ी और कृपाण से हिज़ाब की तुलना उचित नहीं'

सुप्रीम कोर्ट में अधिवक्ताओं ने दलील दी कि, संवैधानिक योजनाओं में हिज़ाब का कोई उल्लेख नहीं है

- **याचिकाकर्ताओं की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता देवदत्त कामत ने दलील दी कि, इसका कहां उल्लेख है कि, हिज़ाब पहनने ना पहनने से किसी की इज्जत कम हो रही है। लेकिन राज्य की सुरक्षा का अधिकार वहां की सरकारों को है, इस हेतु वे जैसा चाहें उचित फैसला ले सकती हैं।**

नयी दिल्ली,8 सितंबर (वार्ता)। उच्चतम न्यायालय ने गुरुवार को कहा कि सिखों द्वारा पहनी जाने वाली पगड़ी की तुलना मुस्लिम महिलाओं के हिज़ाब के इस्तेमाल से करना उचित नहीं होगा। शीर्ष न्यायालय ने यह टिप्पणी शैक्षणिक संस्थानों में हिज़ाब पहनने पर प्रतिबंध को बरकरार रखने वाले कर्नाटक उच्च न्यायालय के फैसले को चुनौती देने वाले विभिन्न अपीलकर्ताओं द्वारा उसके समक्ष दायर अपीलों पर सुनवाई के दौरान की।

न्यायमूर्ति हेमंत गुप्ता ने पीठ का नेतृत्व करते हुए कहा कि इस न्यायालय की पांच न्यायाधीशों की पीठ ने कहा कि पगड़ी और कृपाण सिखों के लिए आवश्यक है। इसलिए, सिखों द्वारा पहनी जाने वाली पगड़ी से तुलना करना अनुचित होगा क्योंकि सिखों के लिए पांच-चिजों को अनिवार्य माना गया है।

याचिकाकर्ताओं में से एक की ओर से पेश हुए वकील निजामुद्दीन पाशा की सुनवाई के बाद शीर्ष अदालत ने इसका अवलोकन किया। फ्रांस के विपरीत, यहां सिख लड़के स्कूल जाने के लिए पगड़ी पहनते हैं और इससे स्कूल के अनुशासन में कोई बाधा नहीं आती है।

न्यायामूर्ति गुप्ता ने पाशा से कहा कि कृपया हिज़ाब की तुलना सिख धर्म से न करें क्योंकि यह (सिख धर्म) पूरी तरह से भारतीय संस्कृति में समाया हुआ है। एक अन्य याचिकाकर्ता की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता देवदत्त कामत ने कहा कि राज्य धर्मनिरपेक्ष गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिए कानून बना सकता है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम एक सामाजिक कल्याण कानून है और फिर वे कहते हैं कि हिज़ाब को प्रतिबंधित किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि कर्नाटक शिक्षा अधिनियम की प्रस्तावना में कहा गया है कि अधिकार पर कोई भी प्रतिबंध प्रत्यक्ष और निकट होना चाहिए न कि अप्रत्यक्ष या अनुमानित।

'इतना गुस्सा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पर इतनी चिंतित क्यों थी।

मैं विदेशी मामलों और दिपक्षीय मसलों पर बात करना नहीं चाहती हूं पर मैंने देखा कि जब भी मुझे किसी बाहरी देश ने निमंत्रण दिया है भारत सरकार ने उसमें रूकावट डाली है। मैं जानना चाहती हूं केन्द्र सरकार को विदेशी अतिथियों से मेरे मिलने में किस बात का डर है।"

उन्होंने तृणमूल कांग्रेस की एक विशेष मीटिंग को संबोधित करते हुये कहा, "बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना के साथ मेरे बहुत अच्छे संबंध हैं लेकिन (केन्द्र) ने उनकी यात्रा का हिस्सा बनने के लिये मुझे आमंत्रित नहीं किया।"

ऐसा लगता है कि ऐसी दो घटनाओं, जिन्हें उनके "अपमान" के रूप में देखा जा रहा है, ने बनर्जी को ऐसा कहने के लिये बाध्य कर दिया है। बनर्जी ने कहा कि वे तथा पड़ोसी राज्यों के अन्य मुख्यमंत्री 2024 में भाजपा को हराने के लिये एकजुट होंगे।

पार्टी मीटिंग में, उन्होंने अपने प्रिय नारे "खेला होबे" को दोहराया तथा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर कटाक्ष किया- "आपके "मन की बात" शीघ्र ही "मन की व्यथा" बन जायेगी।"

बंगाल की मुख्यमंत्री ने तृणमूल कांग्रेस नेताओं का आव्हान किया कि वे भाजपा के खिलाफ संघर्ष के लिये सक्रिय हो जायें।

उन्होंने अपने पार्टीजनों को हार्दिक साधुवाद देते हुये तथा उनकी प्रशंसा करते हुये कहा, "उन्होंने हर विधायक को 10 करोड़ रू. की पेशकश करते हुये, सरकार गिराने की कोशिश की थी। मैंने उन्हें रँगे हाथों पकड़ लिया था। हमने झारखंड बचा लिया। "खेला होवे।" हम पंचायत चुनाव शान्ति पूर्वक सम्पन्न करेंगे, और फिर देखना, 2024 के चुनावों के लिये हम किस तरह खेल खेलते हैं।"

ममता बजर्नी ने कहा, "खेल की योजना बंगाल में बनेगी। अब हम सब साथ हैं। नीतीश कुमार हैं, अखिलेश यादव हैं, हेमन्त सोरेन हैं। मैं हूँ। हम सब मित्र एक साथ है। सभी दल एकजुट हैं और 280-300 सीटों का उनका घमंड ही उनकी सजा बन जायेगा। याद रखिये, राजीव गांधी के पास 400 सीटें थी, लेकिन वे रही नहीं।"

उन्होंने कहा कि केवल पाँच राज्यों में ही, जिनकी सूची उन्होंने बनाई है, भाजपा अपनी 100 सीटें गँवाएगी। उन्होंने कहा, "सरकार कैसे बना पायेंगे।"

झारखंड के तीन कांग्रेस विधायक 30 जुलाई को उसक समय गिरफ्तार कर लिये गये थे, जब उनकी कार पश्चिम बंगाल के हावड़ा नगर में इन्टरसैप्ट की गई थी तथा करीब 49 लाख रू. का कैश उनके पास गया था। उन विधायकों ने दृढ़तापूर्वक कहा था कि यह पैसा उनके राज्य में आयोजित होने वाले एक आदिवासी उत्सव के लिये साड़ियाँ खरीदने के लिये है।

कांग्रेस, जो झारखंड की जे.एम.एम. के नेतृत्व वाली सरकार का हिस्सा है, ने दावा किया था कि भाजपा, विधायकों को 10 करोड़ रू. तथा मंत्री पद की पेशकश करे हुये, हेमन्त सोरेन सरकार को गिराने की कोशिश कर रही थी।

ममता बनर्जी ने कहा, "भाजपा सोचती है कि वह हमें सी.बी.आई. तथा प्रवर्तन निदेशालय की धमकियों से डरा सकती है। वह इस प्रकार की चालबाजी जितना ज्यादा करेंगे, अगले साल होने वाले पंचायत चुनावों तथा 2024 के लोकसभा चुनावों में, वह हार के उतनी ही ज्यादा नजदीक जायेगी।"

उन्होंने कहा, "99 प्रतिशत टी.एम.सी. साफ-स्वच्छ, ईमानदार तथा सामाजिक कार्य के प्रति समर्पित है। अगर एक-दो लोग कुछ गलत करते भी हैं, तो उनसे निबटने के लिये कानून है। पार्टी (ऐसे लोगों के खिलाफ) कार्यवाही करेगी।"

कर्नाटक में भी भाषा विवाद...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

भेज दिया गया। चैक का विवरण, जिसमें अंक भी शामिल थे, कन्नड़ भाषा में अंकित था।

हुआ यह कि चैक में भाषा का अवरोध आ गया तथा सम्भवत: इसी कारण, कन्नड़ भाषा में लिखे अंकों की पहचान में कुछ त्रुटि हो गई। अंकों की गलत पहचान के फलस्वरूप, चैक एस.बी.आई. की कलियाल शाखा ने डिसऑनर कर दिया। इसके बाद, इनामदार ने कंज़ूमर फोरम में इसकी शिकायत की तथा बुधवार को फोरम ने एस.बी.आई. को सेवा की कमी का दोषी माना तथा बैंक पर जुर्माना कर दिया। फोरम में, अध्यक्ष इशप्पा भूते के अतिरिक्त, दो सदस्य वी.ए.बोलिशेट्टी तथा पी.सी. हीरेमत थे।

कन्नड़ भाषा-समर्थक ऐक्टिविस्टों ने कंज़ूमर फोरम के इस निर्णय के स्वागत में जश्न मनाए। ये लोग, उनके अनुसार "हिन्दी के दबदबे तथा हिन्दी थोपने" के खिलाफ संघर्ष कर रहे हैं। वे ऐसे बहुत से उदाहरण देते हैं कि राष्ट्रीयकृत बैंकों तथा केन्द्र सकार के दफ्तरों में किस तरह से "कन्नड़ भाषा में बोलने वाले लोगों के साथ दुर्व्यवहार किया गया।" कन्नड़ डैवलपमैंट अथॉरिटी के चेयरमैन टी.एस. नागभरन ने कहा कि यह फैसला एक नज़ीर बन सकता है। उन्होंने कहा, "पी.एस.यू. तथा केन्द्रीय ऑफिस क्षेत्रीय भाषाओं का सम्मान नहीं करते।"

बैंक सेवाओं के लिये दी जाने वाली अर्जियाँ अगर कन्नड़ में लिखी होती हैं, तो या तो वे अटका दी जाती हैं या उन पर ध्यान नहीं दिया जाता तथा ऐसी ग्रामीण लोगों, जो हिन्दी या अंग्रेजी नहीं जानते, को प्राय: अपमानजनक तरीके वहाँ से चले जाने के लिये कह दिया जाता हैं। एक कन्नड़ ऐक्टिविस्ट ने कहा कि चूँकि राष्ट्रीयकृत बैंकों के बहुत से कर्मचारी कर्नाटक से बाहर के होते हैं, इसलिये उन्हें स्थानीय भाषा कन्नड़ नहीं आती, किन्तु दुख की बात यह है कि वे स्थानीय भाषा सीखने की कोशिश भी नहीं करते।

उसे ऐक्टिविस्ट ने कहा कि कई बैंकों में, चालान हिन्दी तथा अंग्रेजी में होते हैं तथा इसलिये बहुत से ग्रामीण लोगों के सामने मार्गदर्शन की समस्या आती हैं।

वस्तुत: कर्नाटक में भी भाषा का मुद्दा बार-बार जोर पकड़ लेता है, हालांकि इस मामले में तमिलनाडु ज्यादा बदनाम है क्योंकि वहाँ हिन्दी थोपे जाने के खिलाफ 1960 के दशक में बड़े आन्दोलन हुये थे। दरअसल उस समय की कांग्रेस सरकार ने तमिलनाडु में हिन्दी थोपने की कोशिश की थी तथा उसे चुनाव में इसका खामियाजा भुगतना पड़ा था। उस समय के बाद, कांग्रेस तमिलनाडु की सत्ता में कभी नही आ सकी। आज भी, कांग्रेस को अपने राजनैतिक अस्तित्व के लिये दोनों में से किसी की एक द्रविड़ पार्टी पर निर्भर रहना पड़ता हैं।

कर्नाटक में भी जब-तब हिन्दी-विरोधी आन्दोलन हो जाते हैं। 2017 में, एक कन्नड़-समर्थक ग्रुप, जिसका नाम "कर्नाटक रक्षाना वेदिके" था, बैंगलुरू के एक मॉल में स्थित एक रेस्टोरेंट के बाहर हिन्दी और अंग्रेजी में लिखे सूचना-पट तोड़ दिये थे और इसके बाद राज्य में हिन्दी-विरोधी माहौल जोर पकड़ गया था। बेंगलुरू मेट्रो में हिन्दी के साइन बोर्डो का विरोध कर रहे ऐक्टिविस्टों का प्रश्न था- दिल्ली में कन्नड़ भाषा के साइन बोर्ड क्यों नहीं हैं, जबकि यहाँ हिन्दी में साइन बोर्ड लगाने पड़ते हैं।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908